हिंदी (ऐच्छिक) कोड सं 002

कक्षा-12

(क)	अपठित बोध : (गाद्यां और काव्यां बोध)		20
(ख)	रचनात्मक तथा व्यावहारिक लेखन		25
(ग)	अंतरा भाग-2	-काव्य-भाग	20
		गद्य-भाग	20
	अंतराल भाग-2		15

क)	अपठित बोध: गद्यां और काव्यां बोध	20
	1. गद्यां बोध: गद्यां पर आधारित बोध, प्रयोग, स्थानांनतरण ाीर्षक आदि पर लघूत्तरात्मक प्रन	15
	2. काव्यां बोध: काव्यां पर आधारित पाँच लघूत्तरात्मक प्रन	05
ख)	रचनात्मक तथा व्यावहारिक लेखन	25
	सजनात्मक लेखन से संबधित दो प्रन :	
3.	निबंध	10
4.	कार्यालयी पत्र	05
5.	'अभिव्यक्ति और माध्यम' के आधार पर व्यावहारिक लेखन पर एक निबंधात्मक प्रन	05
6.	अभिव्यक्ति और माध्यम के आधार पर पाँच लघूत्तरात्मक प्रन (1 x5)	05
ग)	अंतरा भाग -2 (20+20) अंक	40
	काव्य भाग:	20
7.	1. सप्रसंग व्याख्या (दो में से एक)	08
8.	2. कविता के कथ्य पर दो प्रन	(3+3) 6
9.	3. कविताओं के काव्य-सौंदर्य पर दो प्रन	(3+3) 6
	गद्य भाग:	
10.	1. सप्रसंग व्याख्या (दो में से एक)	06
11.	2. पाठों की विषय वस्तु पर तीन में से दो प्रन	(4+4) 08
12.	3. किसी एक कवि/लेखक का साहित्यिक परिचय	06

पूरक पुस्तकः अंतराल

13. 1. विषय वस्तु पर आधारित ;चार में से तीन लघूत्तरात्मक प्रन (3 +3+3) 09

14. 2. विषय वस्तु पर आधारित एक निबंधात्मक प्रन 06

निर्धारित पुस्तकें:

1. अंतरा भाग–2 एन.सी.ई.आर.टी.द्वारा प्रकााित

2. अंतराल भाग –2 ;विधाओं का संकलन) एन.सी.ई.आर.टी.द्वारा प्रकााित

3.अभिव्यक्ति और माध्यम एन.सी.ई.आर.टी.द्वारा प्रकााित

अपठित बोध

न्रप 1. अपठित बोध के लिए एक गद्यांा और एक काव्यांा पर प्रन पूछे जायेगे। काव्यांा में विकल्प दिया जायेगा।

संकेत-

अपठित गद्यांा से अभिप्राय है जिसे पहले पढ़ा न गया हो। परीक्षा में एक गद्यांा और एक काव्यांा देकर उन पर आधारित प्रन पूछे जाते हैं। सार और ाीर्षक भी लिखने को कहा जा सकता है।

प्रनों के उतर देने की विधि-

1. सर्वप्रथम दिए गये गद्यांा को कम-से -कम दो बार ध्यानपूर्वक पढ़ना चाहिए जिससे उसका मूल भाव आपकी समझ में आ जाए।
2. इसके पचात पूछे गए प्रनों को पढ़ना चाहिए।
3. पूछे गए प्रनों के सम्भावित उत्तरों को रेखांकित कीजिए।
4. ध्यान रखे कि प्रनों के उत्तरों अनुच्छेद में दी हुई सामग्री पर आधारित हों।
5. प्रनों के उत्तर अत्यंत सरल भाषा और अपने ाब्दों में दीजिए।
6. प्रनों के उत्तर सीधे, संक्षिप्त सटीक होने चाहिए उनमें अनावयक विस्तार, उदाहरण, अलंकार सूक्तियों, मुहावरे का प्रयोग नहीं करना चाहिए।
7. कभी कठिन ाब्दों के अर्थ, विलोम ाब्द भी पूछे जाते हैं। ाब्दों के अर्थ प्रसंग के अनुकूल होने आवयक हैं।
8. उचित स्थानों पर विराम चिह्न लगाना न भूलें।
9. ाीर्षक संक्षिप्त और आकर्षक ाब्दों में लिखना चाहिए तथा यह गदयांा/ काव्यांा के मूल भाव पर आधारित हो।

नोट- संकेतार्थ एव उदाहरणार्थ अभ्यास हेतु निम्नलिखित गदयांा एंव काव्यांा दिए जा रहे हैं -

निम्नलिखित गद्यांा को ध्यान पूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रनों के उत्तर दीजिए-

1. भाषा का भावना से गहरा सम्बन्ध है और भावना तथा विचार व्यक्तित्व के आधार है। यदि हमारे भावों और विचारों को पोषक रस किसी विदेाी या पराई भाषा से मिलता है तो निचय ही हमारा व्यक्तित्व भी भारतीय या स्वदेाी न होकर अभारतीय या विदेाी ही हो जाएगा। प्रत्येक भाषा और प्रत्येक साहित्य अपने दो-काल और धर्म से परिचित तथा विकसित होता है। उस पर अपने महापुरूषों और चिंतकों का उनकी अपनी परिस्थितियों के अनुसार ही प्रभाव पड़ता है। कोई दूसरा दो-काल और समाज भी उस सुंदर स्वास्थ्यकारी संस्कति से प्रभावित हो, यह आवयक नहीं है। अतएव व्यक्ति के व्यक्तित्व का समुचित विकास और उसकी ाक्तियों को समुचित गति अपने ही पठन-पाठन में मिल सकती है। इसका कारण यह भी है कि मातभाषा में जितनी सहज गति संभव है और इसमें जितनी कम-ाक्ति-समय की आवयकता पड़ती है, उतनी किसी भी विदेाी या पराई भाषा में नहीं है।

   यह भी सच है कि हमारे दो के प्रतिभााली और होनहार लोग पचिमी भाषा और साहित्य में अपनी क्षमता को देख कर स्वंय भी चकित रह जाते है, जिनकी वह अपनी मातभाषा नहीं है। यह भी मानना पड़ेगा कि इन परिश्रमी लोगों ने अपनी जो ाक्ति, समय और तन्मयता पराई भाषा के लिए खपाई, वह यदि मातभाषा के लिए प्रयोग की

गई होती तो एक अद्‌भुत चमत्कार ही हो गया होता। माइकेल मधुसूदन दत्त का दष्टांत आपके सामने है। प्रतिभा के स्वामी इस बंगला कवि ने अंग्रेजी में काव्य रचना करके कीर्ति और गौरव कमाने के लिए भारी परिश्रम और प्रयत्न किया। यह तथ्य उनको तब समझ में आया जब वे इंग्लैड यात्रा के लिए गए। बहुत अच्छा लिखकर भी वह द्वितीय श्रेणी के लेखक और कवि से अधिक कुछ नहीं हो सके। यदि चाहते तो अपनी भाषा में कतित्व के बल पर वे सहज ही प्रथम श्रेणी के कवियों में प्रतिष्ठित हो सकते थे। यह सब पता चलने के बाद उन्होंने अपनी भाषा में लिखने का निर्णय किया। प्रत्यक्ष के लिए प्रमाण की क्या आवयक्ता है। श्रीमती सरोजनी नायडू यदि अपनी मातभाषा में काव्य रचना करती तो निचय ही सर्वश्रेष्ठ कवयित्री होने का गौरव प्राप्त करती। मैं देखती हूँ कि उच्च ज्ञान -विज्ञान का माध्यम अंग्रेजी होने पर भी पिछले डेढ़-सौ वर्षों में सौ करोड़ लोगों में अंग्रेजी में एक भी रवींद्रनाथ, ारत्चंद्र, महादेवी वर्मा, जयांकर प्रसाद, सुमित्रानंदन पंत और उमाांकर जोाी आदि पैदा न कर सका। राष्ट्रभाषा राष्ट्र की उन्नति की द्योतक होती है।

प्रश्न -

(क) भाषा का संबंध किससे होता है? कैसे? 2

(ख) व्यक्ति के व्यक्तित्व का समुचित विकास कैसे हो सकता है? 2

(ग) राष्ट्र की उन्नति किसमें निहित है? 2

(घ) कवि के अनुसार सरोजनी नायडू सर्वश्रेष्ठ कवयित्री क्यों नहीं बन पाई? 2

(च) कतित्व, राष्ट्रीय; (प्रत्यय अलग करो) 1

(छ) माइकल मधुसूदन का दष्टांत क्या सिखाता है? 2

(ज) कीर्ति और उन्नति के विलोम ाब्द लिखो। 1

(झ) लेखक ने ज्ञान- विज्ञान के लिए सर्वश्रेष्ठ भाषा किसे माना है? 2

(स) गद्यां का ाीर्षक लिखों। 1

2. एक दिन एक व्यक्ति गुरूजी से मिला और कहने लगा, मैं मुंबई में जन्मा हूं और अब न्यूयार्क में रहता हूँ। सवेरे 7:30 बजे काम पर निकलता हूँ तथा घर लौटने तक रात के 8.30 बज जाते हैं। मुझे अपनी संस्था के लक्ष्य भी पाने हैं तथा अपनी पत्नी एव परिवार को भी क्वालिटी टाइम देना चाहता हूँ। दफ़्तर में इतनी देर तक काम करने बाद मैं परिवार को वह क्वालिटी टाइम नहीं दे पाता और जब परिवार को वह थोड़ा समय देता हुॅ तो दफ़्तर का काम पिछड़ने लगता है। इसी बात से मुझे टेंान होती है तथा मैं समझ नहीं पाता कि कैसे अपने जीवन को सुनियोजित करूं? मैं जानता हुं कि मेरा जीवन असंतुलित सा है। कभी वह वास्तविक खुाियों से खाली लगता है। कभी वह बोझ से दबा हुआ सा लगता है।

गुरूजी ने कहा सत्य है कि तुम व्यस्त हो, यह एक तथ्य है। तुमने एक व्यस्त नगर में रहने का निचय खुद ही किया है। तब एक निचय और करो। यह संकल्प करो कि अपनी समस्याओं और व्यस्ताओं के बीच भी मैं बिल्कुल संतुलित एंव ाांत बना रहूँगा। अपने सारे संबन्धों का निर्वाह सहज ढंग से करूँगा। जीवन गणित नहीं है, जीवन चित्रकला की तरह है। चित्रकार अपनी कला से अपने चित्र में अपनी सुंदर सष्टि की रचना करता है।

उस व्यक्ति को गुरूजी की बात ठीक से समझ नहीं आई। उसने फिर पूछा-अपने व्यस्त कार्यक्रम के बीच ाांत रहते

हुए अपनी आकांक्षाएँ पूरी करने और परिवार पर समुचित समय देने का लक्ष्य मैं भला कैसे प्राप्त कर सकता हूँ दोनों के बीच संतुलन कैसे कर सकता हूँ? एक जगह की कटौती दूसरी जगह की आमदनी है।

गुरूजी ने उससे कहा, तुमने चींटी देखी है? उसी से अपने जीवन में संतुलन लाना सीखो। चीटी के जीवन के पीछे गहन र्दान-ास्त्र छिपा है।

चींटी से सीखू? उस व्यक्ति ने आचर्य से पलट कर प्रतिप्रन किया।

हां, यदि तुम ध्यान पूर्वक देखोगे तो उससे बहुत कुछ सीख पाओगे, गुरूजी ने कहा। चीटी के सामने जो भी अड़चन आती है, वह अपना तरीका बदल कर रास्ता बदल कर लचीले पन से उपर से, नीचे से, आसपास से, किसी भी ढंग से उसे पार करती है। कार्य योजना में लचीलापन चींटी का बहुत सुन्दर गुण है। दूसरी बात यह है कि चींटी कभी थक हार कर अपना प्रयत्न बंद नहीं करती।

(क) उपर्युक्त गद्यां के लिए उपयुक्त ीर्षक दीजिए। 1

(ख) व्यक्ति ने क्या समस्या बताई? 1

(ग) चित्रकार अपनी कला से अपने चित्र में किसकी रचना करता है? 1

(घ) चींटी थक हार कर क्या नहीं करती? 1

(ड) गुरूजी ने क्या संकल्प करने को कहा? 1

(च) उस व्यक्ति ने क्या ंका व्यक्त की? 2

(छ) गुरूजी ने उसे क्या उपाय बताया? 2

(ज) गुरूजी ने किसका उदाहरण देकर क्या बात समझाई? 2

(झ) चींटी के काम करने के ढंग से हमें क्या ाक्षा मिलती है? 2

(स) 'जीवन गणित नहीं है, जीवन चित्रकला की तरह है'। भाव स्पष्ट करो। 2

3. इस दे में किसी समय विद्या की जो धारा साधना के दुर्गम तुंग-श्रंग से निर्झरित होती थी उस एक धारा ने संस्कति के रूप में दे के समस्त स्तरों को अभिसिक्त किया है। इसके लिए उसे यांत्रिक नियम से ाक्षा विभाग का कारखाना नहीं खोलना पड़ा, ारीर में जैसे प्राण ाक्ति की प्रेरणा से मोटी धमनियों की रक्तधारा छोटी-बड़ी नाना आयतनों की ाराओं के द्वारा समस्त अंग-प्रत्यगों में प्रवाहित होती रहती है, उसी तरह हमारे दे के सम्पूर्ण समाज -ारीर में एक ही ाक्षा स्वाभाविक प्राण क्रिया से निरन्तर संचारित हुई है। उसका नाड़ी रूप वाहन कोई स्थूल था तो कोई बहुत ही सूक्ष्म किन्तु फिर भी वे नाड़ियाँ एक कलेवर की ही थी और रक्त भी उसका अपना प्राण पूर्ण रक्त था।

अरण्य स्वयं जिस मिट्टी से प्राण ग्रहण करके जीवित है, उसी मिट्टी को वह खुद भी प्रतिदिन प्राणों का उपादान पर्याप्त रूप में देता है। उसे बराबर प्राणमय बनाये रखता है। ऊपर की डाली पर वह जो फल देता है, नीचे की मिट्टी में उसकी तैयारियाँ भी उसकी अपनी दी हुई हैं। अरण्य की मिट्टी इसीलिए आरण्यिक बनी रहती है, नहीं तो वह विजातीय मरूभूमि। जिस भूमि में वह उभिद-स्वाद परिव्याप्त नहीं है, वहां पेड़ पौधे ाायद ही पैदा होते हो, और हो भी जाए तो वे उपवास के मारे टेढ़े-मेढ़े और मरे से हो जाते है। हमारे समाज की वन-भूमि में किसी जमाने में

उच्चाीर्ष वनस्पति का दान नीचे की भूमि पर नित्य ही बरसा करता था। आज दे में पाचात्य ाक्षा चल रही है, भूमि को वह अपने उपादानों से उपजाऊ नहीं बना रहीं। जापान आदि दोें के साथ हमारा यही लज्जाजनक और दु:खप्रद भेद है। हमारा दे अपनी ाक्षा की भूमिका बनाने के विषय में उदासीन है। यहाँ दे की ाक्षा और दे का वाािल हृदय या मन एक दूसरे से विच्छिन्न है। प्राचीन काल में हमारे दे के बड़े-बड़े ाास्त्रज्ञ विद्वानों के साथ निरक्षर ग्राम वासियों की मन प्रकति का ऐसा परस्पर विरोध नहीं था। उस ाास्त्रज्ञान के प्रति उसके मन में अनुकूल अभिमुखता तैयार हो गई थी, उस भोज में उनका भी अर्द्ध भोजन था नित्य; और वह केवल प्राण से ही नहीं; बल्कि बचे हुए भोग के रूप में।

(क) उपर्युक्त गद्यां का ाीर्षक लिखिए। 1

(ख) यांत्रिक नियम से कौनसा कारखाना नहीं खोलना पड़ा? 1

(ग) आरण्यिक तथा उपजाऊ में से प्रत्यय पथक करो। 1

(घ) आज दे में कैसी ाक्षा चल रही है? 1

(ङ) अरण्य कैसे जीवित है? 1

(च) विद्या की धारा ने संस्कति का रूप कैसे धारण किया? 2

(छ) अरण्य की विोषता बताइए। 2

(ज) पाचात्य ाक्षा का प्रभाव बताइए। 2

(झ) ाक्षा के विषय में उदासीनता क्या प्रभाव डालती है? 2

(झ) उभिद खाद परिव्याप्त न होने से वक्षों की क्या दाा हो जाती है? 2

4. प्रत्येक मनुष्य हेतु 'नेकी कर कुएं में डाल ' बात को जीवन में उतारना भी क्षमा हेतु आसान तरीका है। यह भी अच्छी तरह समझ लें कि स्पर्धा और अनुकरण दोनों ही परोानी बढ़ाने वाली चीजें हैं, जो क्षमा करने में बाधक बनती है। अपनी स्वाभाविकता से अपने क्षेत्र में श्रेष्ठ बनने की पूरी कोािा करना ही श्रेयस्कर मार्ग है।

ोक्सपियर ने भी सावधान करते हुए स्पष्ट किया है कि 'ात्रु को झोंकने के लिए भाड़ को इतना तेज न करो कि स्वयं जल जाओं। अत: 'क्षमा ही सबसे बड़ी बुद्धिमानी, सभी दष्टि से श्रेष्ठतम है।' एक पुरानी कहावत भी है कि जिस व्यक्ति को क्रोध नहीं आता वह तो मूर्ख है, बुद्धिमानी वह है जो क्रोध करे ही नहीं। कन्फ्यूसियस के मत में भी किसी का बुरा चाहना या किसी के अन्याय का ाकार होना, स्वयं उतना कष्टकर नहीं जितना कि मन ही मन बार-बार उन बातों से घुटते रहना। इसी कारण जर्मनी के दर्ानिक 'ाापेनहावर ने कहा है कि इस घुटन से बचने का एकमात्र उपाय यह है कि अपने मन में जहाँ तक हो सके किसी से भी दुमनी मत रखो। एक श्रेष्ठ विवेकी व्यक्ति को किसी विरोधी के आक्षेप न तो दु:खी रख सकते हैं और न ही नीचा दिखा सकते हैं जब कि आप स्वंय ऐसा होने नहीं दें। यदि उनके कठोर ाब्दों को अपने आपको मन में बैठने नहीं देंगे तो ाब्द भला कैसे आपको पीड़ित कर पायेंगे। इस प्रकार मात्र यह मार्ग सही है कि हम अपने आपको किसी महानतम कार्य से जोड़ दें। कोई हमारे बारे में अच्छा-बुरा कहता है इन सबसे अपने-आपको अलग रखकर केवल लक्ष्य प्राप्ति का ही हमें ध्यान रहे।

दे प्रेम और लक्ष्य के प्रति प्रेम के अतिरिक्त सब बातें अपने दिल-दिमाग से भूल ही जाना हमारे लिए सभी दष्टि

से श्रेयस्कर होता है। तभी हम अपने लक्ष्य के प्रति पूर्ण समर्पित हो, ाीघ्र लक्ष्य प्राप्त कर सकते हैं। जीवन एक संग्राम है, यदि लक्ष्य प्राप्त करना है तो, सब तरह की विचारधारा के लोगों से संघर्ष करते हुए समान विचारधारा के लोगों को संगठित कर हम सरलता से अपनी मंजिल प्राप्त कर सकते हैं। एक श्रेष्ठ व्यक्ति के पास लड़ने-झगड़ने और पचाताप करने के लिए भूले से भी समय नहीं होता वह सदैव अपनी ाक्ति का रचनात्मक कार्यो में अधिक उपयोग कर अपनी एक अलग पहचान बनाता है।

सदैव दूसरे के चेहरे पर मुस्कान लाने का प्रयत्न करें तथा सदैव क्षमा करने हेतु हर व्यक्ति की अच्छाइयों को याद रखें तथा उसकी बुराइयों को भूल जाएँ, यही मानसिक ाांति का रामबाण उपचार है। पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन ने अपने आलोचकों को सदैव उच्च पद प्रदान किए। उनकी यही मान्यता थी कि हम घटनाक्रम और परिस्थितियों की उपज हैं अत: ात्रु के प्रति घणा न करके उसके प्रति दया कर उसे क्षमा करें तथा इस बात के लिए सदैव धन्यवाद ही दें कि उसने हमें उनके जैसी बदले की भावना रखने वाला नहीं बनाया। उदारता सबके लिए रखे, घणा किसी के लिए नहीं।

1. उपर्युक्त गद्यां का उचित ाीर्षक लिखिए। 1
2. क्षमा में कौन-कौन सी चीजें बाधक होती हैं? 2
3. अपने आप को महानतम कार्य से जोड़ने के क्या लाभ हैं? 2
4. जीवन को एक संग्राम क्यों कहा जाता है? 2
5. हमें मानसिक ाांति कब प्राप्त हो सकती है? 2
6. कन्फ्यूसियस के अनुसार सबसे कष्टपूर्ण स्थिति क्या है? इससे बचने का एकमात्र उपाय क्या है? 2
7. ात्रु के प्रति कैसा व्यवहार करना चाहिए? 1
8. उपरोक्त गद्यां में से कोई दो कहावतें छांट कर लिखों। 1
9. 'उदार' एवं 'घणा' ाब्द के विलोम लिखिए। 1
10. 'स्वभाविक' एंव 'पीड़ित' ाब्द से प्रत्यय अलग कीजिए। 1

अपठित काव्यांश

काव्यांश पर आधारित पाँच लघूतरात्मक प्रश्न **1×5**

क पेड़ के उपर चढ़ा आदमी
ऊँचा दिखाई देता है।
जड़ में खड़ा आदमी
नीचा दिखाई देता है।
आदमी न ऊँचा होता है, न नीचा होता है,
न बड़ा होता है, न छोटा होता है।
आदमी सिर्फ आदमी होता है।
पता नहीं इस सीधें, सपाट सत्य को
दुनिया क्यों नहीं जानती?
और अगर जानती है,
तो मन से क्यों नहीं मानती
हिमाचल की चोटी पर पहुँच,
एवरेस्ट-विजय की पताका फहरा,
कोई विजेता यदि ईर्ष्या से दग्ध
अपने साथी से विवास घात करे,
तो क्या उसका अपराध
इसलिए क्षम्य हो जाएगा कि
वह एवरेस्ट की ऊँचाई पर हुआ था?
नहीं, अपराध अपराध ही रहेगा,
हिमालय की सारी धवलता
उस कालिमा को नहीं ढक सकती।

उपरोक्त काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

1. कविता का ाीर्षक लिखिए।
2. पेड़ पर चढ़ा आदमी कैसा दिखाई देता है?
3. कवि के अनुसार आदमी की क्या पहचान है?

4. दुनिया किस सत्य को नहीं मानती ?

5. हिमालय की समस्त धवलता किस कालिमा को नहीं ढक सकती?

(ख) कवि, कुछ ऐसी तान सुनाओ जिससे उथल-पुथल मच जाए,
एक हिलोर इधर से आए एक हिलोर उधर से आए,
प्राणें के लाले पड़ जाएँ, त्राहि-त्राहि स्वर नभ में छाए,
नाा और सत्यानाों का धुआँधार जग में छा जाए,
बरसे आग, जलद जल जाए भस्मसात भूधर हो जाए,
पाप-पुण्य सद् सद् भावों की धूल उड़ उठे दाएँ-बाएँ
नभ का वक्षस्थल फट जाए, तारे टूक-टूक हो जाएँ,
कवि, कुछ ऐसी तान सुनाओ जिससे उथल-पुथल मच जाए।

उपरोक्त काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

1. कवि से कैसी तान सुनाने का अनुरोध किया जा रहा है?
2. कवि की साक्त वाणी का प्रकति पर क्या प्रभाव पड़ेगा?
3. कवि किस प्रकार के परिवर्तन की आाा करता है?
4. 'जलद' और 'भूधर' ब्दों का अर्थ लिखिए।
5. 'त्राहि-त्राहि' में कौन सा अलंकार है?

(ग) युग के युवा, मत देख दाएँ
और बाएँ, और पीछे, झाँक मत बगलें
न अपनी आँख कर नीचे, अगर कुछ देखना है,
देख अपने वह वे वषभ कंधे
जिन्हें देता निमंत्रण सामने तेरे पड़ा
युग का जुआ, युग के युवा।
तुझको अगर कुछ देखना है, देख दुर्गम और गहरी
घाटियाँ जिनमें करोड़ों संकटों के
बीच में फँसता-निकलता यह कट
बढ़ता हुआ पहुँचा यहाँ है।
दोपहर की धूप में कुछ चमचमाता-सा

दिखाई दे रहा है घाटियों में।
यह नहीं जल, यह नहीं हिम-खंड ीतल,
यह नहीं है संगमरमर, यह न चाँदी, यह न सोना,
यह न कोई बोकीमत धातु निर्मल।
देख इसकी ओर, माथे को झुका,
ये कीर्ति-उज्ज्वल पूज्य तेरे पूर्वजों की अस्थियां है।
आज भी उनके पराक्रमपूर्ण कंधों का
महाभारत लिखा युग के जुए पर।

उपरोक्त काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए

1. युग के युवा को कवि क्या- क्या देखने के लिए प्रेरित कर रहा है?
2. पूर्वजों की कीर्ति को उज्ज्वल क्यों कहा गया है?
3. हमारे पूर्वज अपने उत्तराधिकारियों से क्या अपेक्षा करते है,?
4. अस्थियों का प्रयोग किस संदर्भ में किया गया है?
5. 'चमचमाता-सा' क्या दिखाई पड़ रहा है?

(घ) अभिाप्त सी लेटी हुई है
असहाय बरसाती नदी।
बगुलोंकोी पर
लपेटे नजर आती नदी।

रेत के लम्बे सफर में
हाँफने लगी है धूप
हुआ दुर्लभ दो बूँद जल
तषित छटपटाती नदी।।

रूठकर बैठा है मौसम
मेघ परदेी हुए।
थक गई हर रोज इक
यहाँ भेजकर पाती नदी।।

गए पखेरू छोड़ करके

नीड़ अपने तीर के।

बीतें दिनों को याद कर

रह-रह अकुलाती नदी।।

जब बरसते मेघ छम-छम

सभी किनारे तोड़कर।

बस्तियों को लीक करके

बहुत कहर ढाती नदी।।

प्रश्न -

(क) बरसाती नदी किस प्रकार लेटी हुई है?

(ख) गर्मी के मौसम में बरसाती नदी कैसी हो जाती है?

(ग) नदी किनारे से पक्षी क्यों चले जाते है?

(घ) जब बादल बरसते हैं तब नदी कैसी हो जाती है?

(ङ) इस कविता में से मानवीयकरण अलंकार का उदाहरण छांट कर लिखिए।

ड लोहे के पेड़ हरे होंगे, तू गाना प्रेम का गाता चल,

नम होगी यह मिट्‌टी जरूर आँसू के कण बरसाता जल।

सिसकियों और चीत्कारों से जितना भी हो आकाा भरा।

कंकालों का हो ढेर, खप्परों से चाहे हो पटी धरा।

आाा का स्वर पवन को लेकिन, लेना होगा,

जीवित सपनों के लिए मार्ग मुर्दो को देना ही होगा।

रंगों के सात घट उडेल, यह अंधियाली रंग जाएगी।

उषा को सत्य बनाने को जावक नभ पर छितराता चल।।

आर्दो से आर्दा भिड़े, प्रज्ञा-प्रज्ञा पर टूट रही।

प्रतिमा-प्रतिमा से लड़ती है, धरती की किस्मत फूट रही।।

उपरोक्त काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उतर दीजिए-

(क) लोहे के पेड़ हरे होने' से कवि का क्या आाय है?

(ख) कवि ने संसार की किस दाा की ओर संकेत किया है?

(ग) कवि ने मानव को क्या संदो दिया है?

(घ) प्रतिमा का प्रतिमा के साथ लड़ने से कवि का क्या आाय है ?

(ङ) पवन को कौनसा स्वर लेना होगा?

सृजनात्मक लेखन से संबंधित दो प्रश्न

प्रश्न 3 निबंध- **निर्धारित अंक 10**

आकर्षक भूमिका	2
विषय निर्वहन	2
विषय प्रतिपादन क्षमता और भाषा-ाल्पि	4
समग्र प्रभाव/ उपसंहार	

भारत विषयक निबंध 2

(क) अनेकता में एकता

(ख) मेरा गौरव मेरा दे

(ग) भारत की सामाजिक समस्याएँ

(घ) आधुनिक परिवे में भारतीय संस्कति में बदलाव

(ङ) प्रान्तीयता: एक अभिाप

सामान्य विषयों पर आधारित निंबध

(क) परीक्षा का तनाव और हैल्पलाइन

(ख) मोबाइल फोन का युवा वर्ग पर प्रभाव

(ग) हमारी राष्ट्रभाषा हिन्दी

(घ) सर्वाक्षिा अभियान

(ङ) स्टिंग ऑपरोन -कितने सार्थक

(च) 2010 की दिल्ली/2010 कॉमन वैल्थ खेलों के संदर्भ में दिल्ली का बदलता स्वरूप

(छ) बदलते जीवन मूल्य

साहित्यिक निबंध

(क) साहित्य समाज का दर्पण

(ख) मेरा प्रिय साहित्यकार

(ग) राष्ट्र निर्माण में साहित्यकार की भूमिका

(घ) गिरते जीवन मूल्य और साहित्कार की भूमिका

(ङ) मेरी प्रिय पुस्तक

विविध समस्याओं पर आधारित निबंध

(क) आंतकवाद और विश्व-शांति

(ख) महानगरीय जीवन - अभिशाप या वरदान

(ग) एकल परिवार और वरिष्ठ नागरिक

(घ) भ्रूण-हत्या और बालिका - जीवन,

(ङ) भ्रष्टाचार -कारण और निवारण

नारी विषयक निबंध

(क) आज की नारी कितनी सुरक्षित

(ख) नारी का आधुनिक समाज में स्थान

(ग) राष्ट्र निर्माण में नारी का योगदान

(घ) महिलाओं के लिए संसद में आरक्षण

(ङ) मानसिक तनाव से घिरी काम-काजी नारी

विज्ञान संबंधी निबंध

(क) विज्ञान-वरदान या अभिशाप

(ख) इंटरनेट और भारत का भविष्य

(ग) केबल संस्कृति और भारतीय समाज

(घ) सूचना प्रौद्योगिकी क्रांति और सूचना प्रौद्योगिकी की उपलब्धियाँ

(ङ) अंतरिक्ष में मानव के बढ़ते कदम

विद्यार्थी और युवा पीढ़ी से संबंधित निबंध

(क) आज का युवा कल का भावी नेता

(ख) मानसिक तनाव से घिरा आज का युवा वर्ग

(ग) राष्ट्र - निर्माण में युवा-पीढ़ी का योगदान

(घ) गिरते नैतिक मूल्य और युवा-पीढ़ी।

सूक्ति परक निबंध

(क) 'मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना।'

(ख) 'जब आवे संतोष धन-सब धन धूरि समान।'

(ग) 'मन के हारे हार है मन के जीते जीत'

(घ) 'तुलसी असमय के सखा-धीरज, धर्म, विवेक।

(ङ) 'करत-करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान'

4. पत्र-लेखन **निर्धारित अंक - 5**

पत्र के आरंभ की व्यवस्थित औपचारिकताएँ	1
पत्र के नीचे की औपचारिकताएँ	1
प्रभावाली विषय प्रतिपादन	2
भाषाैली	1

औपचारिक पत्र

(क) अपने नगर की जल-व्यवस्था के सुधार हेतु प्रासन की ध्यान आकर्षित करने का निवेदन करते हुए 'नव भारत-टाइम्स' नई दिल्ली के प्रधान संपादक को पत्र लिखिए।

(ख) ाहरों में बढ़ती वाहनों की संख्या और उनके खड़े करने की समस्या के कारण बढ़ते झगड़ों पर चिन्ता व्यक्त करते हुए सम्पादक को पत्र लिखिए

(ग) निरंतर बढ़ती हुई मंहगाई की ओर सरकार का ध्यान आकष्ट करने के लिए किसी दैनिक समाचार पत्र के सम्पादक को पत्र लिखिए।

(घ) समाचार-पत्रों, पत्रिकाओं और दूरर्दान में प्रर्दाित अलील विज्ञापनों की ओर ध्यान आकर्षित करते हुए किसी प्रतिष्ठित दैनिक समाचार-पत्र के संपादक को पत्र लिखिए।

(ङ) सड़कों की बार-बार खुदाई से उत्पन्न अव्यवस्था की ओर ध्यान आकर्षित करते हुए नगर पालिका अध्यक्ष को पत्र लिखें।

पुलिस-अधिकारी को पत्र

(क) पुलिस अधीक्षक को अपने क्षेत्र में कार-चोरी की बढ़ती हुई घटनाओं को रोकने और रात्रि-पहरे की समुचित व्यवस्था के लिए पत्र लिखिए।

(ख) मोबाइल फोन पर अभद्र ाब्दों का प्रयोग करने वाले अपरिचित की ाकायत करते हुए अपने क्षेत्र के थाना प्रभारी को पत्र लिखिए।

(ग) मौहल्ले में दिन-दहाड़े महिलाओं के पर्स और चेन झपटने की घटनाओं की जानकारी देते हुए पुलिस-अधीक्षक को पत्र लिखिए।

(घ) आपके पड़ोस में आतंकवादी रह रहा है। आपने उस मकान में कुछ आतंकवादी गतिविधियाँ देखी है। इसकी पूर्ण जानकारी आप अपने नगर के उच्च पुलिस अधिकारी को पत्र लिख कर दीजिए ताकि किसी दुर्घटना से पूर्व ही उचित कार्यवाही हो सके।

(ङ) उत्तम नगर थानाध्यक्ष को पत्र लिखकर लाउडस्पीकर के कारण उत्पन्न कठिनाईयों की ाकायत कीजिए।

शिकायती पत्र

(क) नगर पालिका द्वारा भेजे गये त्रुटिपूर्ण जल-कर के बिल को ठीक कराने हेतु अधाासी अभियंता को पत्र लिखिए।

(ख) बस कंडक्टर के अभद्र व्यवहार की ाकायत करते हुए दिल्ली परिवहन निगम के महाप्रबंधक को पत्र लिखिए।

(ग) टेलीफोन का कनेक्ान कटने के संबंध में महानगर टेलीफोन निगम लिमिटेड के प्रबंधक को ाकायती पत्र लिखिए।

(घ) अपने ाहर में हो रहे अवैध निर्माण और उसके कारण नागरिकों को हो रही असुविधा की ाकायत करते हुए राज्य के ाहरी विकास मंत्री को पत्र लिखिए।

(ङ) निगम कर्मियों द्वारा 'गटर' को खुला छोड़ देने की ाकायत करते हुए नगर निगम अधिकारी को पत्र।

व्यावसायिक पत्र (आवेदन पत्र)

(क) सहायक अध्यापक पद के लिए दिल्ली ाक्षा निदोलय के निदोक को आवेदन पत्र लिखिए।

(ख) डी.ए.वी. राम नगर के प्रधानाचार्य को पुस्तकालय सहायक के पद हेतु आवेदन पत्र लिखिए।

(ग) यूनियन बैंक, राजस्थान द्वारा हिंदी-ऑफीसर के पद हेतु दिए विज्ञापन के संदर्भ के आवेदन पत्र प्रस्तुत कीजिए।

(घ) गहमंत्रालय, लोकनायक भवन, नयी दिल्ली के निदोक को कम्प्यूटर ऑपरेटर के पद हेतु आवदेन पत्र लिखो।

(ङ) 'जनसत्ता' नामक दैनिक समाचार-पत्र को खेलविभाग के लिए संवाददाताओं की आवयकता है। इस पद के लिए खेलों का अच्छा ज्ञान और रूचि के साथ-साथ हिन्दी-अंग्रेजी भाषा में अच्छी गति से लिखने का अभ्यास अत्यंत आवयक है। इस पद के लिए आवेदन पत्र लिखिए।

प्रार्थना पत्र

(क) चरित्र प्रमाण-पत्र प्राप्त करते हेतु अपने विद्यालय के प्रधानाचार्य को पत्र लिखें।

(ख) परीक्षा की उत्तर-पुस्तिकाओं के पुनर्मूल्यांकन के लिए प्रधानाचार्य को पत्र लिखें।

(ग) अपने विद्यालय के प्रधानाचार्य को एक पत्र लिखिए जिसमें सहपाठी के प्रांसनीय और साहसिक व्यवहार के लिए उसे सम्मनित करने का अनुरोध किया गया हो।

(घ) अन्य राज्य से आए हुए छात्र की ओर से दाखिले के लिए ाक्षा-अधिकारी को प्रार्थना-पत्र लिखिए।

(ङ) आप मनीष/मनीषा सर्वोदय विद्यालय ओाक विहार के छात्र हैं। अपने विद्यालय के प्रधानाचार्य को गणित की पढ़ाई न होने के संबंध मे पत्र लिखें।

'अभिव्यक्ति और माध्यम'

5. 'अभिव्यक्ति और माध्यम' पुस्तक के आधार पर व्यवहारिक लेखन पर एक निबंधात्मक प्रश्नः

निर्धारित अंक-5

विभिन्न माध्यमों के लिए लेखन

1. श्रोताओं या पाठकों को बाँधकर रखने की दष्टि से प्रिंट माध्यम, रेडियो और टी.वी. में सबसे साक्त माध्यम कौन सा है? स्पष्ट कीजिए।
2. जनसंचार के आधुनिक माध्यमों में सबसे पुराना माध्यम कौन सा है? इसकी विोषताएँ एवं सीमाएं स्पष्ट कीजिए।
3. जनसंचार के एक प्रमुख साधन के रूप में रेडियो की भूमिका स्पष्ट कीजिए।
4. रेडियो समाचार की संरचना पर प्रकाा डालिए।
5. रेडियो के लिए समाचार लिखते समय किन बुनियादी बातों का ध्यान रखना आवयक है?
6. जनसंचार के माध्यम के रूप में टेलिविजन की भूमिका स्पष्ट कीजिए।
7. टी.वी पर प्रसारित होने वाले समाचार किन-किन चरणों से गुजर कर दर्काें तक पहुँचते हैं?
8. रेडियो एवं टेलिविजन समाचार की भाषा-ौली कैसी होनी चाहिए?
9. इंटरनेट पत्रकारिता क्या है? इसके स्वरूप एवं इतिहास पर प्रकाा डालिए।
10. 'इंटरनेट पत्रकारिता सूचनाओं को तत्काल उपलब्ध कराता है, परंतु इसके साथ ही उसके कुछ दुष्परिणाम भी हैं'। स्पष्ट कीजिए।
11. हिन्दी नेट संसार का परिचय देते हुए स्पष्ट कीजिए कि हिन्दी वेब पत्रकारिता की सबसे बड़ी समस्या क्या है?
12. दूरर्दान, इंटरनेट एवं प्रिंट माध्यम की सीमाओं एवं विोषताओं की तुलना कीजिए।

उच्चस्तरीय विचारणीय प्रश्न

(क) सिद्ध कीजिए संचार माध्यम जनता को जागरूक करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

(ख) "संचार वस्तुत: एक दुधारी अस्त्र है जिसका उपयोग बड़ी सावधानी से होना चाहिए।" इस कथन पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।

पत्रकारीय लेखन के विभिन्न रूप और लेखन प्रक्रिया

13. पत्रकारीय लेखन क्या है? स्पष्ट कीजिए।
14. पत्रकारीय लेखन और साहित्यिक रचनात्मक लेखन में अंतर स्पष्ट कीजिए।
15. अच्छे लेखन के लिए किन-किन बातों को ध्यान में रखना आवयक है।
16. समाचार लेखन से आप क्या समझते हैं? पत्रकार कितने प्रकार के होते हैं?
17. समाचार लेखन के छह ककारों को उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।
18. फ़ीचर से क्या अभिप्राय है? फ़ीचर का उद्देय स्पष्ट करते हुए इसकी विोषताओं पर प्रका डालिए।
19. फ़ीचर लिखते समय किन-किन बातों पर ध्यान देना आवयक है? फ़ीचर कितने प्रकार के होतें हैं?
20. विोष रिपोर्ट क्या है? विोष रिपोर्ट किस प्रकार लिखी जाती है?
21. स्पष्ट कीजिए कि संपादक एक समन्वयक का कार्य करता है और संपादकीय लेखन किसी भी अखबार की अपनी आवाज होती है।
22. निम्नलिखित पर टिप्पणी लिखिए - क) स्तंभ लेखन ख) संपादक के नाम पत्र ग) लेख घ) साक्षात्कार (इंटरव्यू)
23. एक अच्छे एवं सफल साक्षात्कार के लिए साक्षात्कार कर्त्ता को किन-किन बातों पर ध्यान देना आवयक है?

उच्चस्तरीय विचारणीय प्रश्नः

(क) 'स्वाइन फ्लू' के बढ़ते प्रकोप' विषय पर संपादकीय लिखिए।

(ख) 'कन्या भ्रूण हत्या' विषय पर एक लेख तैयार कीजिए।

(ग) किसी समाचार पत्र के 'संपादक के नाम पत्र' स्तंभ हेतु "मैट्रो निर्माण कार्य कितना सुरक्षित? विषय पर अपने विचार अभिव्यक्त कीजिए।

(घ) 'आप ौक्षिक भ्रमण हेतु किसी यात्रा पर गए हैं"। इस आधार पर एक यात्रा फ़ीचर तैयार कीजिए।

(ड़) अपने पसंदीदा किसी अभिनेता या खिलाड़ी के साक्षात्कार हेतु 10 प्रन तैयार कीजिए।

विशेष लेखन - स्वरूप और प्रकाश

24. विोष लेखन से आप क्या समझते हैं? स्पष्ट कीजिए।
25. विोष लेखन के दायरे में कौन-कौन से क्षेत्र आते हैं जिनमें विोषज्ञता अनिवार्य है?
26. स्पष्ट कीजिए कि विोष लेखन की भाषा-ौली विोष होती है।
27. विोष लेखन के क्षेत्र में विोषज्ञता कैसे प्राप्त की जा सकती है?
28. बीट रिपोर्टिंग से आप क्या समझते हैं?
29. बीट रिपोर्टिंग और विोषीकत रिपोर्टिंग कें अंतर को स्पष्ट कीजिए।
30. समाचार पत्रों में कारोबार और व्यापार जगत से जुड़ी खबरों का क्या महत्व है?
31. समाचार पत्रों में खेल समाचारों की भूमिका स्पष्ट कीजिए।

उच्चस्तरीय विचारणीय प्रश्नः

(क) टी-20 क्रिकेट के विषय पर 100 ाब्दों का एक आलेख तैयार कीजिए।

(ख) सिद्ध कीजिए कि "आर्थिक पत्रकारिता सामान्य पत्रकारिता की तुलना में कठिन है।"

सृजनात्मक लेखन - कैसे बनती है कविता

32. कविता कैसे बनी? कविता - लेखन से संबंधित दो भिन्न मत क्या हैं?
33. कविता क्या है? कविता लेखन के आवयक तत्व कौन-कौन से हैं?
34. कविता-लेखन में ाब्दों के महत्व पर प्रकाा डालिए।
35. कविता-लेखन में बिम्बों की भूमिका स्पष्ट कीजिए।
36. 'छंदों का प्रयोग एवं परिवो चित्रण की जानकारी कविता की दुनियाँ में प्रवो करने के लिए आवयक है।' स्पष्ट कीजिए।
37. कविता-लेखन के लिए आवयक प्रमुख घटकों को स्पष्ट कीजिए।

नाटक लिखने का व्याकरण

38. 'नाटक' किसे कहते हैं? स्पष्ट कीजिए।
39. 'कविता कहानी, उपन्यास की तरह नाटक भी साहित्य के अंतगर्त आता है फिर भी यह साहित्य की अन्य विधाओं से अलग है'। कैसे?

40. नाटक लिखते समय लेखक को किन-किन बातों पर ध्यान देना चाहिए?

41. नाटक लेखन के महत्वपूर्ण तत्वों की विवेचना कीजिए।

42. एक अच्छे नाटक की भाषा-ौली कैसी होनाी चाहिए?

43. 'नाटक स्वयं में एक जीवंत माध्यम है।' इस कथन के आलोक में नाटक में स्वीकार और अस्वीकार की धारणा स्पष्ट कीजिए।

44. 'नाटक की कहानी बोक भूतकाल या भविष्यकाल से संबंधित हो, तब भी उसे वर्तमानकाल में घटित होना पड़ता है।' स्पष्ट कीजिए।

45. 'संवाद चाहे कितनी भी कठिन भाषा में क्यों न लिखे गए हों, स्थिति और परिवो की माँग के अनुसार यदि वे स्वाभाविक जान पड़ते हैं तो र्दाकों तक संप्रेषित होने में कोई मुकिल नहीं है।" क्या आप इस बात से सहमत हैं?

कैसे लिखें कहानी

46. 'कहानी किसी एक की नहीं, वह कहने वालों की है, सुनने वालों की भी', इस कथन के आलोक में कहानी से स्वरूप पर प्रकाा डालते हुए स्पष्ट कीजिए कि कहानी का हमारे जीवन से क्या संबंध है?

47. कहानी के इतिहास पर प्रकाा डालते हुए स्पष्ट कीजिए कि प्राचीन काल में मौखिक कहानियाँ लोकप्रिय क्यों थी?

48. कहानी लेखन में कल्पना तत्व के महत्व को स्पष्ट कीजिए।

49. 'कहानी का केन्द्र बिन्दु कथानक होता है।' इस कथन पर प्रकाा डालिए।

50. 'कहानी को रोचक और प्रामाणिक बनाने में दोकाल और वातावरण का चित्रण अत्यधिक महत्व भूमिका निभाता है। स्पष्ट कीजिए।

51. 'कहानी में पात्रों के स्वरूप की भूमिका पर प्रकाा डालिए।

52. 'संवाद पात्रों के चरित्र को उद्घाटित करते हैं और कहानी को गति देते हैं।' स्पष्ट कीजिए।

52. स्पष्ट कीजिए कि कथानक के बुनियादी तत्वों में द्वंद्व का विोष स्थान है।

54. किसी भी कहानी में चरमोत्कर्ष का चित्रण अत्यंत ध्यानपूर्वक करना क्यों आवयक होता है।

55. कहानी के प्रमुख तत्वों पर संक्षेप में प्रकाा डालिए।

नए अप्रत्याशित विषयों पर लेखन

56. 'नए और अप्रत्याात विषयों पर लेखन से आप क्या समझते हैं?

57. नए और अप्रत्याात विषयों पर लेखन में क्या बाधाएँ आती हैं? क्या अप्रत्याात लेखन की कोई तकनीक है?

58. नए और अप्रत्याात विषयों पर लेखन को किस प्रकार सरल बनाया जा सकता है?

अथवा

नए और अप्रत्याात विषयों पर लेखन के लिए किस प्रकार तैयारी करनी चाहिए?

उच्चस्तरीय विचारणीय प्रश्न :

(क) सिद्ध कीजिए - 'रटंत की आदत हमारी अभिव्यक्ति क्षमता को विकसित नहीं होने देती।'

उत्तर संकेत

विभिन्न माध्यमों के लिए लेखन

1. सबसे साक्त माध्यम टी.वी., आधार दय-श्रव्य। सुनने और पढ़ने की अपेक्षा देखने की सुविधा के कारण प्रभावाली। साक्षर होना आवयक नहीं। बिना ब्दको या विचार विर्मा के भी संप्रेषण में समर्थ।

2. सबसे पुराना माध्यम - मुद्रित। आरंभ-चीन, भारत में प्रथम छापाखाना सन् 1556 गोवा में। मुद्रित माध्यम-पत्रिकाएं, समाचार पत्र, पुस्तकें आदि। वेिषताएं - ब्दों का स्थायित्व, किसी भी समय कहीं पर भी पढ़ने की सुविधा, लंबे समय तक रखने की सुविधा। सीमाएं - पाठकों का साक्षर होना आवयक, प्रकाान की निचित समय सीमा, आवंटित जगह का अनुासन।

3. रेडियो एक रेखीय (लीनियर) श्रव्य माध्यम। ध्वनि, स्वर, ब्दों का खेल। श्रोता का साक्षर होना आवयक नहीं। अखबार की तरह पीछे लौटकर सुनने की सुविधा नहीं। भ्रामक अथवा अरूचिकर कार्यक्रम को बंद करने की सुविधा। प्रसारणकर्ताओं के लिए श्रोताओं को बाँधकर रखना एक चुनौती।

4. उलटा पिरामिड ैली। तीन भाग-1 इंट्रो या मुखड़ा 2-बॉडी 3-समापन। (इस ैली में समापन के अंतगर्त प्रासंगिक तथ्य और सूचनाँए दी जा सकती हैं)

5. साफ-सुथरी और टाइप्ड कॉपी। जटिल ब्द, संक्षिप्ताक्षर एवं अनावयक विस्तार से बचें, बड़ी संख्याओं को ब्दों में लिखें, अत्यधिक आँकड़ों का प्रयोग न हो, डेडलाइन और संदर्भ का ध्यान, उच्चारण की सुविधा के लिए आम बोलचाल के ब्दों का प्रयोग।

6. टेलीविजन देखने और सुनने का माध्यम, दयों की अहमियत ज्यादा, कम से कम ब्दों में ज्यादा से ज्यादा खबर बताने की कला का प्रयोग।

7. **चरण-1** फ्लै या ब्रेकिंग न्यूज 2-ड्राईएंकर 3-फोन इन 4-एंकर विजुअल 5-एंकर-बाइट 6-लाइव 7- एंकर पैकेज

8. भाषा-ैली सभी वर्गों एवं स्तरों के अनुरूप हो, भाषा के स्तर एवं गरिमा से समझौता न हो, भाषा सरल एवं वाक्य छोटे हों, गैर जरूरी विेषणों, कठिन ब्दों, मुहावरों एवं भ्रामक ब्दों के स्थान पर आम बोलचाल के ब्दों को प्रयोग हो।

9. इंटरनेट पर समाचारों का प्रकाान एवं आदान-प्रदान ही इंटरनेट पत्रकारिता है। विव स्तर पर इंटरनेट का प्रथम दौर 1982-1992, दूसरा दौर - 1993-2001 और ततीय दौर 2002 से अत तक। भारत में इंटनेट का आरंभ - 1993 वेबसाइट पर विुद्ध पत्रकारिता का श्रेय - तहलका डॉटकॉम। भारत की पहली साइट। रीफिड। हिंदी पत्रकारिता में हिंदी की सर्वश्रेष्ठ साइट - बी.बी.सी।

10. इंटरनेट माध्यम और औजार दोनों। दुष्परिणाम - युवावर्ग को नग्नता एवं अलीलता की ओर आकर्षित करनें में समर्थ,

संस्कारों में विकति, अपराध जगत को नई दिा, पुस्तकें पढ़ने की इच्छा की कमी का एक कारण।

11. हिंदी का संपूर्ण पोर्टल इंदौर के नयी दुनियाँ समूह से ाुरू हुआ। मात्र इंटरनेट में उपलब्ध अखबार-प्रभासाक्षी। हिंदी वेब पत्रकारिता की सबसे बड़ी समस्या - हिंदी के फ़ौंट की। कोई 'की बोर्ड' नहीं है, डायनमिक फ़ौंट की कमी के कारण साइट न खुलने की समस्या।

12. दूरर्दान विोषताएँ - देखने सुनने की सुविधा, कम ाब्दों में ज्यादा खबर, तात्कालिक खबर, खबर की पुष्टि। सीमाएँ - सामाजिक समस्याओं के प्रर्दान से उत्तेजना फैलाने में समर्थ, अपरिपक्व बुद्धि को विकत करने में समर्थ। इंटरनेट विोषताएँ-सभी विषयों से संबंधित जानकारी देने में समर्थ और औजार दोनों, रिपोर्ट सत्यापन एवं पुष्टिकरण। सीमांए-मँहगा साधन, अलीलता की ओर आकर्षित करने वाला, पुस्तकें पढ़ने की रूचि का ह्रास। प्रिंट विोषताएं-ाब्दों में स्थायित्व, समयानुसार पढ़ने की सुविधा, संरक्षण संभव। सीमाएँ-साक्षरता आवयक, तात्कालिक खबरों का अभाव, नियत स्पेस।

पत्रकारीय लेखन के विभिन्न रूप और प्रक्रिया

13. अखबार पाठकों को सूचना देने, जागरूक और ािक्षित बनाने, उनका मनोरंजन करने का दायित्व निभाते हैं। पत्रकार अपने पाठकों, र्दाकों और श्रोताओं तक सूचनाएं पहुंचाने के लिए लेखन के विभिन्न रूपों का इस्तेमाल करते हैं। इसे ही पत्रकारीय लेखन कहते हैं।

14. पत्रकारिता जल्दी में लिखा गया साहित्य है। पत्रकारीय लेखन का संबंध समसामायिक और वास्तविक घटनाओं और मुद्दों से है जबकि साहित्यिक रचनात्मक लेखन कल्पना को भी स्थान देता है। पत्रकारीय लेखन तथ्यों पर आधारित एवं पाठकों की रूचियों और आवयकताओं को ध्यान में रखकर लिखा जाता है। जबकि रचनात्मक लेखन में लेखक को काफी छूट होती है।

15. वाक्य छोट हों, सरल वाक्य संरचना, सामान्य बोलचाल के ाब्दों का प्रयोग, विषय चयन तथ्यों द्वारा पुष्ट हो, लेख उद्देयपूर्ण हो, लेखन में रंग भरने के लिए मुहावरे लोकोक्तियों का प्रयोग, लेखक में तथ्यों को जुटाने एवं बारीकी से विचार करने का धैर्य होना आवयक है।

16. पत्रकारीय लेखन का सबसे जाना-पहचाना रूप समाचार लेखन है। समाचार, कहानी भाषा कथा लेखन की ाैली से बिल्कुल भिन्न 'उलटा पिरामिड' ाैली में लिखा जाता है। पत्रकार तीन प्रकार के होते हैं। 1. पूर्णकालिक 2. ांकालिक 3. फ्रीलांसर यानी स्वतंत्र पत्रकार।

17. किसी पत्रकार को लिखते हुए मुख्यत: छह सवालों का जवाब देने की कोिा की जाती है क्या हुआ? किसके साथ हुआ, कहाँ हुआ? कब हुआ? कैसे और क्यों हुआ? इन्हीं छह प्रनों को छह ककार कहा जाता है।

18. फ़ीचर एक सुव्यवस्थित, सजनात्मक और आत्मनिष्ठ लेखन है जिसका उद्देय पाठकों को सूचना देना, ािक्षित करना और मनोरंजन करना होता है। फ़ीचर सच्ची घटना पर लिखा जाता है, सारगर्भित होता है। बोझिल नहीं, अतीत, वर्तमान या भविष्य किसी से भी संबंधित हो सकता है। जिज्ञासा, सहानुभूति, संवेदनाील, आलोचना आदि भाव उद्दीप्त करने में समर्थ।

19. फीचर की थीम सूचनाओं, तथ्यों और विचारों में गुँथी होनी चाहिए, पात्रों की मौजूदगी हो, बात इस तरह से बतायी

जाय कि पाठक को लगे वह स्वयं देख सुन रहा है, फोटो - रेखांकन या ग्राफिक्स का प्रयोग हो, सूचनात्मक हो। फ़ीचर खोजपरक, रूपात्मक, यात्रा संबंधी, समाचार बैकग्राउडंर, व्यक्तिचित्र कई प्रकार का हो सकता है।

20. सामान्य समाचारों के अलावा गहरी छानबीन, विलेषण और व्याख्या के आधार पर विोष रिपोर्ट प्रकाााित होती है। इन्हें तैयार करने के लिए किसी घटना, समस्या या मुद्दे की गहरी छानबीन कर, तथ्यों को एकत्रित कर विलेषण के द्वारा उसके नतीजे, प्रभाव और कारण को स्पष्ट किया जाता है। विोष रिपोर्ट के प्रकार-खोजी, इन डेप्थ, विलेषणात्मक, विवरणात्मक रिपोर्ट।

21. संपादन विभिन्न डेस्कों द्वारा चयनित समाचारों के लिए जिम्मेदारी होता है, प्राासकीय जिम्मेदारीयों के साथ समाचार पत्र समय पर छपने जाए संपादक की जिम्मेदारी है। प्रत्येक पष्ठ की सामग्री के बीच समन्वय करता है। संपादकीय लेखन अखबार की अपनी आवाज होता है। जिसके द्वारा वह किसी घटना, समस्या या मुद्दे के प्रति अपनी राय प्रकट करता है।

22.क) स्तंभ लेखन-विचारपरक लेखन का एक रूप, लेखकों की लोकप्रियता उसे एक नियमित स्तंभ लिखने का मौका देती है, स्तंभ की पहचान स्तंभकार के नाम से।

ख) संपादक के नाम पत्र-जनमत को प्रतिबिंबित करता है, इसके जरिये पाठक ने केवल विभिन्न मुद्दों पर राय देता है अपितु जनसमस्या भी उठाता है। ग) लेख-संपादकीय पष्ठ पर विोषज्ञों द्वारा लेख लिखे जाते हैं। लेखों में किसी विषय या मुद्दे पर विस्तार से चर्चा कर तथ्यों का विलेषण कर निष्कर्ष तक पहुँचकर लेखक अपना मत व्यक्त करता है।

घ) साक्षात्कार-एक स्पष्ट मकसद और ढाँचा होता है। साक्षात्कार के माध्यम से फ़ीचर, विोष रिपोर्ट इत्यादि पत्रकारीय लेखन के लिए कच्चा माल तैयार होता है।

23. न सिर्फज्ञान बल्कि संवेदनीील, कूटनीति, धैर्य एवं साहस का होना अनिवार्य, साक्षात्कार से संबंधित विषय की सम्यक जानकारी, प्रन वहीं हों जिनकी जिज्ञासा एक आम पाठक के मन में होती है, अगर रिकार्ड संभव न हो तो नोट्स ले लें, सवाल-जवाब या आलेख रूप में लिखें, साक्षात्कार के उद्देय के स्पष्ट जानकारी आवयक है।

विशेष लेखन - स्वरूप और प्रकार

24. पाठकों की रूचियाँ बहुत व्यापक होती हैं वे साहित्य, विज्ञान, कारोबार से लेकर खेल तक सभी विषयों पर पढ़ना चाहते हैं। इस प्रकार सामान्य लेखन से हटकर जब किसी खास विषय पर लेखन किया जाता है उसे विोष लेखन कहते हैं।

25. आमतौर पर रोजमर्रा की रिपोर्टिंग और बीट को छोड़कर वे सभी क्षेत्र लेखन के दायरे में आते हैं जिनमें विोषज्ञता की आवयकता होती है जैसे -अर्थ-व्यापार, खेल, विज्ञान-प्रौद्योगिकी, कषि, रक्षा, पर्यावरण, िक्षा, स्वास्थ्य, फिल्म-मनोरंजन, अपराध, सामाजिक मुद्दे, कानून आदि।

26. विोष लेख का पाठक वर्ग अलग होता है जो अपने विषय या क्षेत्र को विस्तार और गहराई से जानना चाहते हैं। विोष लेखन की भाषा सरल किंतु तकनीकी ाब्दावली युक्त होनी चाहिए। ौली सामान्य लेख से हटकर होनी चाहिए।

27. विोषज्ञता का अभिप्राय है-व्यावसायिक रूप से प्रािक्षित न होने के बावजूद उस विषय में जानकारी और अनुभव के आधार पर अपनी समझ को इस हद तक विकसित करना कि घटनाओं या मुद्दों की सहजता से व्याख्या कर पाठकों को उसके मायने समझा सकें। विोषज्ञता के लिए स्वयं का अपडेट रहना, विषय पुस्तकें पढ़ना, ाब्दकोष इनसाइक्लोपीडिया का सहारा लेना, सरकारी-गैर सरकारी संगठनो का सम्पर्क, निरंतर दिलचस्पी और सक्रियता आवयक है।

28. संवाददाताओं के बीच काम का विभाजन उनकी रूचि और ज्ञान के आधार पर किया जाता है। मीडिया की भाषा में इसे बीट कहते हैं।

29. बीट रिपोर्टिंग के लिए संवाददाता को उस क्षेत्र की जानकारी और दिलचस्पी होना पर्याप्त है जबकि रिपोर्टिंग में तथ्य का बारीकी से विलेषण कर पाठकों को उसके मायने बताने होते हैं। बीट कवर करने वाले को संवाददाता, विोषीकत रिपोर्टिंग करने वाले को विोष संवाददाता कहते हैं।

30. सामान्य व्यक्ति कुछ भी खरीदता है, बैंक में जमा करता है, कारोबार की योजना बनाता है या आर्थिक फायदे-नुकसान को वहन करता है तो इन सबका संबंध कारोबार-व्यापार और अर्थ जगत से जुड़ी खबरों से होता है। इसलिए पाठक की रूचि अनुसार अगर अखबार में आर्थिक पष्ठ नहीं होता तो उसे संपूर्ण नहीं माना जाता है।

31. कोई भी समाचार पत्र या समाचार बुलेटिन खेल समाचारों के बिना पूर्ण नहीं माना जाता है। खेल विोषांक, खेल परििाष्ठ पाठकों को आकर्षित करते हैं क्योंकि खेल पत्रकार अपनी भाषा-ौली से न केवल सूचनाएँ देता है अपितु ऊर्जा, जोा, रोमांच और उत्साह का संचार भी करता है।

सृजनात्मक लेखन - कैसे बनती है कविता।

32. पारंपरिक लोरियों, मांगलिक गीतों, श्रमिकों द्वारा गुनगुनाए गीतों और तुकबंदी में कविता के स्वर मुखरित होते हैं। कवित लेखन का पहला मत -

'अन्य कलाओं की तरह कविता लेखन की प्रणाली सिखाई नहीं जा सकती क्योंकि इसका संबंध संवेदनाओं से है।

दूसरा मत-उचित प्राक्षिण के द्वारा कविता लेखन को अन्य कलाओं की भांति सरल बनाया जा सकता है।

33. कविता संवेदना के निकट होती है। जिसमें मन को छूने, सष्टि से जुड़ने और उसे अपना बना लेने की क्षमता होती है। आवयक तत्व-छंद, बिंब, छंद परिवो चित्रण।

34. ाब्दों से मेलजोल कविता की पहली ार्त है। ाब्दों से खेलना, उनके अर्थों की परतों को खोलना की कविता की दुनियाँ मे प्रवो करना है। कवि की भावनाओं और संवेदनाओं को ाब्द ही आकार देते हैं।

35. छंद वाह्य संवेदनाएं मन के स्तर पर बिंबों में बदल जाती है। बिंब कवि की भावनाओं को चित्र के रूप में पाठक के समक्ष प्रस्तुत कर देता है जिससे कविता मन को छूकर सरलता से समझ में आ जाती है।

36. छंद (आंतरिक लय) कविता का अनिवार्य तत्व है। छंद के अनुाासन की जानकारी के बिना आंतरिक लय का निर्वाह असंभव हैं। कविता की भाषा, बिंब, छंद, संरचना सभी परिवो के इर्द-गिर्द घूमते हैं इसलिए वातावरण, परिवो और संदर्भ के अनुसार ही भाषा, बिंब और छंद का चयन किया जाता है।

37. भाषा का सम्यक ज्ञान आवयक, संकेत चिहनों का ज्ञान, समय विोष में प्रचलित प्रवत्तियों का ज्ञान, कम ाब्दों में अधिक कहने की क्षमता, ाब्द चयन एवं ाब्द गठन, भावानुसार अनुाासन, नवीन दष्टिकोण एवं प्रस्तुतिकरण की नवीनौली।

नाटक लिखने का व्याकरण

38. नाटक साहित्य की वह विधा है। जिसे पढ़ा, सुना और देखा भी जा सकता है। रंगकर्मियों के द्वारा जब इसे रंगमंच में प्रस्तुत किया जाता है। तब उसमें संपूर्णता आती है।

39. अन्य विधाएँ अपने लिखित रूप में ही एक निचित और अंतिम रूप को प्राप्त कर लेती हैं, वहीं एक नाटक अपने लिखित रूप में सिर्फ एक आयामी होता है। अन्य विधाएँ केवल पढ़ने या सुनने तक ही सीमित होती हैं, नाटक की दयता का गुण उसे अन्यों से अलग कर देता है।

40. समय का बंधन, संक्षिप्त और सांकेतिक भाषा का प्रयोग हो, घटनाओं का क्रम ाून्य की ओर विकास करें, संवादों में अनकही बातों की व्यंजित करने की ाक्ति हो, ाल्पि और संरचना की पूर्ण जानकारी।

41. महत्वपूर्ण - समय सीमा, ाब्द कथ्य, संवाद एवं ाल्पि चयन।

42. नाटक का मंचन होता है इसलिए भाषा सहज, स्वाभाविक एवं प्रसंगानुकूल होनी चाहिए। दर्ाक नाटक के संवादों का पूरा आनंद लें इसलिए भाषा परिवो से मेल खाए। अगर नाटककार परंपरागत ौली से हटकर नई ौली का प्रयोग करता है। तो दर्ाक उसे ज्यादा स्वीकार करते हैं।

43. नाटक में स्वीकार से अस्वीकार को ज्यादा महत्व दिया जाता है। जिस नाटक में असंतुष्टि, छटपटाहट, प्रतिरोध, अस्वीकार जैसे नकारात्मक तत्व होते हैं वह उतना ही गहरा और साक्त साबित होगा। जब-जब किसी विचार, व्यवस्था या तात्कालिक समस्या को विषय बनाया गया नाटक बहुत चर्चा में नहीं रहे।

44. कहानी, कविता, उपन्यास आदि को हम अपनी सुविधानुसार कई दिनों थोड़ा-थोड़ा पढ़कर समाप्त कर सकते हैं किंतु नाटक को तो दर्ाकों ने एक निचित समय सीमा में एक ही स्थान पर देखना होता है। इसलिए नाटक के मंच निर्दो वर्तमानकाल में ही लिखे जाते हैं।

45. नाटक देखते समय दर्ाक मानसिक रूप से उस परिवो में पहुँच जाता है जिससे संबंधित वह नाटक है। ऐसी स्थिति में संवाद स्वाभाविक होने पर उसके मर्म का स्र्पा करते हुए उसको ग्राह्य हो जाते हैं।

कैसे लिखें कहानी

46. कहानी जीवन का अविभाज्य अंग है। हर व्यक्ति अपनी बातें दूसरों को सुनाना और दूसरों की बातें सुनना चाहता है। कहानी लिखने का मूलभाव सबमें होता है, कुछ इसे विकसित कर पाते हैं कुछ नहीं, किसी घटना, पात्र या समस्या का क्रमबद्ध ब्यौरा जिसमें परिवो, द्वंद्वात्मकता, क्रमिक विकास एवं चरम उत्कर्ष का बिंदु हो, उसे कहानी कहा जाता है।

47. कहानी का इतिहास उतना ही पुराना है जितना मानव इतिहास। प्राचीन काल में मौखिक कहानियाँ संचार का एक साक्त माध्यम थी। धर्म प्रचारकों एवं िक्षकों ने िक्षा देने के लिए, सिद्धांत एवं विचारों को लोगों तक पहुँचाने के लिए इन्हें माध्यम बनाया इसलिए ये लोकप्रिय होती चली गई।

48. कल्पना करना मानव का स्वाभाविक गुण है। वह वही सुनना पसंद करता है जो उसे अच्छा लगता है। कथावाचक लोगों की पसंद के अनुसार कल्पना से कथा को रोचक बनाता है, इस प्रकार कल्पना कहानी का एक अंग बन जाती है।

49. कथानक एक प्रारंभिक नक्षा होता है जो किसी घटना, जानकारी, अनुभव या कल्पना पर आधारित होता है। कहानीकार उद्देय को पूरा करने के लिए एक काल्पनिक ढांचा बनाता है। संपूर्ण कहानी कथानक के इर्द–गिर्द घूमती हुई कल्पना से विस्तार पाती है।

50. पात्रों का अध्ययन कहानी की एक बुनियादी र्त है। प्रत्येक पात्र का एक स्वभाव होता है जो किसी न किसी उद्देय से जुड़ा होता है। पात्रों का चयन, आपसी संबंध, व्यवहार, गुण–अवगुण का वर्णन ही कहानी को सफल बनाते हैं।,

51. संवाद पात्रों को स्थापित करते हैं, विकसित करते हैं, और कहानी को गति देते हैं। जिस घटना या प्रतिक्रिया को होती हुई नहीं दिखाया जा सकता उसे संवादों में र्दाया जाता है। संवाद के बिना पात्र की कल्पना असंभव है।

52. कहानी में द्वंद्व दो विरोधी तत्वों की टकराहट, बांधा या अंर्तद्वंद्व के कारण होता है। द्वंद्व पाठक में जिज्ञासा पैदा करते हैं और कहानी को रोचक बनाते हैं। द्वंद्व के बिंदु जितने स्पष्ट होंगे कहानी सफलता से आगे बढ़ेगी।

53. चरम उत्कर्ष का चित्रण ध्यानपूर्वक करना आवयक है क्योंकि भावों या पात्रों की अतिरिक्त अभिव्यक्ति प्रभाव को कम कर सकती है। कहानीकार का अतिरिक्त आग्रह कहानी को भाषण में बदल सकता है। चरम उत्कर्ष पाठक को स्वयं सोचने के लिए प्रेरित करे यह सर्वोत्तम है।

54. प्रमुख तत्व – कथानक, पात्र, संवाद, द्वंद्व दोकाल और वातावरण एवं चरमोत्कर्ष

नए और अप्रत्याशित विषयों पर लेखन

55. नए एवं अप्रत्याित विषयों के बारे में कम से कम समय में अपने विचारों को संकलित कर सुदंर ढंग से उनकी प्रस्तुति करना ही नए एवं अप्रत्याित विषयों पर लेखन कहलाता है।

56. बाधांए –रंटत की बुरी लत, लिखित अभिव्यक्ति की क्षमता का विकास न होना, मौलिक अभ्यास एवं प्रयास की कमी। परंपरागत विषयों से हटकर लिखने का अभ्यास ही दक्षता दिला सकता है। क्योंकि इसे लिखने की कोई तकनीक (फार्मूला) नहीं है।

57. लिखने से पूर्व संबंधित विचारों की रूपरेखा तैयार हो, ुरूआत आकर्षक एवं निर्वाह योग्य, वर्णन सिलसिलेवार बढ़े, बातें आपस में जुड़ी एवं तालमेल में हो, सुसंबद्धता एवं सुसंगति के प्रति सचेतता, 'मैं' ैली का प्रयोग।

(6) अभिव्यक्ति और माध्यम पर आधारित लघूत्तरात्मक प्रश्न (1x5) =5

1. प्रमुख जनसंचार माध्यमों के नाम बताइए।

2. 'छापाखाना' के आविष्कार का श्रेय किसे जाता है?

3. भारत में पहला छापाखाना कब और कहाँ खुला?

4. रेडियो समाचार की संरचना किस ौली में होती है?

5. टी.वी. खबरों कें प्रमुख चरण कौन-कौन से हैं?

6. फ्लै या ब्रेकिंग न्यूज से क्या तात्पर्य है?

7. 'एंकर पैकेज' क्या है?

8. टेलीविजन समाचार में 'एंकर बाइट' का क्या महत्व है?

9. दूरर्दान समाचार वाचक के तीन गुण लिखिए।

10. इलेक्ट्रानिक मीडिया के लोकप्रिय होने का क्या कारण है?

12. वेब प्रत्रकारिता से आप क्या समझते हैं?

13. भारत में इंटरनेट पत्रकारिता प्रारम्भ करने का श्रेय किस साइट का जाता है?

15. इंटरनेट पत्रकारिता के अधिक लोकप्रिय होने का क्या कारण है?

16. भारत में नियमित अपडेट साइटों के नाम लिखिए।

17. भारत की पहली पत्रकारिता साइट किसे माना जाता है?

18. हिंदी के किन्ही चार अखबारों के नाम लिखिए जिनके वेब संस्करण उपलब्ध हैं।

19. सिर्फ इंटरनेट में ही उपलब्ध अखबार कौन सा है?

20. भारत में इंटरनेट पर पत्रकारिता की दष्टि से प्राप्त होने वाली किन्ही दो साहित्यिक पत्रिकाओं के नाम लिखिए।

21. पत्रकारिता के लिहाज से वर्तमान समय में सर्वश्रेष्ठ साइट कौन सी है?

22. हिन्दी वेब पत्रकारिता की सबसे बड़ी समस्या क्या है?

23. पत्रकारीय लेखन से आप क्या समझते हैं?

24. पत्रकार कितने प्रकार के होते हैं?

25. पत्रकारिता के प्रमुख सिद्धांत कौन-कौन से हैं?

26. पत्रकारिता के विकास में कौन सा मूलभाव सक्रिय रहता है?

27. पत्रकारीय लेखन और सजनात्मक-साहित्यिक लेखन में मूल अंतर क्या है?

28. पत्रकारीय लेखन में किस प्रकार की भाषा-ौली का प्रयोग होना चाहिए।

29. पत्रकारीय लेखन का क्या उद्देय है?

30 उलटा पिरामिड ौली से क्या तात्पर्य है?

31. उलटा पिरामिड ौली का विकास कब और कैसे हुआ?

32. समाचार लेखन के छह ककारों से आप क्या समझते हैं?

33. 'इंट्रो' से क्या तात्पर्य है?

34. फ़ीचर लेखन क्या है?

35. फ़ीचर की भाषा-ौली कैसी होनी चाहिए?

36. फ़ीचर कितने प्रकार के हो सकते हैं?

37. फ़ीचर को कैसे रोचक बनाया जा सकता है?

38. भारत में समाचार पत्रकारिता का आरम्भ कब और किससे हुआ?

39. हिन्दी का प्रथम साहित्यिक पत्र कौन सा था?

40. 'विोष रिपोर्ट' से क्या अभिप्राय है?

41. विोष रिपोर्ट कितने प्रकार की होती है? उनके नाम लिखिए

42. 'इनडेप्थ' रिपोर्ट से आप क्या समझते हैं?

43. विलेषणात्मक रिपोर्ट और विवरणात्मक रिपोर्ट में अंतर स्पष्ट कीजिए।

44. समाचार पत्र में संपादक की क्या भूमिका होती है?

45. संपादकीय लेखन क्या है?

46. संपादक के नाम पत्र से आप क्या समझते हैं?

47. समाचार माध्यमों में साक्षात्कार (इंटरव्यू) का क्या मतलब है?

48. सफल साक्षात्कार कर्त्ता में कौन-कौन से गुण होने चाहिए?

49. विोष लेखन क्या है?

50. रेडियो तथा टी.वी. चैनल में विोष लेखन के लिए किसकी व्यवस्था होती है?

51. 'बीट' से आप क्या समझते हैं?

52. संवाददाता एवं विोष संवाददाता में अंतर स्पष्ट कीजिए।

53. अखबारों में विोष लेख लिखने वाले कौन होते हैं?

54. विोष लेखन की भाषा-ौली कैसी होनी चाहिए?

55. विोष लेखन के अंतर्गत आने वाले किन्ही छः क्षेत्रों के नाम बताइए।

56. वर्तमान समय में किस क्षेत्र में विोष लेखन को प्राथमिकता दी जा रही है?

57. पत्रकारीय विोषज्ञता का क्या अर्थ है?

58. 'व्यापार-कारोबार' की भाषा की एक विोषता बताइए।

59. खेल-समाचार की भाषा का एक उदाहरण दीजिए।
60. फ्री-लांसर पत्रकार किसे कहते हैं?
61. खोजी पत्रकारिता से क्या अभिप्राय है?
62. उलटा पिरामिड ौली में लिखने का क्रम क्या होता है?
63. पर्यावरण पर छपने वाली किन्हीं दो पत्रिकाओं के नाम लिखिए।
64. 'खेल' एवं 'विज्ञान' पर छपने वाली किन्हीं दो-दो पत्रिकाओं के नाम लिखिए।
65. खेल पत्रकार के लिए वांछित किन्हीं दो योग्यताओं को स्पष्ट कीजिए।
66. क्रिकेट कमेंट्री करने वाले किन्हीं दो व्यक्तियों के नाम लिखिए।
67. 'व्यापार एंव कारोबार से संबंधित पत्रकार के लिए आवयक किन्हीं दो योग्यताओं को स्पष्ट कीजिए।
68. व्यापार एवं कारोबार पर छपने वाली किसी पत्रिका का नाम लिखिए।
69. विज्ञान के क्षेत्र में काम कर रही भारत की किन्ही दो संस्थाओं के नाम लिखिए।
70. कविता से आप क्या समझते हैं?
71. कविता लेखन को अन्य कलाओं की तरह सिखाया क्यों नहीं जा सकता?
72. 'कविता लेखन' का सबसे पहला उपकरण किसे माना जा सकता है?
73. 'प्ले विद द वर्ड्स' से आप क्या समझते हैं?
74. बिंब किस प्रकार कविता के अर्थ में सहायक होते हैं?
75. 'चित्र-भाषा' से आप क्या समझते हैं?
76. कविता के सम्पूर्ण घटक किस प्रकार परिवो और संदर्भ से परिचालित होते हैं?
77. कविता के लिए आवयक किन्हीं दो घटकों का परिचय दीजिए।
78. नाटक से आप क्या समझते हैं?
79. 'नाटक' साहित्य की अन्य विधाओं से अलग कैसे हैं?
80. 'नाटक' में संपूर्णता कैसे आती है?
81. 'समय के बंधन' का नाटक में क्या महत्व है?
82. नाटक के मंच-निर्दे हमेाा वर्तमान काल में क्यों घटित होते हैं?
83. नाटक में 'स्वीकार' की अवधारणा क्या है?
84. नाटक में नकारात्मक तत्वों की उपस्थिति क्यों आवयक है?
85. अच्छे नाटक की एक विोषता बताइए।

86. कहानी क्या है?

87. प्राचीनकाल में मौखिक कहानी लोकप्रिय क्यों थी?

88. कहानी का केन्द्रबिन्दु किसे कहते हैं?

89. कथानक से आप क्या समझते हैं?

90. कहानी में द्वंद्व के तत्व से क्या अभिप्राय है?

91. कहानी को प्रामाणिक बनाने के लिए किस बात का ध्यान रखना आवयक है?

92. कहानी में संवाद क्या करते हैं?

93. अप्रत्यााित विषयों पर लेखन क्या है?

94. रंटत कुटेव (बुरी लत) क्यों हैं?

95. रंटत की आदत किस प्रकार मौलिक प्रयास को बाधित करती है?

96. अप्रत्यााित विषयों के लेखन में ध्यान रखने योग्य किन्हीं दो बातों का उल्लेख कीजिए।

97. लेखन के संदर्भ में सुसंबद्धता और सुसंगति से क्या अभिप्राय है?

98. कविता के आवयक तत्व कौन-कौन से हैं?

99. कविता के प्रमुख तत्व कौन से हैं?

100. कहानी के आवयक तत्व बताइए।

'काव्यांशों की सप्रसंग व्याख्या' **निर्धारित अंक -8**

(7) निम्नलिखित काव्याोंं की सप्रसंग व्याख्या कीजिए:

जयशंकर प्रसाद-कार्नेलिया का गीत **8**

अरूण यह मधुमय दे हमारा।
जहाँ पहुँच अनजान क्षितिज को मिलता एक सहारा।
सरस तामरस गर्भ विभा पर नाच रही तरूाािखा मनोहर।
छिटका जीवन हरियाली पर -मंगल कुम-कुम सारा।
लघु सुरधनु से पंख पसारे-ाीतल मलय समीर सहारे।
उड़ते खग जिस ओर मुँह किए-समझ नीड़ निज प्यारा।

बरसाती आँखों के बादल-बनते जहाँ भरे करूणा जल।
लहरें लकराती अनंत की-पाकर जहाँ किनारा।

हेम कंभ ले उषा सवेरे-भरती ढुलकाती सुख मेरे।

मंदिर ऊंघते रहते जब-जग कर रजनी भर तारा।

2. सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'-गीत गाने दो मुझे

चोट खा कर राह चलते
हो के भी हो छूट
हाथ जो पाथेय थे, ठग-
ठाकुरों ने रात लूट
कंठ रूकता जा रहा है,
आ रहा है काल देखो
भर गया है जहर से
संसार जैसे हार खाकर
देखते हैं लोग लोगों को
सही परिचय न पा कर
बुझ गयी है लौ पथ्वी की
जल उठो फिर सींचने को

3. सरोज स्मृति

दु:ख ही जीवन की कथा रही
क्या कहूँ आज जो नहीं कहीं
हो इसी कर्म पर वज्रपात
यदि धर्म, रहे नत सदा माथ
इस पथ पर, मेरे कार्य सकल
हों भ्रष्ट ीत के-से ातदल
कन्ये, गत कर्मों का अर्पण
कर, करता मै। तेरा तर्पण

4. सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'

यह दीप अकेला

यह वह विवास, नहीं जो अपनी लघुता में भी काँपा,

वह पीड़ा, जिस की गहराई को स्वयं उसी ने नापा;
कुत्सा, अपमान, अवज्ञा के धुँधु आते कड़ुवे तम में
यह सदा-द्रवित, चिर-जागरूक, अनुरक्त-नेत्र,
उल्लंब-बाहु, यह चिर-अखंड अपनापा
जिज्ञासु, प्रबुद्ध, सदा श्रद्धामय, इसको भक्ति को दे दो,
यह दीप, अकेला, स्नेह भरा
है गर्व भरा मदमाता, पर इसकों भी पंक्ति को दे दो।

5. यह मधु है- स्वयं काल की मौना का युग-संचय

यह गोरस-जीवन-कामधेनु का अमत-पूत पय,
यह अंकुर-फोड़ धरा को रवि को तकता निर्भय,
यह प्रकत, स्वयंभू ब्रह्म, अयुत: इसको भी ाक्ति को दे दो।
यह दीप, अकेला, स्नेह भरा।
है गर्व भरा मदमाता, पर इसको भी पंक्ति को दे दो

6. मैंने देखा, एक बूंद

मैंने देखा
एक बूंद सहसा
उछली सागर के झाग से;
रंग गई क्षणभर
ढलते सूरज की आग से
मुझ को दीख गया;
सूने विराट के सम्मुख
हर आलोक - छुआ-अपनापन
है उन्मोचन
नवरता के दाग से।

7. केदारनाथ सिहं -बनारस

जो है वह खड़ा है
बिना किसी स्तंभ के

जो नहीं है उसे थामे है

राख और रोनी के ऊंचे-ऊंचे स्तंभ

आग के स्तंभ

और पानी के स्तंभ

खुबूके

आदमी के उठे हुए हाथों के स्तंभ

8. केदारनाथ सिंह - दिशा

हिमालय किधर है?

मैंने उस बच्चे से पूछा जो स्कूल के बाहर

पतंग उड़ा रहा था

उधर-उधर-उसने कहा

जिधर उसकी पतंग भागी जा रही थी

मैं स्वीकार करूं

मैंने पहली बार जाना

हिमालय किधर है

9. विष्णुखरे - एक कम

1947 के बाद से

इतने लोगों को इतने तरीकों से

आत्मनिर्भर मालमाल और गतिील होते देखा है

कि अब जब आगे कोई हाथ फैलाता है

पच्चीस पैसे एक चाय या दो रोटी के लिए

तो जान लेता हूँ

मेरे सामने एक ईमानदार आदमी, औरत या बच्चा खड़ा है

मानता हुआ कि हाँ मैं लाचार हूँ कंगाल या कोढ़ी

या मैं भला चंगा हूँ और कामचोर और

एक मामूली धोखेबाज

10. सत्य

जब हम सत्य को पुकारते हैं
तो वह हमसे परे हटता जाता है
जैसे गुहारते हुए युधिष्ठिर के सामने से
भागे थे विदुर और भी घने जंगलों में
सत्य ाायद जानना चाहता है
कि उसके पीछे हम कितनी दूर तक भटक सकते हैं
कभी दिखता है सत्य
और कभी ओझल हो जाता है।
और हम कहते रह जाते हैं कि रूको यह हम हैं
जैसे धर्मराज के बार बार दुहाई देने पर
कि ठहरिए स्वामी विदुर
यह मैं हूँ आपका सेवक कुंतीनंदन युधिष्ठिर
वे नहीं ठिठकते

11. हम कह नहीं सकते

न तो हममें कोई स्फुरण हुआ और न ही कोई ज्वर
किंतु ाेष सारे जीवन हम सोचते रह जाते हैं
कैसे जानें कि सत्य का वह प्रतिबिम्ब हममें समाया या नहीं
हमारी आत्मा में जो कभी-कभी दमक उठता है।
क्या वह उसी की छुअन है
जैसे विदुर कहना चाहते तो वह बता सकते थे
सोचा होगा माथे के साथ अपना मुकुट नीचा किए
युधिष्ठिर ने
खांडवप्रस्थ से इंद्रप्रस्थ लौटते हुए।

12. रघुवीर सहाय - वसंत आया

और यह कैलेंडर से मालूम था।
अमुक दिन अमुकबार मदन महीने की होवेगी पंचमी
दफ्तर में छुट्टी थी यह था प्रमाण
और कविताएँ पढ़ते रहने से यह पता था

कि दहर-दहर दहकेंगे कहीं ढाक के जंगल

आम बौर आवेंगे

रंग-रस-गंध से लदे-फँदे दूर के विदो के,

वे नंदन-वन होवेंगे यास्वी

मधुमस्त पिक भौंर आदि अपना-अपना कतित्व

अभ्यास करके दिखावेंगे

यही नही जाना था कि आज के नगण्य दिन जानूँगा

जब मैंने जाना, कि वसंत आया।

13. तोड़ो

तोड़ो-तोड़ो-तोड़ो

ये पत्थर ये चट्टानें

ये झूठे बंधन टूटें

सुनते हैं, मिट्टी में रस है, जिससे उगती दूब है।

अपने मन के मैदानों पर व्यापी कैसी ऊब है

आधे -आधे गाने

14. तुलसीदास -भरत-राम का प्रेम

बिधि न सकेउ सहि मोर दुलारा। नीच बीचु जननी मिसु पारा।

यहउ कहत मोहि आतु न सोभा। अपनी समुझि साधु सुचि कोभा।

मातु मंदि भइँ साधु सुचाली। उर सन आनत कोटि कुचाली।

फरै कि कोदव बालि सुसाली। मुकुता प्रसव कि संबुक काली।

सपनेहुँ दोसक लेसु न काहू। मोर अभाग उदधि अवगाहू।

बिनु समझे निज अघ परिपाकू। जारिउँ जायँ जननि कहि काकू।

15. भूपति मरनु पेम पनु राखी। जननी कुमति जगतु सबु साखी।

देखिन जाहि बिकल महतारी। जरहिं दुसह जर पुर नर नारी।

महीं सकल अनरथ कर मूला। सो सुनि समुझि सहिऊ सब सूला।

सुनि बन गवनु कीन्ह रघुनाथा। करि मुनि वेष लखनु सिय साथा।

बिन पानहिन्ह पयोदेहि पाएँ। संकरू साखि रहेऊँ ऐहि धाएँ।

बहुरि निहारि निषाद सनेहू। कुलिस कठिन उर भएऊ न बेहू।
अब सबु आँखिन्ह देखेऊँ आई। जिअत जीव जड़ सबहू सहाई।
जिन्हहि निरखि मग साँपिनी बीछी।
तजिहि विषम बिषु तापस तीछी।।

16. राघौ! एक बार फिरि आवौ।

ए बर बाजि बिलोकि आपने बहुरी बनहि सिधावौ
जे पय प्यादू पोखि कर - पंकज बारबार चुचुकारे।
क्यों जीवहि मेरे राम लाड़िले। ते अब निपट बिसारे
भरत सौगुनी सार करत हैं अति प्रति जानि तिहारे
तदपि दिनहि दिन होत झाँवरे मनहुँ कमल हिम मारे
सुनहु पथिक। जो राम मिलहि वन कहियो मातु संदेसो
तुलसी मोहि और सबहित ते इन्हको बड़ो अंदेसो।

17. मलिक मुहम्मद जायसी - बारहमासा

अगहन देवस घटा निसि बाढ़ी। दूभर दुख जो जाइ किमि काढ़ी।
अब धनि देवस बिरह भा राती। जरै विरह ज्यों दीपक बाती।
कापाँ हिया जनावा सीऊ। तौ पै जाइ होइ संग पीऊ।
घर-घर चीर रचा सब काहूँ। मोर रूप रंग लै गा नाहू।
पलटि न बहुरा गा जो बिछोई। अबहुँ फिरै फिरै रंग सोई।
सियरि आगिनि बिरहिनि हिम जारा। सुलगि सुलगि दगधै भै छारा
यह दुख दगध न जानै कंतू। जोबन जरम करै भसमंतू।
पिय सौ कहेहु संदेसरा ऐ भँवरा ऐ काग।
सो धनि बिरहें जरि गई तेहिक धुँआ हम लाग।।

18. पूस जाड़ थरथर तन काँपा। सुरूज जड़ाडू लंक दिसि तापा।

विरह बाढ़ि मा दारू न सीऊ। कँपि-कँपि मरौं लेहि हरि जीऊ।।
कंत कहाँ हो लागौं हियरे। पंथ अपार सूझ नहीं निभरें।
सौर सुपेती आवै जूड़ी। जानहुँ सेज हिवंचल बूढ़ी।
चकई निसि बिछरै दिन मिला। हौं निसि बासर बिरह कोकिला।

रैन अकेलि साथ नहीं सखी। कैसे जिऔ बिछोही पँखी
बिरह सैचान भवै तन चाँड़ा। जीयत खाइ मुँए नहि छाँड़ा।
रकत ढरा माँसू गरा हाड़ भए सब संख।
धनि सारस होइ ररि मुई आइ समेटहु पंख।।

19. नैन चुवहिं माँहुट नीरू। तेहि जल अंग लाग सर चीरू।
टूटहि बूंद परहि जस ओला। विरह पवन होइ मारै झोला।
केहिक सिंगार को पहीर पटोरा। गियँ नहि हार रही होइ डोरा।
तुम बिन कंता धनि हरूई तन तिनुवर भा डोल।
तेहि पर बिरह जराइ कै चहै उड़ावा झोल।।

20. फाग करहि सब चाँचरि जोरी। मोहि जिय लाइ दीन्हि जसि होरी।
जौ पै पियहि जरत अस भावा। जरत मरत मोहि रोस न आवा
रातिहु देवस इहै मन मोरें। लागौं कंत छार जेऊं तोरें
यह तन जारौं छार कै कहौ कि पवन उड़ाउ।
मकु तेहि मारग होइ परौ कंत धरै जहँ पाउ।।

21. विद्यापति- पद
के पतिया लए जाएत रे मोरा पिअतम पास।
हिए नहि सहए असह दुख रे भेल साओन मास।।
एकसरि भवन पिआ बिनु रे मोहि रहलों न जाए।
सखि अनकर दुख दारून रे जग के पतिआए।।
मोर मन हरि हर लए गेल रे अपने मन गेल
गोकुल तेजि मधुपुर बस रे कन अपजस लेल।।
विद्यापति कवि गाओल रे धनि धरू मन आस।
आओत तोर मन भावन रे एहि कातिक मास।।

22. सखि हे, कि पुछीस अनुभव मोए।
सेह पिरिति अनुराग बखानिअ तिल तिल नूतन होय।।
जनम अवधि हम रूप निहारल नयन न तिरपित भेल।।
सेहो मधुर बोल स्रवनहि सूनल स्रुति पथ परस न गेल।।

कत मधु-जामिनि रभस गमाओलि न बूझल कइसन केलि।।

लाख लाख जुग हिअ हिअ राखल तइओ हिअ जरनि न गेल।।

कत बिदगध जन रस अनुमादए अनुभव काहु न पेख।।

विद्यापति कह प्रान जुड़ाइते लाखे न मीलल एक।।

23. केशवदास - दंडक

बानी जगरानी की उदारता बखानी जाइ,

ऐसी मति उदित उदार कौन की भई।

देवता प्रसिद्ध सिद्ध रिषिराज तपबद्ध,

कहि कहि हारे सब कहि न लाहू लई।

भावीभूत वर्तमान जगत बखानत है

'केसोदास' क्यों हू न बखानी काहू पै गई।

पति बने चारमुख पूत बने पाँच मुख

नाती बनै षटमुख तदपि नई नई।।

24. घनानंद - कवित्त

बहुत दिनान को अवधि आस पास परे,

खरे अरबरनि भरे हैं उठि जान को।

कहि कहि आवन छबीले मनभावन को,

गहि गहि राखीत ही दै दै सनमान को।

झूठी बतियानि की पत्यानि तें उदास है कै,

अब न घिरत घन आनँद निदान को।

अधर लगे हैं आनि करि कै पयान प्रान,

चाहत चलन ये सँदेसो लै सुजान को।।

25. पूरन प्रेम को मंत्र महा पन जा मधि सोधि सुधरि है लेख्यौ।

ताही के चारू चरित्र विचित्रनि यो पचिकै रचि राखि बिसेख्यौ।

ऐसो हियो हितपत्र पवित्र जो आन-कथा न कहूँ अवरेख्यौ।

सो घन आनँद जान अजान लौं टूक किया पर बाँचि न देख्यौ।

26. आनाकानी आरसी निहारिबो करौगे कौलौं?

कहा मो चकित दसा त्यों न दीठि डोलिहै?

मौन हू सौं देखिहौं कितेक पन पालिहौ जू,

कूकभरी मूकता बुलाया आप बोलिहै।

जान घनआँनद यों मोहिं तुम्हैं पैज परी,

जानियैगो टेक टरें कौन धौ मलोलिहै।।

रूई दिए रहौगे कहाँ लौ बहरायबे की?

कबहूँ तौ मेरियै पुकार कान खोलिहै।

7. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :- **(3+3)=6**

जयशंकर प्रसाद - देवसेना का गीत

1. 'मैने भ्रमवा जीवन संचित, मधुकरियों की भीख लुटाई'' पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए।
2. 'मैने निज दुर्बल पद-बल पर, उससे हारी,-होड़ लगाई'' इन पंक्तियों में 'दुर्बल पद बल' और 'हारी होड़' में निहित व्यंजना स्पष्ट कीजिए।
3. 'कार्नोलिया का गीत ' में भारतवर्ष की क्या-क्या विोषताएँ बताई गई हैं?
4. 'उड़ते खग' और 'बरसाती आँखों कें बादल' में क्या विोष अर्थ व्यंजित होता है?
5. 'जहाँ पहुँच अनजान क्षितिज को मिलता एक सहारा'' पंक्ति का आाय स्पष्ट कीजिए।

उच्चस्तरीय विचारणीय प्रश्न

6. 'देवसेना का गीत' कविता में व्यक्त निराा एवं वेदना के अतिरिक्त छायावादी कविता की अन्य विोषताएँ बताइए।
7. जयांकर प्रसाद द्वारा लिखित "अरूण यह मधुमय दो हमारा'' आज के परिवो में कितना सार्थक है?

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला-गीत गाने दो मुझे

8. 'सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला' गीत क्यों गाना चाहते हैं?
9. ठग-ठाकुरों से कवि का संकेत किसकी ओर है?
10. ठग-ठाकुरों ने किससे क्या लूट लिया है?
11. 'जल उठो फिर सींचने को' इस पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए।
12. वेदना को छिपाने के लिए कवि गीत गाना चाहता है क्यों? गीत गाने से संवेदनाँए समाप्त हो जाती हैं? तर्क सहित उत्तर दीजिए।

सरोज-स्मृति

13. 'मेरे' बसंत की प्रथम गीति' के द्वारा कवि क्या कहना चाहता है?

14. 'आका बदलकर बना मही' में 'आका' और 'मही' ब्द किसकी ओर संकेत करते हैं?

15. 'वह लता वहीं की जहाँ कली तू खिली, स्नेह से हिली, पली' पंक्ति के द्वारा किस प्रसंग को उद्घाटित किया गया है?

16. ाकुंतला के प्रसंग के माध्यम से कवि निराला क्या संकेत करना चाहता है?

उच्चस्तरीय विचारणीय प्रश्न

17. कवि निराला की श्रंगारिक कल्पना किस रूप में साकार हुई है? सरोज स्मति कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

18. कवि निराला की 'सरोज स्मति' कविता आम आदमी के जीवन संघर्षों से किस प्रकार मेल खाती है?

सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन "अज्ञेय" यह दीप अकेला

19. 'दीप अकेला' के प्रतीकार्थ को स्पष्ट करते हुए यह बताइए कि उसे कवि ने स्नेह भरा, गर्वभरा एवं मदमाता क्यों कहा है?

20 'यह अद्वितीय - यह मेरा-यह मैं स्वयं विसर्जित '' पंक्ति के आधार पर व्यष्टि के समष्टि में विसर्जन की उपयोगिता बताइए।

21. 'यह दीप अकेला' कविता का मूल भाव लिखिए।

22. 'रंग गई क्षण भर, ढलते सूरज की आग से' पंक्ति के आधार पर बूंद के क्षण भर रंगने की सार्थकता बताइए।

23. 'क्षण के महत्व' को उजागर करते हुए कविता का मूल भाव लिखिए।

उच्चस्तरीय विचारणीय प्रश्न

24. "मैंने देखा एक बूंद" कविता में कवि ने सत्यता के दर्न कैसे किए हैं?

केदारनाथ सिंह -बनारस

25. बनारस हर के लिए जो मानवीय क्रियाएँ इस कविता में आई हैं उनका व्यंग्यार्थ स्पष्ट कीजिए।

26. बनारस में बसंत का आगमन कैसे होता है और उसका क्या प्रभाव इस हर पर पड़ता है?

27. 'खाली कटोरों में बसंत का उतरना' से क्या आय है?

उच्चस्तरीय विचारणीय प्रश्न

28. बनारस कविता के आधार पर सिद्ध कीजिए कि आस्था, श्रद्धा, विरक्ति, विवास, आचर्य और भक्ति का मिलाजुला रूप बनारस है?

29. "**दिशा**" कविता के आधार पर बताइए कि बच्चे का इधर-उधर कहना क्या प्रकट करता है?

उच्चस्तरीय विचारणीय प्रश्न

30. दिाा कविता कें आधार पर स्पष्ट कीजिए कि प्रत्येक व्यक्ति का अपना यथार्थ होता है?
31. बालक को हिमालय की दिाा की ज्ञान कैसे हुआ? बाल मनोविज्ञान के आधार पर लिखिए।

विष्णु खरे-एक कम

32. 1947 के बाद भारतीय समाज कैसा हो गया और कैसा नहीं रहा?
33. हाथ फैलाने वाले व्यक्ति को कवि ने ईमानदार क्यों कहा है? स्पष्ट कीजिए।

उच्चस्तरीय विचारणीय प्रश्न

34. "मैं तुम्हारा विरोधी प्रतिद्वंद्वी या हिस्सेदार नहीं" से कवि विष्णु खरे का क्या अभिप्राय है?
35. "एक कम" कविता के माध्यम से कवि ने स्वतंत्रता के बाद के भारतीय समाज की जीवन ौली को किस रूप में रेंखांकित किया है? लिखिए।
36. बदलते परवो में ईमानदार व्यक्ति की छवि धूमिल होती जा रही है क्या आप सहमत है?
37. **सत्य** हमसे परे क्यों और किस प्रकार हटता चला जाता है?
38. सत्य का दिखना और ओझल होने से कवि का क्या तात्पर्य है?
39. सत्य और संकल्प के परस्पर संबंध पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।
40. सत्य नामक कविता किस सामाजिक यथार्थ के उद्देयों को साथ लेकर चलती है?

उच्चस्तरीय विचारणीय प्रश्न

41. सत्य बोलना, सत्य सुनना, सत्य को सहन करना और सत्य का पालन करना आज के बदलते परिवो में अत्यन्त मुकिल क्यों है?

बसंत आया

42. 'प्रकति मनुष्य की सहचरी है' इस विषय पर विचार व्यक्त कीजिए।
43. बसंत आया कविता में कवि की चिंता क्या है?

उच्चस्तरीय विचारणीय प्रश्न

44. रघुवीर सहाय ने बसंत कविता के माध्यम से मनुष्य की किस जीवन ौली को व्यंग्य की निााना बनाया है? और क्यों?
45. 'पत्थर' और 'चट्टान' **तोड़ो** किसके प्रतीक हैं?
46. कवि को धरती और मन की भूमि में क्या-क्या समानताएँ दिखाई पड़ती हैं?
47. कविता का आरम्भ "तोड़ो तोड़ो तोड़ो" से हुआ है और अंत "गोड़ो गोड़ो' से। विचार कीजिए कि कवि ने ऐसा क्यों किया?

उच्चस्तरीय विचारणीय प्रश्न

48. 'तोड़ो' कविता के माध्यम से कवि क्या संदो देना चाहता है?

तुलसीदास

49. "फरै कि कोदव बालि सुसाली। मुकुता प्रसव कि संबुक काली।" पंक्ति में छिपे भाव और ािल्प सौन्दर्य को स्पष्ट कीजिए।
50. भरत का आत्म परिताप उनके चरित्र के किस उज्ज्वल पक्ष की ओर संकेत करता है?
51. 'मही सकल अनरथ का मूला' पंक्ति द्वारा भरत के विचारों-भावों का स्पष्टीकरण कीजिए।
52. 'रहि चकि चित्रलिखी-सी' पंक्ति का मर्म अपने ाब्दों में स्पष्ट कीजिए।
53. गीतावली में संकलित पद "राघौ एक बार फिरि आवो" में निहित करूणा और संदो को अपने ाब्दों में स्पष्ट कीजिए।
54. राम के वन गमन के बाद उनकी वस्तुओं को देखकर माँ कौाल्या कैसा अनुभव करती है? अपने ाब्दों में वर्णन कीजिए।

उच्चस्तरीय विचारणीय प्रश्न

55. आज के संदर्भ में राम और भरत जैसा भात प्रेम क्या संभव है? अपनी राय दीजिए।

मलिक मुहम्मद जायसी

56. 'जीयत खाइ मुएँ नहीं छाँड़ा" पंक्ति के संदर्भ में नायिका की विरह-दाा का वर्णन अपने ाब्दों में कीजिए।

उच्चस्तरीय विचारणीय प्रश्न

57. पाठ्य पुस्तक में संकलित पदों कें आधार पर नागमती के विरह-वर्णन पर प्रकाा डालिए।
58. विरहावस्था में विद्यापति की राधा की मनोदाा और जायसी की नागमती की मनोदाा का तुलनात्मक अन्तर स्पष्ट कीजिए।

विद्यापति

59. "सेह पिरिति अनुराग बखानिअ तिलतिल नूतन होए" से कवि का क्या अभिप्राय है?
60. कोयल और भौरों के कलरव का नायिका पर क्या प्रभाव पड़ता है?
61. नायिका कब से अपने प्रियतम का रूप निहार रही है परन्तु फिर भी उसके नेत्र संतुष्ट क्यों नहीं हुए हैं?
62. कातर दष्टि से चारों तरफ प्रियतम को ढूँढने की मनोदाा को कवि विद्यापति ने किन ाब्दों में व्यक्त किया है?

उच्चस्तरीय विचारणीय प्रश्न

63. विद्यापति के काव्य में प्रेम और सौंदर्य की अतुलनीय अभिव्यक्ति हुई है। उदाहरण देकर समझाइए।

केशवदास

64. माँ सरस्वती की उदारता किसी से भी क्यों नहीं बखानी गई?

65. चारमुख, पाँचमुख और षटमुख किन्हें कहा गया है और उनका देवी सरस्वती से क्या संबंध है?

66. कवित्त में पंचवटी के किन गुणों का उल्लेख किया गया है?

उच्चस्तरीय विचारणीय प्रश्न

67. कोवदास कठिन काव्य के प्रेत कहे जाते हैं। क्यों?

68. 'तेलनि तूलनि पूँछि जरी न जरी, जरी लक जराइ-जरी'' के साथ कौन सी घटना जुड़ी है?

घनानन्द

69. संकलित पदों के आधार पर घनानन्द की विरह दाा का वर्णन कीजिए।

70. घनानन्द ने "चाहत चलन ये संदेसो लो सुजान" क्यों कहा है?

71. कवि मौन होकर प्रेमिका के कौन से प्रण पालन को देखना चाहता है?

72. पठित सवैये के आधार पर बताइए प्राण पहले कैसे पल रहे थे और अब क्यों दुखी है?

73. कवि घनानन्द ने किस प्रकार की पुकार से 'कान खोलि है'' की बात कही है?

उच्चस्तरीय विचारणीय प्रश्न

74. घनानन्द विरह वर्णन करने में सिद्धहस्त हैं, कवित्त एवं सवैयों के आधार पर विवेचना कीजिए।

(9) निम्नलिखित काव्यांशों का काव्य सौंदर्य स्पष्ट कीजिए: (3+3)=6

जयशंकर प्रसाद-देवसेना का गीत

1. श्रमित स्वप्न की मधुमाया में,
   गहन-विपिन की तरू-छाया में,
   पथिक उनींदी श्रुति में किसने-
   यह विहाग की तान उठाई।

2. लगी सतष्ण दीठ थी सबकी,
   रही बचाए फिरती कबकी।
   तूने खो दी सकल कमाई।

3. लौटा लो यह अपनी थाती
   मेरी करूणा हा-हा खाती
   विव न सँभलेगी यह मुझसे

इससे मन की लाज गँवाई।

4. हेम कुंभ ले उषा सवेरे -भरती ढुलकाती सुख मेरे।

मदिर ऊंघते रहते जब-जगकर रजनी भर तारा।।

सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला - गीत गाने दो मुझे

5. भर गया है ज़हर से

संसार जैसे हार खाकर,

देखते हैं लोग लोगों को,

सही परिचय न पाकर

बुझ गई है लौ पथा की,

जल उठो फिर सींचने को

सरोज स्मृति

6. माँ की कुल शिक्षा मैंने दी,

पुष्प-सेज तेरी स्वयं रची,

सोचा मन में, "वह शकुतला,

पर पाठ अन्य यह, अन्य कला।"

सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेय यह दीप अकेला

7. यह प्रकत, स्वयंभू, ब्रहम, अयुत: इस को भी शक्ति को दे दो।

यद दीप, अकेला, स्नेह भरा,

है गर्व भरा मदमाता, पर इस को भी पंक्ति को दे दो।

केदारनाथ सिंह - बनारस

8. यह धीरे-धीरे होना

धीरे-धीरे होने की सामूहिक लय

दृढ़ता से बाँधे है समूचे शहर को

इस तरह कि कुछ भी गिरता नहीं है।

9. अद्‌भूत है इसकी बनावट

यह आधा जल में है

आधा मंत्र में

आधा फूल में है

आधा ाव में

आधा नींद में है

आधा ांख में

अगर ध्यान से देखो

तो यह आधा है

और आधा नहीं है

10. ाताब्दियों से इसी तरह

गंगा के जल में

अपनी एक टाँग पर खड़ा है यह ाहर

अपनी दूसरी टाँग से

बिल्कुल बेखबर

विष्णु खरे - एक कम

11. कि अब जब आगे कोई हाथ फैलाता है

पच्चीस पैसे एक चाय या दो रोटी के लिए

तो जान लेता हूँ

मेरे सामने एक ईमानदार आदमी, औरत या बच्चा खड़ा है।

12. मैं तुम्हारा विरोधी प्रतिद्वंद्वी या हिस्सेदार नहीं

मुझे कुछ देकर या न देकर भी तुम

कम से कम एक आदमी से तो निचित रह सकते हो

सत्य

13. हम कह नहीं सकते

न तो हममें कोई स्फुरण हुआ और न ही कोई ज्वर

किंतु ोष सारे जीवन हम सोचते रह जाते हैं

कैसे जानें कि सत्य का वह प्रतिबिंब हममें समाया या नहीं

हमारी आत्मा में जो कभी-कभी दमक उठता है

क्या वह उसी की छुअन है।

रघुवीर सहाय - वसंत आया

14. ऐसे किसी बँगले के किसी तरू (ओक)

पर कोई चिड़िया कुऊकी

चलती सड़क के किनारे लाल बजरी पर चुरमुराए पाँव तले

ऊंचे तरूवर से गिरे

बड़े बड़े पियराए पत्ते

कोई छः बजे सुबह जैसे गरम पानी से नहाई हो

खिली हुई हवा आई, फिरकी सी आई, चली गई।

तोड़ो

15. ये ऊसर बंजर तोड़ो

से चरती परती तोड़ो

सब खेत बनाकर छोड़ो

मिट्‌टी में रस होगा ही जब वह पोसेगी बीज को

हम इसको क्या कर डालें इस अपने मन की खीज को?

गोड़ो गोड़ो गोड़ो

तुलसीदास-भरत-राम का प्रेम

16. पुलकि सरीर सभा भए ठाढ़े, नीरज नेह जल बाढ़े।

कहब मोर मुनिनाथ निबाहा। एंहि ते अधिक कहौ मैं काहा।।

17. मातु मंदि भई सुचाली। उर अस आनत कोटि कुचाली।

फरै कि कोदव बालि सुसाली। मुकुता प्रसव कि संबुक काली।।

18. कबहुँ समुझि वनगमन राम को रहि चकि चित्रलिखी सी।

तुलसीदास वह समय कहे तें लागति प्रीति सिखी सी।।

19. भरत सौगुनी सार करत हैं अति प्रिय जानि तिहारे।

तदपि दिनहिं दिन होत झाँवरे मनहुँ कमल हिममारे।।

20. जे पय प्याइ पोखि-कर पंकज वार वार चुचकारे।

क्यों जीवहिं, मेरे राम लाडिले। ते अब निपट बिसार।।

मलिक मुहम्मद जायसी - बारहमासा

21. सियरि अगिनि बिरहिनि हिय जारा। सुलगि सुलगि दगधै भै छारा।।
    यह दुख दगध न जाने कंतू। जोबन जरम करै भसमंतू।।

22. सौर सुपेती आवै जूड़ी। जानहुँ सेज हिवंचल बूढ़ी।।
    चकई निसि बिछुरैं दिनमिला। हौं निसि बासर बिरह कोकिला।।

23. रैनि अकेलि साथ नहीं सखी। कैसे जिऔं बिछोही पँखी।।
    बिरह सैचान भँवै तन चाँड़ा। जीयत खाइ मुएँ नहिं छाँड़ा।।

24. नैन चुवहि जस माँहुट नीरू। तेहि जल अंग लाग सर चीरू।।
    टूटहिं बुंद परहि जस ओला। विरह पवन होई मारै झोला।।

विद्यापति

25. मोर मन हरि हर लए गेल रे अपनो मन गेल।
    गोकुल तेजि मधुपुर बसरे कन अपजस लेल।।

26. जनम अबधि हम रूप निहारल नयन न तिरपि भेल।।
    सेहो मधुर बोल स्रवनहि सूनल स्रूति पथ परस न गेल।।

27. कुसुमित कानन हेरि कमलमुखि,
    मूंदि रहए दु नयान।
    कोकिल - कलरव, मधुकर-धुनि सुनि,
    कर देइ झाँपइ कान।।

28. तोहर विरह दिन छन-छन तनु छिन-
    चौदहि-चाँद-समान।
    भनइ विद्यापति सिबसिंह नर-पति
    लखिमादेह-रमान।।

केशवदास -दंडक

29. सब जाति फटी दुख की दुपटी कपटी न रहै जहँ एक घटी।
    निघटी रूचि मीचु घटी हूँ घटी जगजीव जतीन की छूटी चटी।

लक्ष्मण-उर्मिला

30. अघओघ की बेरी कटी बिकटी निकटी प्रकटी गुरूज्ञान-गटी।

चहुँ ओरनि नाचति मुक्तिनटी गुन धूरजटी जटी पंचवटी।।

31. तेलनि तूलनि पूँछि जरी न जरी,

जरी लंक जराइ-जरी।।

घनानन्द - कवित्त

32. अधर लगे हैं आनि करि कै पयान प्रान,

चाहत चलन ये सँदेसो लै सुजान को।।

33. रूई दिए रहोगे कहाँ लौ बहरायबे की?

कबहूँ तौ मेरियै पुकार कान खोलिहै।

34. जब तौ छबि पीवत जीवत हे,

अब सोचन लोचन जात जरे।

हित-तोष के तोष सु प्रान पले

बिललात महादुख दोष भरे।

35. तब हार पहार से लागत हे

अब आनि कै बीच पहार परे।।

36. सो घनआनँद जान अजान लौं

टूक कियौ पर बाँचि न देख्यौ।

'गद्य खण्ड'

प्रश्न 10.सप्रसंग व्याख्या (दो में से एक प्रश्न) निर्धारित अंक -6

प्रेमघन की छाया - स्मृति

1. मेरे पिताजी फ़ारसी के अच्छे ज्ञाता और पुरानी हिन्दी कविता के बड़े प्रेमी थे। फ़ारसी कवियों की उक्तियों को हिन्दी कवियों की उक्तियों के साथ मिलाने में उन्हें बड़ा आनंद आता था। वे रात को प्राय: रामचरितमानस और रामचंद्रिका, घर के सब लोगों को एकत्र करके बड़े चित्ताकर्षक ढंग से पढ़ा करते थे। आधुनिक हिन्दी-साहित्य में भारतेंदु जी के नाटक उन्हें बहुत प्रिय थे। उन्हें भी वे कभी-कभी सुनाया करते थे। जब उनकी बदली हमीरपुर ज़िले की राठ तहसील से मिर्जापुर हुई तब मेरी अवस्था आठ वर्ष की थी। उसके पहिले ही से भारतेंदु के संबंध में एक अपूर्व मधुर भावना मेरे मन में जगी रहती थी। 'सत्य हरिचंद्र के नायक राजा हरिचन्द्र और कवि हरिचन्द्र में मेरी बाल-बुद्धि कोई भेद नहीं कर पाती थी।

2. भारतेंदु - मंडल की किसी सजीव स्मति के प्रति मेरी कितनी उत्कंठा रही होगी, यह अनुमान करने की बात है। मैं नगर से बाहर रहता था। एक दिन बालकों की मंडली जोड़ी गई। जो चौधरी साहब से मकान से परिचित थे, वे अगुआ हुए। मील डेढ़ का सफ़र तै हुआ। पत्थर के एक बड़े मकान के सामने हम लोग जा खड़े हुए। नीचे का बरामदा खाली था। ऊपर का बरामदा सघन लताओं के जाल से आवत था। बीच-बीच में खंभे और खुली जगह दिखाई पड़ती थी। उसी ओर देखने के लिए मुझसे कहा गया। कोई दिखाई न पड़ा। सड़क पर कई चक्कर लगे। कुछ देर पीछे एक लड़के ने उँगली से ऊपर की ओर इारा किया। लता-प्रतान के बीच एक मूर्ति खड़ी दिखाई पड़ी। दोनों कंधों पर बाल बिखरे हुए थे। एक हाथ खंभे पर था देखते ही देखते यह मूर्ति दष्टि से ओझल हो गई। बस, यह पहली झाँकी थी।

3. एक बार एक आदमी साथ करके मेरे पिताजी ने मुझे एक बारात में काी भेजा। मैं उसी के साथ घूमता-फिरता चौखंभा की ओर जा निकला। वहीं पर एक घर में से पं. केदारनाथ जी पाठक निकलते दिखाई पड़े। पुस्तकालय में वे मुझे प्राय: देखा करते थे। इससे मुझे देखते ही वे वहीं खड़े हो गए। बात ही बात में मालूम हुआ कि जिस मकान में वे निकले थे, वह भारतेंदु जी का घर था। मैं बड़ी चाह और कुतुहल की दष्टि से कुछ देर तक उस मकान की ओर न जाने किन-किन भावनाओं में लीन होकर देखता रहा। पाठक जी मेरी यह भावुकता देख बड़े प्रसन्न हुए, और बहुत दूर मेरे साथ बातचीज करते हुए गए। भारतेंदु जी के मकान के नीचे का यह हृदय-परिचय बहुत ीघ्र गहरी मैत्री में परिणत हो गया।

4. चौधरी साहब से तो अब अच्छी तरह परिचय हो गया था। अब उनके यहाँ मेरा जाना एक लेखक की हैसियत से होता था। हम लोग उन्हें एक पुरानी चीज़ समझा करते थे। इस पुरातत्व की दष्टि में प्रेम और कतूहल का एक अद्भुत मिश्रण रहता था। यहाँ पर यह कह देना आवयक है कि चौधरी साहब एक खासे हिंदुस्तानी रईस थे। वसंत पंचमी, होली इत्यदि अवसरों पर उनके यहाँ खूब नाचरंग और उत्सव हुआ करते थे। उनकी हर एक अदा से अदा से रिसायत और तबीयतदारी टपकती थी। कंधों तक बाल लटक रहे हैं। आप इधर से उधर टहल रहे हैं। एक छोटा सा लड़का पान की ततरी लिए पीछे-पीछे लगा हुआ है। बात की काँट-काँट का क्या कहना है। जो बातें उनके मुँह से निकलती थी, उनमें एक विलक्षण वक्रता रहती थी। उनकी बातचीत का ढंग उनके लेखों के ढंग से एकदम निराला होता था। नौकरों तक के साथ उनका संवाद सुनने लायक होता था। अगर किसी नौकर के हाथ से कभी कोई गिलास वगैरह

गिरा तो उनके मुँह से यही निकला कि 'कारे बचा त नाही'। उनके प्रनों के पहिले 'क्यों साहब' अकसर लगा रहता था।

सुमिरिनी के मनके

क. बालक बच गया।

5. बालक ने सीखा सिखाया उत्तर दिया कि मै यावज्जन्म लोकसेवा करूँगा। सभा 'वाह-वाह' करती सुन रही थी, पिता का हृदय उल्लास से भर रहा था। एक वद्ध महााय ने उसके सिर पर हाथ फेरकर आाीर्वाद दिया और कहा कि जो तू इनाम माँगे वही दें। बालक कुछ सोचने लगा। पिता और अध्यापक इस चिंता में लगे कि देखें यह पढ़ाई का पुतला कौन सी पुस्तक माँगता है। बालक के मुख पर विलक्षण रंगों का परिवर्तन हो रहा था, हृदय में कत्रिम और स्वाभाविक भावों की लड़ाई की झलक आँखों में दीख रही थी। कुछ खाँसकर, गला साफ़ कर नकली परदे के हट जाने पर स्वयं विस्मित होकर बालक ने धीरे से कहा 'लड्डू'। पिता और अध्यापक निराा हो गए। इतने समय तक मेरा वास घुट रहा था। अब मैंने सुख से साँस भरी। उन सबने बालक की प्रवत्तियों का गला घोंटने में कुछ उठा नहीं रखा था। पर बालक बच गया।

ख. घड़ी के पुर्ज़े

6. धर्म के रहस्य जानने की इच्छा प्रत्येक मनुष्य न करे, जो कहा जाए वही कान ढलकाकर सुन ले, इस सत्ययुगी मत के समर्थन में घड़ी का दष्टांत बहुत तालियाँ पिटवाकर दिया जाता है। घड़ी समय बतलाती है। किसी घड़ी जाननेवाले से समय पूछ लो और काम चला लो। यदि अधिक करो तो घड़ी देखना स्वंय सीख लो किंतु तुम चाहते हो कि घड़ी का पीछा खोलकर देखें, पुर्ज़े गिन लें, उन्हें खोलकर फिर जमा दें, साफ़ करके फिर लगा लें - यह तुमसे नहीं होगा। तुम उसके अधिकारी नहीं। यह तो वेदाास्त्रज्ञ धर्माचार्यों का ही काम है कि घड़ी के पुर्जे जानें, तुम्हें इससे क्या?

7. घड़ी देखना तो सिखा दो, उसमें तो जन्म और कर्म की पंख न लगाओं, फिर दूसरों से टंटा क्यों? गिनती हम जानते हैं, अंक पहचानते हैं, सुइयों की चाल भी देख सकते हैं, फिर आँखें भी हैं तो हमें ही न देखने दो, पड़ोस की घड़ियों में दोपहर के बारह बजे हैं। आपकी घड़ी में आधी रात है, जरा खोलकर देख न लेने दीजिए कि कौन-सा पेंच बिगड़ रहा है, यदि पुर्ज़े ठीक हैं और आधी रात ही है तो हम फिर सो जाएँगे, दूसरी घड़ियों को गलत न मान लेंगे पर ज़रा देख तो लेने दीजिए। पुर्जे खोलकर फिर ठीक करना उतना कठिन काम नहीं है, लोग सीखते भी हैं, सिखाते भी हैं, अनाड़ी के हाथ में चाहे घड़ी मत दो पर जो घड़ीसाजी पास कर आया है उसे तो देखने दो।

ग. ढेले चुन लो

8. जैसे राजपूतों की लड़कियाँ पिछले समय में रूप देखकर, जस, सुनकर स्वयंवर करती थी, वैसे वैदिक काल के हिंदु ढेले छुआकर स्वंय पत्नीवरण करते थे। आप कह सकते हैं कि जन्मभर के साथी की चुनाव मट्टी के ढेलों पर छोड़ना कैसी बुद्धिमानी है! अपनी आँखों से जगह देखकर, अपने हाथ से चुने हुए मिट्टी के डगलों पर भरोसा करना क्यों बुरा है और लाखो-करोड़ो कोस दूर बैठे बड़े-बड़े मट्टी और आग के ढेलों - मंगल और नैचर और बहस्पति की कल्पित चाल के कल्पित हिसाब का भरोसा करना क्यों अच्छा है, यह मैं क्या कह सकता हूँ? बकौल वात्स्यायन के, आज का कबूतर अच्छा है कल के मोर से, आज का पैसा अच्छा है कल के मोहर से।

कच्चा चिट्ठा

9. मै कहीं जाता हूँ तो छूँछे हाथ नहीं लौटता। यहाँ कोई विोष महत्व की चीज़ तो नहीं मिली पर गाँव के भीतर कुछ बढ़िया मण्मूर्तियाँ, सिक्के और मनके मिल गए। इक्के पर कौाम्बी लौटा। एक दूसरे रास्ते से। एक छोटे-से गाँव के निकट पत्थरों के ढेर के बीच, पेड़ के नीचे एक चतुर्मुख िव की मूर्ति देखी। वह वैसे ही पेड़ के सहारे रखी थी जैसे उठाने के लिए मुझे ललचा रही हो। अब बाप ही बताइए, मैं करता ही क्या? यदि चांद्रायण व्रत करती हुई बिल्ली के सामने एक चूहा स्वंय आ जाए तो बेचारी को अपना कर्त्तव्य पालन करना ही पड़ता है। इक्के से उतरकर इधर-उधर देखते हुए उसे चुपचाप इक्के पर रख लिया। 20 सेर वज़न में रही होगी। 'न कूकुर भूँकस, न पहरू जागा।' मूर्ति अच्छी थी। पसोवे से थोड़ी सी चीज़ों के मिलने की कमी इसने पूरी कर दी। उसे लाकर नगरपालिका में संग्रहालय से संबंधित एक मंडप के नीचे अन्य मूर्तियों के साथ रख दिया।

10. कौवा भी काला होता है, कोयल भी काली होती है। दोनों में भेद ही क्या है। परंतु वसंत ऋतु के आते ही पता चल जाता है कि कौन कौवा है और कौन कोयल। संग्रहालय को देखकर बोला "बहुत कीमती संग्रह।" मैने पूछा कि कीमती से आपका क्या तात्पर्य है? रूपयों में बतावें तो समझ मे आवे। हँसकर बोला, 'रूपयों में बता दूँ तो आपका ईमान डिग जाए।' वैसे ही हँसकर मैने जवाब दिया कि 'ईमान! ऐसी कोई चीज़ मेरे पास हुई नहीं तो उसके डिगने का कोई सवाल नहीं उठता। यदि होता तो इतना बड़ा संग्रह बिना पैसा-कौड़ी के हो ही नहीं सकता।'

11. आखिर इस मूर्ति में कौन सा सुरखाब का पर लगा था जो दो रूपए में मिली और दस हज़ार रूपए उस पर न्यौछावर कर फेंके जा रहे है। यह मूर्ति उन बोघिसत्व की मूर्तियों में है जो अब तक संसार में पाई गई मूर्तियों में सबसे पुरानी है। यह कुषाण सम्राट कनिष्क केक राज्यकाल के दूसरे वर्ष स्थापित की गई थी। ऐसा लेख उस मूर्ति के पदस्थल पर उत्कीर्ण है। इस ेर के मसर लेने से दिल दूना हो गया और नए सिरे से फिर मुँह में खून लग गया। ेर तो रोज़ मिलता नहीं पर चीतल, साँभर तो हर बार मिलते ही रहते हैं। ेर की केवल आाा मात्र रहती हैं। परंतु इसी आाा से िाकार, अनुप्राणित रहता हैं और िाकारी जंगल-जंगलकी खाक छानता फिरता है।

संवदिया

12. संवाद सुनाते समय बड़ी बहुरिया सिसकने लगी। हरगोबिन की आँखें भी भर आई। बड़ी हवेली की लक्ष्मी को पहली बार इस तरह सिसकते देखा है हरगोबिन ने। वह बोला, 'बड़ी बहुरिया, दिल को कड़ा कीजिए।' 'और कितना कड़ा करूँ दिल? .... माँ से कहना, मै। भाई-भाभियों की नौकरी करके पेट पालूँगी। बच्चों की जूठन खाकर एक कोने में पड़ी रहूँगी, लेकिन यहाँ अब नही .... अब नहीं रह सकूँगी। .... कहना, यदि माँ मुझे यहाँ से नहीं ले जाएगी तो मैं किसी दिन गले में घड़ा बाँधकर पोखरे में डूब मरूँगी।....... बथुआ -सास खाकर कब तक जीऊँ? किसलिए......... किसके लिए?

13. हरगोबिन संवदिया! .... संवाद पहुँचाने का काम सभी नहीं कर सकते। आदमी भगवान के घर से संवदिया बनकर आता है। संवाद के प्रत्येक ब्द को याद रखना, जिस सुर और स्वर में संवाद सुनाया गया है, ठीक उसी ढंग से जाकर सुनाना सहज काम नहीं। गाँव के लोगों की गलत धारणा है कि निठल्ला, कामचोर और पेटू आदमी ही संवदिया का काम करता है। न आगे नाथ न पीछे पगहा। बिना मज़दूरी लिए ही जो गाँव संवाद पहुँचावे, उसको और क्या कहेंगे? .... औरतों का गुलाम। ज़रा-सी मीठी बोली सुनकर ही नो मे आ जाए, ऐसे मर्द को भी भला मर्द कहेंगे? किंतू गाँव में कौन ऐसा है, जिसके घर की माँ-बहू-बेटी का संवाद हगोबिन ने नहीं पहुँचाया है?

.... लेकिन ऐसा संवाद पहली बार ले जा रहा है वह।

14. बूढ़ी माता बोली, मैं तो बबुआ से कह रही थी कि जाकर दीदी को लिवा लाओ, यहीं रहेगी। वहाँ अब क्या रह गया है? जमीन-जायदाद तो सब चली ही गई। तीनों देवर अब ाहर में जाकर बस गए हैं। कोई खोज-खबर भी नहीं लेते। मेरी बेटी अकेली .... ।' नहीं मायजी। जमीन-जायदाद अभी भी कुछ कम नहीं। जो है, वही बहुत है। टूट भी गई है, है तो आखिर बड़ी हवेली ही। 'सवांग नही है, यह बात ठीक है! मगर, बड़ी बहुरिया का तो सारा गाँव ही परिवार है। हमारे गाँव की लक्ष्मी है बड़ी बहुरिया। .... गाँव की लक्ष्मी गाँव छोड़कर ाहर कैसे जाएगी? यों, देवर लोग हर बार आकर ले जाने की ज़िद करते हैं।'

15. **गांधी, नेहरू और यास्सेर अराफ़ात**

"याद है। मै कोहाट से रावलपिंडी गया था .... मिस्टर जॉन कैसे है?" मैने जॉन साहब का नाम सुन रखा था। वे हमारे ाहर के जाने-माने बैरिस्टर थे, मुस्लिम सज्जन थे। संभवतः गांधी जी उनके यहाँ ठहरे होंगे। फिर सहसा ही गांधी जी के मुँह से निकला-'अरे, मैं उन दिनोंकितना काम कर लेता था। कभी थकता ही नहीं था। .....' हमसे थोड़ा ही पीछे, महादेव देसाई, मोटा सा लट्‌ठ उठाए चले आ रहे थे। कोहाट और रावलपिंडी का ना सुनते ही आगे बढ़ आए और उस दौरे से जुड़ी अपनी यादें सुनाने लगे। और एक बार जो सुनाना ाुरू किया तो आश्रम के फाटक तक सुनाते चले गए। किसी-किसी वक्त गांधी जी, बीच में हँसते हुए कुछ कहते। वे बहुत धीमी आवाज़ मे बोलते थे, लगता अपने आपसे बातें कर रहें हैं, अपने साथ ही विचार विनिमय कर रहें हैं। उन दिनों को स्वयं भी याद करने लगे हैं।

16. उस रोज़ खाने की मेज़ पर बड़े लब्धप्रतिष्ठ लोग बैठे थे - ाेख अब्दुल्ला खान अब्दुल गफ़्फ़ार खान, श्रीमती रामेवरी नेहरू, उनके पति आदि। बातों-बातों में कहीं धर्म की चर्चा चली तो रामेवरी नेहरू और जवाहरलाल जी के बीच बहस-सी छिड़ गई। एक बार तो जवाहरलाल बड़ी गरमजोाी के साथ तनिक तुककर बोले, 'मै भी धर्म के बारे में कुछ जानता हूँ।' रामेवरी चुप रही। ाीघ्र ही जवाहरलाल ठंडे पड़ गए और धीरेसे बोले, आप लोगों को एक किस्सा सुनाता हूँ।' और उन्होंने फ्रांस द्वारा लिखित एक मार्मिक कहानी कह सुनाई।

17. धीरे-धीरे बातों का सिलसिला ाुरू हुआ। हमारा वार्तालाप ज्यादा दूर तक तो जा नहीं सकता था। फ़िलिस्तीन के प्रति साम्राज्यवादी ाक्तियों के अन्यायपूर्ण रवैए की हमारे दो के नेताओं द्वारा की गई भर्त्सना, फ़िलीस्तीन आंदोलन के प्रति विाल स्तर पर हमारे देवासियों की सहानुभूति और समर्थन आदि। दो-एक बार जब मैने गांधी जी और हमारे दो के अन्य नेताओं का जिक्र किया तो अराफ़ात बोले - 'वे आपके ही नहीं, हमारे भी नेता हैं। उतने ही आदरणीय जितने आपके लिए।' बीच बीच में आतिथ्य भी चल रहा था। अराफ़ात हमें फल छील-छीलकर खिला रहे थे। हमारे लिए ाहद की चाय बना रहे थे।

लघुकथाएँ

शेर

18. उल्लू न कहा, 'ोर के मुँह के अंदर स्वर्ग है।' मैने कहा, 'नहीं यह कैसे हो सकता है।' उल्लू बोला, 'नहीं यह सच है और यही निर्वाण का एकमात्र रास्ता है।' और उल्लू भी ोर के मुँह में चला गया। अगले दिन मैने कुत्तों के एक बड़े जुलूस को देखा जो कभी हँसते-गाते थे और कभी विरोध में चिखते-चिल्लाते थे। उनकी बड़ी-बड़ी लाल जीभें निकली हुई थी, पर सब दुम दबाए थे। कुत्तों का यह जुलूस ोर के मुँह की तरफ बढ़ रहा था। मैंने चीखकर कुत्तों

को रोकना चाहा, पर वे नहीं रूके और उन्होंने मेरी बात अनसुनी कर दी। वे सीधे ोर के मुँह में चले गए।

पहचान

19. लोगों ने काफी सस्ती दरों पर होंठ सिलवा लिए और फिर उन्हें पता लगा कि अब वे खा भी नहीं सकते है। लेकिन खाना भी काम करने के लिए बहुत आवयक नहीं माना गया। फिर उन्हें कई तरह की चीज़े कटवाने और जुड़वाने के हुक्म मिलते रहे और वे वैसा ही करवाते रहे। राजा रातदिन प्रगति करता रहा। फिर एक दिन खैराती, रामू और छिद्दू ने सोचा कि लाओ आँखें खोलकर तो देखें। अब तक अपना राज स्वर्ग हो गया होगा। उन तीनों ने आँखें खोलीं तो उन सबको अपने सामने राजा दिखाई दिया। वे एक-दूसरे को न देख सके।

चार हाथ

20. कई साल तक ोध और प्रयोग करने के बाद वैज्ञानिकों ने कहा कि ऐसा, असंभव है कि आदमी के चार हाथ हो जाएँ। मिल मालिक वैज्ञानिकों से नाराज़ हो गया। उसने उन्हें नौकरी से निकाल दिया और अपने आप इस काम को पूरा करने के लिए जुट गया। उसने कटे हुए हाथ मंगवाए और अपने मजदूरों के फिट करवाने चाहे, पर ऐसा नहीं हो सका। फिर उसने मजदूरों के लकड़ी के हाथ लगवाने चाहे, पर उनसे काम नहीं हो सका। फिर उसने लोहे के हाथ फिट करवा दिए, पर मज़दूर मर गए। आखिर एक दिन बात उसकी समझ में आ गई। उसने मजदूरी आधी कर दी और दुगुने मज़दूर नौकर रख लिए।

साझा

21. हाथी ने कहा, 'अपने और पराए की बात मत करो। यह छोटी बात है। हम दोनों ने मिलकर मेहनत की थी हम दोनों उसके स्वामी हैं। आओ, हम मिलकर गन्ने खाएँ। किसान के कुछ कहने से पहले ही हाथी ने बढ़कर अपनी सूँड से एक गन्ना तोड़ लिया और आदमी से कहा, "आओ खाएँ।" गन्ने का एक छोर हाथी की सूँड में था और दूसरा आदमी के मुँह में। गन्ने के साथ-साथ आदमी हाथी के मुँह की तरफ खींचने लगा तो उसने गन्ना छोड़ दिया। हाथी ने कहा, 'देखो हमने एक गन्ना खा लिया।' इसी तरह हाथी और आदमी के बीच साझे की खेती बँट गई।

जहाँ कोई वापसी नहीं

22. इन्हीं गाँवों में एक का नाम है - अमझर - आम के पेड़ों से घिरा गाँव-जहाँ आम झरते हैं। किंतु पिछले दो-तीन वर्षो से पेड़ों पर सूनापन है, न कोई फल पकता है, न कुछ नीचे झरता है। कारण पूछने पर पता चला कि जब से सरकारी घोषणा हुई है कि अमरौली प्रोजेक्ट के अंतर्गत नवागाँव के अनेक गाँव उजाड़ दिए जाएँगे, तब से न जाने कैसे, आम के पेड़ सूखने लगे। आदमी उजड़ेगा, तो पेड़ जीवित रहकर क्या करेंगे? टिहरी गढ़वाल में पेड़ों को बचाने के लिए आदमी के संघर्ष की कहानियाँ सुनी थी, किंतु मनुष्य के विस्थापन के विरोध में पेड़ भी एक साथ मिलकर मूक सत्याग्रह कर सकते है, इसका विचित्र अनुभव सिर्फ सिंगरौली में हुआ।

23. ये लोग आधुनिक भारत के नए 'रणार्थी हैं, जिन्हें औद्योगीकरण के झंझावत ने अपनी घर-जमीन से उखाड़कर हमो के लिए निर्वासित कर दिया है। प्रकति और इतिहास के बीच यह गहरा अंतर है। बाढ़ या भूकंप के कारण लोग अपना घरबार छोड़कर कुछ अरसे के किए जरूर बाहर चले जाते हैं, किंतु आफत टलते ही वे दोबारा अपने जाने-पहचाने परिवे में लौट भी आते हैं किंतु विकास और प्रगति के नाम पर जब इतिहास लोगों को उन्मूलित करता है, तो वे फिर कभी अपने घर वापस नहीं लौट सकते। आधुनिक औद्योगीकरण की आँधी में सिर्फ़ मनुष्य ही नहीं उखड़ता,

बल्कि उसका परिवो और आवास स्थल भी हमो के लिए नष्ट हो जाते हैं।

24. ाायद पैंतीस वर्ष पहले हम कोई दूसरा विकल्प चुन सकते थे, जिसमें मानव सुख की कसौटी भौतिक लिप्सा न होकर जीवन की जरूरतों द्वारा निर्धारित होती। पचिम जिस विकल्प को खो चुका था। भारत में उसकी संभावनाएँ खुली थी, क्योंकि अपनी समस्त कोाािों के बावजूद अंग्रेजी राज हिंदुस्तान को संपूर्ण रूप से अपनी 'सांस्कतिक कॉलोनी' बनाने में असफल रहा था। भारत की सांस्कतिक विरासत यूरोप की तरह म्यूजियम्स और संग्रहालयों में जमा नहीं थी – वह उन रितों से जीवित थी, जो आदमी को उसकी धरती, उसके जंगलों, नदियों – एक ाब्द में कहें – उसके समूचे परिवो के साथ जोड़ते थे। अतीत का समूचा मिथक संसार पोथियों में नहीं, इन रितों की अदय लिपि में मौजूद रहता था।

25. यूरोप में पर्यावरण का प्रन मनुष्य और भूगोल के बीच संतुलन बनाए रखने का है – भारत में यह प्रन मनुष्य और उसकी संस्कति के बीच पारंपरिक संबंध बनाए रखने का हो जाता है। स्वातंत्र्योत्तर भारत की सबसे बड़ी ट्रेजेडी यह नहीं है कि ाासक वर्ग ने औद्योगीकरण का मार्ग चुना, ट्रेजेडी यह रही है कि पचिम की देखादेखी और नकल में योजनाएँ बनाते समय–प्रकति, मनुष्य और संस्कति के बीच का नाजुक संतुलन किस तरह नष्ट होने से बचाया जा सकता है – इस ओर हमारे पचिम – ाििक्षत सत्ताधारियों का ध्यान कभी नहीं गया। हम बिना पचिम को मॉडलबनाए अपनी ार्तो और मर्यादाओं के आधार पर, औद्योगिक विकास का भारतीय स्वरूप निर्धारित कर सकते हैं, कभी इसका ख्याल भी हमारे ाासकों को आया हो, ऐसा नही जान पड़ता।

यथास्मै रोचते विश्वम्

26. यदि साहित्य समाज का दर्पण होता तो संसार को बदलने की बात न उठती। कवि का काम यथार्थ जीवन को प्रतिबिंबित करना ही होता तो वह प्रजापति का दर्जा न पाता। वास्तव में प्रजापति ने जो समाज बनाया है, उससे असंतुष्ट होकर नया समाज बनाना कविता का जन्मसिद्ध अधिकार है। यूनानी विद्वानों के बारे में कहा जाता है कि वे कला को जीवन की नमक समझते थे और अफलातून ने असार संसार को असल की नकल बताकर कला को नकल की नकल कहा था। लेकिन अरस्तू ने ट्रेजेडी के लिए जब कहा था कि उसमें मनुष्य जैसे हैं उससे बढ़कर दिखाए जाते हैं, तब नकल–नवीस कला का खंडन हो गया था और जब वाल्मीकि न अपने चरित्र–नायक के गुण गिनाकर नारद से पूछा कि ऐसा मनुष्य कौन है? तब नारद ने पहने यही कहा–'बहवो दुर्लभाचैव ये त्वया कीर्तिता गुणाः।' दुर्लभ गुणों को एक ही पात्र में दिखाकर आदि कवि ने समाज को दर्पण में प्रतिबिंबत न किया था, वरन् प्रजापति की तरह नयी सष्टि की थी।

27. कवि की यह सष्टि निराधार नहीं होती। हम उसमें अपनी ज्यों की त्यों आकति भले ही न देखें पर ऐसी आकति जरूर देखते हैं जैसी हमें प्रिय है, जैसी आकति हम बनाना चाहते हैं। जिन रेखाओं और रंगों से कवि चित्र बनाता है, वे उसके चारों ओर यथार्थ जीवन में बिखरे होते हैं और चमकीले रंग और सुघर रूप ही नहीं, चित्र के पार्व भाग में काली छायाएँ भी वह यथार्थ जीवन से ही लेता है। राम के साथ वह रावण का चित्र न खींचे तो गुणवान, वीर्यवान, कतज्ञ, सत्यवाक्य, दृढ़व्रत, चरित्रवान, दयावान, विद्वान, समर्थ और प्रियर्दान नायक का चरित्र फीका हो जाए और वास्तव में उसके गुणों के प्रकाािात होने का अवसर ही न आए।

28. कवि अपनी रूचि के अनुसार जब विव को परिवर्तित करता है तो यह भी बताता है कि विव से उसे अंसतोष क्यो है, वह यह भी बताता है कि विव में उसे क्या रूचता है जिसे वह फलता–फूलता देखना चाहता है। उसके चित्र के चमकीले रंग और पार्वभूमि की गहरी काली रेखाएँ – दोनों ही यथार्थ जीवन से उत्पन्न होते हैं। इसलिए

प्रजापति-कवि गंभीर यथार्थवादी होता है, ऐसा यथार्थवादी जिसके पाँव वर्तमान की धरती पर हैं और आँखें भविष्य के क्षितिज पर लगी हुई हैं। इसलिए मनुष्य साहित्य में अपने सुख-दुख की बात ही नहीं सुनता, वह उसमें आाा का स्वर भी सुनता है। साहित्य थके हुए मनुष्य के लिए विश्रांति ही नहीं है, वह उसे आगे बढ़ने के लिए उत्साहित भी करता है।

29. यदि समाज में मानव-संबंध वही होते जो कवि चाहता है, तो ाायद उसे प्रजापति बनने की जरूरत न पड़ती। उसके असंतोष की जड़ ये मानव-संबंध ही हैं। मानव-संबंधों से परे साहित्य नहीं है। कवि जब विधाता पर साहित्य रचता है, तब उसे भी मानव-संबंधों की परिधि में खींच लाता हैं। इन मानव-संबंधों की दीवार से ही हैमलेट की कवि सुलभ सहानुभूति टकराती है और ोक्सपियर एक महान ट्रेजेटी की सष्टि करता है। ऐसे समय जब समाज के बहुसंख्यक लोगों का जीवन इन मानव-संबंधों के पिंजड़े में पंख फड़फड़ाने लगे, सींकचे तोड़कर बाहर उड़ने के लिए आतुर हो उठे, उस समय कवि का प्रजापति रूप और भी स्पष्ट हो उठता है। वह समाज के द्रष्टा और नियामक के मानव-विहग से क्षुब्ध और रुद्धस्वर को वाणी देता है। वह मुक्त गगन के गीत गाकर उस विहग के परों में नयी ाक्ति भर देता है। साहित्य जीवन का प्रतिबिंब रहकर उसे समेटने, संगठित करने और उसे परिवर्तन करने का अजेय अस्त्र बन जाता है।

30. साहित्य का पांचजन्य समर भूमि में उदासीनता का राग नहीं सुनाता। वह मनुष्य को भाग्य के आसरे बैठने और पिंजड़े में पंख फड़फड़ाने की प्रेरणा नहीं देता। इस तरह की प्रेरणा देने वालों के वह पंख कतर देता है। वह कायरों और पराभव-प्रेमियों को ललकारता हुआ एक बार उन्हें भी समरभूमि में उतरने के लिए बुलावा देता है। कहा भी है – “क्लीवानां घाष्र्ट्यजनमुत्साह: ाूरमानिनाम्।” भरत मुनि से लेकर भारतेंदु तक चली आती हुई हमारे साहित्य की यह गौरवाााली परंपरा है। इसके सामने निरूद्देय कला, विकति काम-वासनाएँ, अहंकार और व्यक्तिवाद, निराा और पराजय के ‘सिद्धान्त’ वैसे ही नहीं ठहरते जैसे सूर्य के समाने अंधकार।

31. अभी भी मानव-संबंधो के पिंजड़े में भारतीय जीवन विहग बंदी है। मुक्त गगन में उड़ान भरने के लिए वह व्याकुल है। लेकिन आज भारतीय जनजीवन संगठित प्रहार करके एक के बाद एक पिंजड़े की तीलियाँ तोड़ रहा है। धिक्कार है उन्हें जो तीलियाँ तोड़ने के बदले उन्हें मजबूत कर रहे हैं, जो भारतभूमि में जन्म लेकर और साहित्यकार होने का दंभ करके मानव मुक्ति के गीत गाकर भारतीय जन को पराधीनता और पराभव का पाठ पढ़ाते हैं। ये द्रष्टा नहीं हैं इनकी आँखे अतीत की ओर हैं। ये स्रष्टा नही है, इनके दर्पण में इन्हीं की अंहवादी विकतियाँ दिखाई देती हैं। लेकिन जिन्हें इस दे की धरती से प्यार है, इस धरती से प्यार है, इस धरती पर बसनेवालों से स्नेह है, जो साहित्य की युगांतरकारी भूमिका समझते है, वे आगे बढ़ रहे हैं। उनका साहित्य जनता का रोष और असंतोष प्रकट करता है, उसे आत्मविवास और दढ़ता देता है, उनकी रुचि जनता की रुचि से मेल खाती है और कवि उसे बताता कि इस विव को किसी दिाा में परिवर्तित करना है।

दूसरा देवदास

32. संभव का ध्यान कलावे की तरफ नहीं था। वह गंगा जी की छटा निहार रहा था। तभी एक और पतली नाजुक सी कलाई पुजारी की तरफ बढ़ आई। पुजारी ने उस पर कलावा बाँध दिया। उस हाथ ने थाली में सवा पाँच रूपये रखे। लड़की अब बिल्कुल बराबर में खड़ी, आँख मूँदकर अर्चना कर रही थी। संभव ने यकायक मुड़कर उसकी ओर गौर किया। उसके कपड़े एकदम भीगे हुएं थे, यहाँ तक कि उसके गुलाबी आँचल से संभव के कुर्ते का एक कोना भी गीला हो रहा था। लड़की के लंबे गीले बाल पीठ पर काले चमकीले ाॅल की तरह लग रहे थे। दीपकों के नीम

उजाले में, आकाा और जल की साँवली सांध्य-बेला में, लड़की बेहद सौम्य, लगभग काँस्य प्रतिमा लग रही थी।

33. अभी तक उसके जीवन में कोई लड़की किसी अहम भूमिका में नहीं आई थी। लड़कियाँ या तो क्लास में बाँयी तरफ की बेंचों पर बैठनेवाली एक कतार थी या फिर ताई चाची की लड़कियाँ जिनके साथ खेलते खाते वह बड़ा हुआ था। इस तरह बिल्कुल अकेली, अनजान जगह पर, एक अनाम लड़की का सद्य-स्नान दाा में सामने आना, पुजारी का गलत समझना, आाीर्वाद देना, लड़की का घबराना और चल देना सब मिलाकर एक यही निराली अनुभूति थी जिसमें उसे कुछ सुख और ज्यादा बेचैनी लग रही थी। उसने मन ही मन तय किया कि कल ााम पाँच बजे से ही वह घाट पर जाकर बैठ जाएगा। पौड़ी पर इस तरह बैठेगा कि कल वाले पुजारी के देवालय पर सीधी आँख पड़े।

34. भीड़ लड़के ने दिल्ली मे भी देखी थी, बल्कि रोज़ देखता था। दफ़्तर जाती भीड़, खरीद फरोख्त करती भीड़, तमााा देखती भीड़, सड़क क्रास करती भीड़। लेकिन इस भीड़ का अंदाज़ निराला था। इस भीड़ में एकसूत्रता थी। न यहाँ जाति का महत्त्व था, न भाषा का, महत्व उद्देय का था और वह सबका समान था, जीवन के प्रति कल्याण की कामना। इस भीड़ में दौड़ नहीं थी, अतिक्रमण नहीं था और भी अनोखी बात यह थी कि कोई भी स्नानार्थी किसी सैलानी आनंद में डुबकी नहीं लगा रहा था। बल्कि स्नान से ज्यादा समय ध्यान ले रहा था। दूर जलधारा के बीच एक आदमी सूर्य की ओर उन्मुख हाथ जोड़े खड़ा था। उसके चेहरे पर इतना विभोर, विनीत भाव था मानों उसने अपना सारा अहम त्याग दिया हो, उसके अंदर 'स्व' से जनित कोई कुंठा ोष नहीं है, वह ाुद्ध रूप से चेतनस्वरूप, आत्माराम और निर्मलानंद है।

35. रोपवे के नाम में कोई धर्माडंबर नहीं था। 'उषा ब्रेको सर्विस' की खिड़की के आगे लंबा क्यू था। वहीं मंसा देवी पर चढ़ाने वाली चुनरी और प्रसाद की थैलियाँ बिक रही थी। पाँच, सात और ग्यारह रूपये की। कई बच्चे बिंदी-पाउडर और उसके साँचे बेच रहे थे, तीन-तीन रूपए। उन्होनें अपनी हथेली पर कलात्मक बिंदियाँ बना रखी थी। नमूने की खातिर। उससे पहले संभव ने कभी बिंदी जैसे श्रंगार प्रसाधन पर ध्यान नहीं दिया था। अब यकायक उसे ये बिंदियाँ बहुत आकर्षक लगी। मन ही मन उसने एक बिंदी उस अज्ञातयौवना के माथे पर सजा दी। माँग में तारे भर देने जैसे कई गाने उसे आधे अधूरे याद आकर रह गए। उसका नंबर बहुत जल्द आ गया। अब वह दूसरी कतार में था जहाँ से केबिल कार में बैठना था। सभी काम बड़ी तत्परता से हो रहे थे।

कुटज

36. इन्ही में एक छोटा-सा बहुत ठिगना पेड़ है, पत्ते चौड़े भी हैं। फूलों से तो ऐसा लदा है कि कुछ पुछिए नहीं'। अजीब सी अदा है, मुसकुराता जान पड़ता है। लगता है, पूछ रहा है कि क्या तुम मुझे भी नहीं पहचानते? पहचानता तो हूँ अवय पहचानता हूँ। नाम भूल रहा हूँ। प्राय: भूल जाता हूँ। रूप देखकर प्राय: पहचान जाता हूँ, नाम नहीं याद आता। पर नाम ऐसा है कि जब तक रूप के पहले ही हाजिर न हो जाए तब तक पहचान अधूरी रह जाती है। भारतीय पंडितों का सैकड़ों बार का कचारा-निचोड़ा प्रन सामने आ गया- रूप मुख्य है या नाम? नाम बड़ा है या रूप? पद पहले है या पदार्थ? पदार्थ सामने है, पद नहीं सूझ रहा है। मन व्याकुल हो गया।

37. यह जो मेरे सामने कुटज का लहराता पौधा खड़ा है वह नाम और रूप दोनों में अपनी अपराजेय जीवनी ाक्ति की घोषणा कर रहा है। इसीलिए यह इतना आकर्षक है। नाम है कि हज़ारों वर्ष से जीता चला आ रहा है। कितने नाम आए और गए। दुनिया उनको भूल गई, वे दुनिया को भूल गए। मगर कुटज है कि संस्कत की निरंतर स्फीयमान ाब्दराा में जो जमके बैठा, सो बैठा ही है। और रूप की तो बात ही क्या है। बलिहारी है इस मादक ाोभा की। चारों ओर कुपित यमराज के दारूण नि:वास के समान धधकती लू में भी यह हरा भी है और भरा भी है, दुर्जन के

चित्र से भी अधिक कठोर पाषण की कारा में रुद्ध अज्ञात जलस्रोत से बरबस रस खींचकर सरस बना हुआ है और मूर्ख के मस्तिष्क से भी अधिक सूने गिरि कांतार में भी ऐसा मस्त बना है कि ईर्ष्या होती है। कितनी कठिन जीवनी-ाक्ति! प्राण को पुलकित करता है, जीवनी-ाक्ति ही जीवनी-ाक्ति को प्रेरणा देती है।

38. दुरंत जीवन-ाक्ति हैं। कठिन उपदो है। जीना भी एक कला है। लेकिन कला ही नहीं, तपस्या है। जियो तो प्राण ढाल दो ज़िदंगी में, मन ढाल दो जीवनरस के उपकरणों में! ठीक है। लेकिन क्यों? क्या जीने के लिए जीना ही बड़ी बात है? सारा संसार अपने मतलब के लिए ही तो जी रहा है। याज्ञवल्क्य बहुत बड़े ब्रहमवादी ऋषि थे। उन्होंने अपनी पत्नी को विचित्र भाव से समझाने की कोाि की कि सब कुछ स्वार्थ के लिए है। पुत्र के लिए पुत्र प्रिय नहीं होता, पति के लिए पत्नी प्रिया नहीं होती - सब अपने मतलब के लिए। सुना है, पचिम के हॉब्स और हेल्वोयिस जैसे विचारकों ने भी ऐसी ही बात कही है। सुनके हैरानी होती है। दुनिया में त्याग नहीं है, प्रेम नहीं है, परार्थ नहीं है, परमार्थ नहीं है - है केवल प्रचंड स्वार्थ।

39. कुटज क्या केवल जी रहा है। वह दूसरे के द्वार पर भीख माँगने नहीं जाता, कोई निकट आ गया तो भय के मारे अधमरा नहीं हो जाता, नीति और धर्म का उपदो नहीं देता फिरता, अपनी उन्नति के लिए अफसरों का जूता नहीं चाटता फिरता, दूसरों को अवमानित करने के लिए ग्रहों की खुाामद नहीं करता। आत्मोन्नति हेतु नीलम नहीं धारण करता, अँगूठियो की लड़ी नहीं पहनता, दाँत नहीं निपोरता बगलें नही झाँकता। जीता है ाान से जीता है - काहे वास्ते, किस उद्देय से? कोई नहीं जानता। मगर कुछ बड़ी बात है। स्वार्थ के दायरे से बाहर की बात है। भीष्म पितामह की भाँति अवधूत की भाषा में कह रहा है -'चाहे सुख हो या दुख, प्रिय हो या अप्रिय' जो मिल जाए उसे ाान के साथ, हृदय से बिल्कुल अपराजित होकर, सोल्लास ग्रहण करो। हार मत मानो।

40. दुख और सुख तो मन के विकल्प है। सुखी वह है जिसका मन वा में है, दुखी वह है जिसका मन परवा है। परवा होन का अर्थ है खुाामद करना, दाँत निपोरना, चाटुकारिता, हाँ-हजूरी। जिसका मन अपने वा में नही है वही दूसरे के मन का छंदावर्तन करता है, अपने को छिपाने के लिए मिथ्या आडंबर रचता है, दूसरों को फंसाने के लिए जाल बिछाता है। कुटज इन सब मिथ्याचारों से मुक्त है। वह वाी है। वह वैरागी है। राजा जनक की तरह संसार में रहकर, संपूर्ण भोगों को भोगकर भी उनसे मुक्त है।

'गद्य खण्ड'

प्र.11 पाठ की विषयवस्तु पर आधारित (तीन में से दो प्रश्न) (4+4)=8

प्रेमघन की छाया-स्मृति

1. लेखक ने अपने पिताजी की किन-किन विोषताओं का उल्लेख किया है?
2. बचपन में लेखक के मन में भारतेंदु जी के संबंध में कैसी भावना जगी रहती थी?
3. लेखक का हिंदी साहित्य के प्रति झुकाव किस तरह बढ़ता गया?
4. 'निस्संदेह' ाब्द को लेकर लेखक ने किस प्रसंग का ज़िक्र किया है?
5. 'इस पुरातत्व की दष्टि में प्रेम और कुतूहल का अद्भुत मिश्रण रहता था।' यह कथन किसके संदर्भ में कहा गया है और क्यों?

6. 'भारतेंदु जी के मकान के नीचे का यह हृदय - परिचय बहुत ीघ्र गहरी मैत्री में परिणत हो गया।' कथन का आाय स्पष्ट कीजिए।

7. उपाध्याय बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' की पहली झलक लेखक ने किस प्रकार देखी?

उच्चस्तरीय विचारणीय प्रश्न

8. आपको किस साहित्यकार ने सर्वाधिक प्रभावित किया है, यदि आपको उनसे मिलने का अवसर मिले तो आप उनसे क्या-क्या पूछना चाहेंगे और क्यों?

सुमिरिनी के मनके

9. 'बालक बच गया। उसके बचने की आाा है क्योंकि वह 'लड्डू की पुकार जीवित वक्ष के हरे पत्तों पर मधुर मर्मर था, मरे काठ की अलमारी की सिर दुखानेवाली खड़खड़ाहट नहीं।' कथन के आधार पर बालक की स्वाभाविक प्रवत्तियों का उल्लेख कीजिए।

10. बालक द्वारा इनाम में लड्डू माँगने पर लेखक ने सुख की सांस क्यों भरी?

11. लेखक ने धर्म का रहस्य जान लेने की इच्छा का स्पष्टीकरण 'घड़ी के पुर्जे' के दष्टांत द्वारा किस प्रकार किया है?

12. घड़ी समय का ज्ञान कराती है। क्या धर्म संबंधी मान्यताएं या विचार अपने समय का बोध नहीं कराते?

13. घड़ीसाज़ी का इम्तहान पास करने से लेखक का क्या तात्पर्य है?

14. 'जहाँ धर्म पर कुछ मुट्ठी भर लोगों का एकाधिकार धर्म को संकुचित अर्थ प्रदान करता है वहीं धर्म का आम आदमी से संबंध उसके विकास एवं विस्तार का द्योतक है।' तर्क सहित व्याख्या कीजिए?

15. 'जीवनसाथी' का चुनाव मिट्टी के ढेलों पर छोड़ने के कौन-कौन से फल प्राप्त होते हैं?

16. 'आज का कबूतर अच्छा है कल के मोर से, आज का पैसा अच्छा है कल की मोहर से।' कथन का आाय स्पष्ट कीजिए।

उच्चस्तरीय विचारणीय प्रश्न

17. बालक द्वारा लड्डू माँगे जाने पर पिता एवम् अध्यापक निराा क्यों हो गए?

18. क्या आपके विचार से जीवनसाथी का चुनाव मिट्टी के ढेलों पर छोड़ना उचित है? तर्क सहित उत्तर दें।

19. 'बच्चे की रटने की प्रवति उसके ज्ञान के विकास में बाधक होती है।' अपने विचार प्रकट कीजिए।

20. 'धर्माचार्यों के अतिरिक्त सामान्य व्यक्ति भी अपने स्तर पर धर्म के रहस्य को जानने की कोाि कर सकता है।' टिप्पणी कीजिए।

कच्चा चिट्ठा

21. अपना सोना खोटा तो परखवैया का कौन दोस? से लेखक का क्या तात्पर्य है?

22. पसोवा की प्रसिद्धि का क्या कारण था और लेखक वहाँ क्यों जाना चाहता था?

23. "चांद्रायण व्रत करती हुई बिल्ली के सामने एक चूहा स्वंय आ जाए तो बेचारी को अपना कर्तव्य पालन करना ही

पड़ता है।''लेखक ने यह वाक्य किस संदर्भ में कहा और क्यों?

24. 'मैं। कहीं जाता हूँ तो छूँछे हाथ नहीं लौटता।' से क्या तात्पर्य है? लेखक कौाम्बी लौटते हुए आपने साथ क्या-क्या लाया?

25. "ईमान! ऐसी कोई चीज़ मेरे पास हुई नहीं तो उसके डिगने का कोई सवाल नहीं उठता। यदि होता तो इतना बड़ा संग्रह बिना पैसा-कौड़ी के हो ही नहीं सकता।' के माध्यम से लेखक क्या कहना चाहता है?

26. भद्रमथ ािलालेख की क्षतिपूर्ति कैसे हुई? स्पष्ट कीजिए।

उच्चस्तरीय विचारणीय प्रश्न

27. सार्वजनिक हित के किसी कार्य में यदि ईमानदारी आपके आड़े आती है तो आप क्या करेंगे?

संवदिया

28. बड़ी हवेली से बुलावा आने पर हरगोबिन के मन में किस प्रकार की आांका हुई?

29. बड़ी बहुरिया अपने मायके संदो क्यों भेजना चाहती थी?

30. हरगोबिन चाहकर भी बहुरिया का संवाद क्यों नहीं सुना सका?

31. संवदिया की क्या विोषताएं है और गाँववालो के मन में संवदिया की क्या अवधारणा है?

32. गाड़ी पर सवार होने के बाद संवदिया के मन में काँटे की चुभन का अनुभव क्यों हो रहा था। उससे छुटकारा पाने के लिए उसने क्या उपाय सोचा?

33. जलालगढ़ पहुँचने के बाद बड़ी बहुरिया के सामने हरगोबिन ने क्या संकल्प लिया?

34. 'संवदिया डटकर खाता है और अफर कर सोता है लेकिन आज उसे नींद नहीं आ रही थी' इस आधार पर हरगोबिन के मानसिक द्वन्द्व को स्पष्ट कीजिए।

उच्चस्तरीय विचारणीय प्रश्न

35. बड़ी बहुरिया के मायके में जलपान करते समय हरगोबिन के मन में क्या विचार आ रहे थे?

गांधी, नेहरू और यास्सेर अराफात

36. लेखक का गांधी जी के साथ चलने का पहला अनुभव किस प्रकार का रहा?

37. कमीर के लोगों ने नेहरू जी का स्वागत किस प्रकार किया?

38. अराफात के आतिथ्य प्रेम को दाने वाली किसी घटना का वर्णन कीजिए।

39. अराफात ने ऐसा क्यों बोला कि 'गांधी जी आपके ही नहीं हमारे भी नेता हैं। उतने ही आदरणीय जितने आपके लिए।' स्पष्ट कीजिए।

उच्चस्तरीय विचारणीय प्रश्न

40. रोगी बालक के प्रति व्यवहार से गांधी जी की कौन सी चारित्रिक विोषताएँ प्रकट होती हैं?

लघुकथाएँ

41. 'ोर' कहानी के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि – 'प्रमाण से अधिक महत्वपूर्ण विवास है।'

42. ोर के मुँह और रोजगार के दफ्तर के बीच क्या अंतर है?

43. खैराती, रामू और छिदू ने जब आँखें खोली तो उन्हें सामने राजा ही क्यों दिखाई दिया?

उच्चस्तरीय विचारणीय प्रश्न

44. यदि आप मिल मालिक होते तो उत्पादन बढ़ाने हेतु क्या करते?

45. 'साझा' लघुकथा किस पर व्यंग्य करती है?

46. ोर कहानी में हमारी व्यवस्था पर जो व्यंग्य किया गया है, उसे स्पष्ट कीजिए।

जहाँ कोई वापसी नहीं

47. आधुनिक भारत के नए ारणार्थी किन्हें कहा गया है?

48. प्रकति के कारण विस्थापन और औद्योगीकरण के कारण विस्थापन में क्या अंतर है?

49. लेखक के अनुसार स्वातंत्र्योत्तर भारत की सबसे बड़ी ट्रैजेडी क्या है?

50. प्रकति, मनुष्य और संस्कति के मध्य अटूट संबंध है। स्पष्ट कीजिए।

51. औद्योगीकरण ने पर्यावरण को खतरे में डाल दिया है, कैसे?

उच्चस्तरीय विचारणीय प्रश्नः

52. प्रकति, मनुष्य और संस्कति के मध्य अटूट संबंध है। लेखक ने ऐसा क्यों माना है तथा इस विषय पर आपके विचार क्या है?

यथास्मै रोचते विश्वम्

53. "कवि के चित्र चमकीले रंग और पार्व भूमि की गहरी काली रेखाएँ – दोनों ही यथार्थ जीवन से उत्पन्न होते है।" आाय स्पष्ट कीजिए।

54. लेखक ने कवि की तुलना प्रजापति से क्यों की है?

55. साहित्य समाज का दर्पण है। कैसे?

56. "साहित्य थके हुए मनुष्य के लिए विश्रांति ही नहीं है, वह उसे आगे बढ़ाने के लिए उत्साहित भी करता है।" स्पष्ट कीजिए।

57. 'मानव संबधों से परे साहित्य नहीं है' कथन की समीक्षा कीजिए।

58. पंद्रहवी – सोलहवीं सदी में हिन्दी – साहित्य ने मानव जीवन के विकास में क्या भूमिका निभाई?

59. साहित्य के 'पांचजन्य' से लेखक का क्या तात्पर्य है? साहित्य का पांचजन्य मनुष्य को क्या प्रेरणा देता है?

60. 'साहित्यकार के लिए स्रष्ट और द्रष्टा होना अत्यंत अनिवार्य है' – स्पष्ट कीजिए।

उच्चस्तरीय विचारणीय प्रश्न

61. 'प्रजापति - कवि गंभीर यर्थाथवादी होता है, ऐसा यर्थाथवादी जिसके पाँव वर्तमान की धरती पर हैं और आँखें भविष्य के क्षितिज पर लगी हुई हैं।' लेखक ने ऐसा क्यों कहा है?

दूसरा देवदास

62. 'दूसरा देवदास' में संभव की लड़की से पहली मुलाकात का वर्णन कीजिए।

63. 'गंगापुत्र के लिए गंगा मैया ही जीविका और जीवन है' - कथन के आधार पर गंगा पुत्रों के जीवन-परिवो पर प्रकाा डालिए।

64. 'मनोकामना की गाँठ भी अद्‌भुत, अनूठी है, इधर बांधों उधर लग जाती है।' इस कथन के आधार पर पारो की मनोदाा का वर्णन कीजिए।

65. दूसरा देवदास कहानी के ाीर्षक की सार्थकता स्पष्ट कीजिए।

उच्चस्तरीय विचारणीय प्रश्न

66. 'दूसरा देवदास' में संभव की लड़की से पहली मुलाकात का वर्णन कीजिए।

67. **कुटज** को गाढ़े के साथी क्यों कहा गया है?

68. 'नाम' क्यों बड़ा है? लेखक के विचारानुसार उत्तर दीजिए।

69. कुटज क्या केवल जी रहा है? लेखक ने यह प्रन उठाकर किन मानवीय कमजोरियों पर टिप्पणी की है?

70. कुटज किस प्रकार अपनी अपराजेय ाक्ति की घोषणा करता है?

71. दुःख और सुख मन के विकल्प है का आाय स्पष्ट कीजिए।

72. कुटज हमें क्या संदो देता है?

73. लेखक क्यों मानता है कि स्वार्थ से बढ़कर जिजीविषा से भी प्रचंड कोई न कोई ाक्ति अवय है?

उच्चस्तरीय विचारणीय प्रश्न

74. लेखक ने कुटज ाब्द की व्याख्या किस-किस रूप में की है? कुट, कुटज और कुटनी ाब्दों का विलेषण कर उनमें आपसी संबंध स्थापित कीजिए।

अंक: 6

'कवि/ लेखक साहित्यिक परिचय'

प्रश्न12. कवि/ लेखक साहित्यिक परिचय

निम्नलिखित कवियों/ लेखकों के जीवन और रचनाओं के संक्षिप्त परिचय देते हुए उनकी प्रमुख साहित्यिक विोषताओं का उल्लेख कीजिए :

क. हजारी प्रसाद द्विवेदी अथवा असगर वज़ाहत

ख. रामचन्द्र ुक्ल अथवा ममता कालिया

ग. पंडित चंद्रधर ार्मा गुलेरी अथवा निर्मल वर्मा

घ. रामविलास ार्मा अथवा ब्रजमोहन व्यास

ङ फणीवरनाथ 'रेणु' अथवा भीष्म साहनी

अथवा

क. जयांकर प्रसाद अथवा तुलसीदास

ख. सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेय अथवा मलिक मुहम्मद जायसी

ग. केदारनाथ सिंह अथवा विद्यापति

घ. विष्णु खरे अथवा घनानंद

ङ रघुवीर सहाय अथवा कोवदास

प्र.13. अतंराल भाग 2 (पूरक पाठ्य पुस्तक) विषयवस्तु पर आधारित लघूत्तरात्मक प्रश्न

पाठ 1. सूरदास की झोपड़ी - प्रेमचन्द (लघूत्तरात्मक प्रश्न) (3+3+3)=9

1. 'चूल्हा ठंडा किया होता, तो दुमनों का कलेजा कैसे ठंडा होता? इस कथन के आधार पर सूरदास की मन: स्थिति का वर्णन कीजिए।
2. जगधर के मन में किस तरह का ईर्ष्या भाव जगा और क्यो?
3. सूरदास जगधर से अपनी आर्थिक हानि को गुप्त क्यों रखना चाहता था?
4. भैरो ने सूरदास की झोपड़ी क्यों जलाई?

उच्चस्तरीय विचारणीय प्रश्न

5. सूरदास की झोंपड़ी से लगने वाली आग की तुलना किससे की गई है, और क्यों?
6. सूरदास की झोपड़ी में आग किसने लगाई यह जानने के लिए जगधर क्यों बेचैन था?
7. सच्चे खिलाड़ियों के विषय में लेखक के क्या विचार है?
8. सुभागी के प्रति किन विचारों से मर्माहत होकर सूरदास रोने लगा?

पाठ 2. आरोहण - संजीव

9. पत्थर की जाति से लेखक का क्या आाय है ? उसके विभिन्न प्रकारों के बारे में लिखिए।
10. बूढ़े तिरलोक सिंह को पहाड़ पर चढ़ना जैसी नौकरी की बात सुनकर अजीब क्यों लगा ?
11. रूप सिंह पहाड़ पर चढ़ना सीखने के बावजूद भूपसिंह के सामने बौना क्यों पड़ गया था?

उच्चस्तरीय विचारणीय प्रश्न

12. रूप सिंह घर लौटते हुए किस मनः स्थिति में था और क्यों ?
13. 'राम और सीता की जोड़ी में मैं सिर्फ लक्ष्मण था'। इस कथन की पीछे रूप सिंह की कौन सी पीड़ा छिपी थी ?
14. 'आरोहण' कहानी का उद्देय बताइए।
15. पर्वतारोहण पर्वतीय प्रदो के लोगों की आजीविका का साधन है। 'आरोहण' पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।
16. रूप ने भूप दादा को पहाड़ से क्यों धकेला था ?
17. पहाड़ पर चढ़ते समय महीप ने ोखर एवं रूप सिंह को बात करने के लिए क्यों मना किया ?

पाठ 3. बिस्कोहर की माटी - विश्वनाथ त्रिपाठी

18. कोइयाँ किसे कहते हैं ? उसकी विोषताएँ बताइए।
19. बिसनाथ पर क्या अत्याचार हो गया ?
20. गर्मी और लू से बचने के उपायों का विवरण दीजिए। क्या आप भी उन उपायों से परिचित हैं ?
21. लेखक बिसनाथ ने किन आधारों पर अपनी माँ की तुलना बत्तख से की है ?
22. बिस्कोहर में हुई बरसात को जो वर्णन बिसनाथ ने किया है उसे अपने ाब्दों में लिखिए।
23. ऐसी कौन सी स्मति है जिसके साथ लेखक को मत्यु का बोध अजीब तौर से जुड़ा मिलता है ?

उच्चस्तरीय विचारणीय प्रश्न

24. बिस्कोहर गाँव में साँपों की प्रजातियाँ कौन-सी थी ? उनके विषय में सोचकर लेखक को कैसा लगता था ?
25. 'बच्चा दूध ही नहीं चाँदनी भी पी रहा है, चाँदनी भी माँ जैसी ही पुलक-स्नेह-ममता दे रही है।' आाय स्पष्ट कीजिए।
26. कमल का प्रयोग किस-किस रूप में किया जाता है ?
27. करेसिन कौन थी ? उसके साथ छत पर लेटकर तीन वर्ष के बिसनाथ को कैसा अनुभव होता था ?

पाठ 4. अपना मालवा - खाऊ-उजाड़ू सभ्यता में-प्रभाषजोशी

28. मालवा में जब सब जगह बरसात की झड़ी लगी रहती है, तब मालवा के जनजीवन पर इसका क्या असर पड़ता है?
29. अब मालवा में वैसा पानी नहीं गिरता जैसा गिरा करता था। उसके क्या कारण हैं ?
30. 'मालवा में विक्रमादित्य और भोज और मुंज रिनेसां के बहुत पहले हो गए।' पानी के रखरखाव के लिए उन्होंनें क्या प्रबंध किए ?

31. 'अपना मालवा' पाठ के आधार पर नर्मदा के विभिन्न रूपों का वर्णन कीजिए।

32. 'नई दुनिया' के रिकार्ड से मालवा के बारे में क्या पता चलता है ?

33. 'अमेरिका की घोषणा है कि वह अपनी खाऊ-उजाड़ू जीवन पद्धति पर कोई समझौता नहीं करेगा।' इस घोषणा पर अपनी टिप्पणी दीजिए।

34. नवरात्र की पहली सुबह को लेखक ने किस प्रकार व्यक्त किया है ?

उच्चस्तरीय विचारणीय प्रश्न

35. लेखक ने शिप्रा नदी को कालिदास की शिप्रा क्यों कहा है ? उसकी क्या विशेषता है ?

36. बचपन में पितपक्ष और नवरात्र पर लेखक ने पानी को किस रूप में देखा था ?

प्र.13 अंतराल भाग-2 (निबंधात्मक प्रश्न)

निर्धारित अंक 6

पाठ - 1 सूरदास की झोंपड़ी - प्रेमचंद

1. 'यह फूस की राख न थी, उसकी अभिलाषाओं की राख थी।' संदर्भ सहित विवेचना कीजिए।

2. 'सूरदास उठ खड़ा हुआ और विजय-गर्व की तरंग में राख के ढेर को दोनों हाथों से उड़ाने लगा।' इस कथन के संदर्भ में सूरदास की मनोदशा का वर्णन कीजिए।

3. 'तो हम सौ लाख बार बनाएंगें।' इस कथन के संदर्भ में सूरदास के चरित्र की विवेचना कीजिए।

उच्चस्तरीय विचारणीय प्रश्न

4. झोंपड़ी की राख ठंडी होने पर सूरदास ने राख में क्या टटोला ? उसका किसी से प्रतिशोध न लेना क्या इंगित करता है? पाठ के आधार पर समझाइए।

5. जगधर द्वारा पैसे लौटाने की बात करने पर भैरों ने क्या-क्या तर्क दिए ? सूरदास के विषय में उसकी क्या विचारधारा थी ?

6. 'अब चाहे वह मुझे मारे या निकाले पर रहूंगी उसी के घर' कथन के संदर्भ में सुभागी के मन में उठी भावनाओं का वर्णन कीजिए।

पाठ -2. आरोहण - संजीव

7. यूँ तो प्राय: लोग घर छोड़कर कहीं नहीं जाते हैं, परदेश जाते हैं किन्तु लौटते समय रूप सिंह को एक अजीब किस्म की लाज, अपनत्व और झिझक क्यों घेरने लगी ?

8. शैला और भूप ने मिलकर किस तरह पहाड़ पर अपनी मेहनत से नई जिंदगी की कहानी लिखी ?

9. सैलानी (िखर और रूप सिंह) घोड़े पर चलते हुए उस लड़के के रोज़गार के बारे में सोच रहे थे जिसने उनको घोड़े पर सवार कर रखा था और स्वयं पैदल चल रहा था। क्या आप भी बाल मजदूरों के बारे में सोचते हैं ?

10. पहाड़ों की चढ़ाई में भूप दादा का कोई जवाब नहीं। उनके चरित्र की विोषताएं बताइए।

11. इस कहानी को पढ़कर आपके मन में पहाड़ों पर स्त्री की स्थिति की क्या छवि बनती है ? उस पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।

उच्चस्तरीय विचारणीय प्रश्न

12. 'पहाड़ों पर जन जीवन अत्यंत कठिन होता है' पाठ के आधार पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।

13. चिड़िया और गीध की कहानी से मिली सीख को भूपसिंह ने अपने जीवन में कैसे उतारा ?

14. पर्वतीय प्रदेोों में भूस्खलन व पहाड़ों का खिसकना लोगों के जीवन को नष्ट कर देता है। 'आरोहण' कहानी के आधार पर विवेचना कीजिए।

पाठ 3. बिस्कोहर की माटी-विश्वनाथ त्रिपाठी

15. 'बच्चे का माँ का दूध पीना सिर्फ दूध पीना नहीं, माँ से बच्चे के सारे संबंधों का जीवन-चरित्र होता है' - टिप्पणी कीजिए।

16. 'फूल केवल गंध ही नहीं देते दवा भी करते हैं; कैसे ?

17. 'प्रकति सजीव नारी बन गई' - इस कथन के संदर्भ में लेखक की प्रकति, नारी और सौंदर्य संबंधी मान्यताएँ स्पष्ट कीजिए।

उच्चस्तरीय विचारणीय प्रश्न

18. वर्तमान समय - समाज में माताएं नवजात ाि को दूध नहीं पिलाना चाहती। बच्चे के लिए माँ का दूध क्यों आवयक है ? पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

19. लेखक ने प्राकतिक सौन्दर्य और प्राकतिक आपदाओं का साथ-साथ वर्णन किया है। इस विरोधाभास से लेखक का क्या उद्देश्य है ?

20. गाँव ाहर की तरह सुविधायुक्त नहीं होते बल्कि प्रकति पर अधिक निर्भर रहते हैं। पाठ के आधार पर ग्रामीण जीवन-ौली का वर्णन कीजिए।

पाठ-4. अपना मालवा : खाऊ उजाड़ू सभ्यता में - प्रभाष जोशी

21. 'हमारी आज की सभ्यता इन नदियों को अपने गंदे पानी के नाले बना रही है।' क्यों और कैसे ?

22. हमारे आज के इंजीनियर ऐसा क्यों समझते हैं कि वे पानी का प्रबंध जानते हैं और पहले जमाने के लोग कुछ नहीं जानते थे ?

23. लेखक को क्यों लगता है कि 'हम जिसे विकास की औद्योगिक सभ्यता कहते हैं वह उजाड़ की अपसभ्यता है?' आप

क्या मानते हैं ?

24. धरती का वातावरण गरम क्यों हो रहा है ? इसमें यूरोप और अमेरिका की क्या भूमिका है ? टिप्पणी कीजिए।

उच्चस्तरीय विचारणीय प्रश्न

25. 'अपना मालवा' पाठ का उद्देय स्पष्ट करें।

26. मालवा धरती गहन गंभीर,

    डग-डग रोटी, पग-पग नीर।

    वर्तमान मालवा के संबंध में उपरोक्त कहावत कहाँ तक सार्थक सिद्ध होती है।

27. लेखक की पर्यावरण संबंधी चिंता सिर्फ मालवा तक सीमित न होकर सार्वभौमिक हो गई है - स्पष्ट कीजिए।

28. आधुनिक औद्योगिक विकास हमें अपनी जड़-जमीन से अलग कर रहा है। पर्यावरण को विनाा से बचाने के लिए आपके विचार से क्या-क्या प्रयास किए जा सकते हैं ?

प्रतिदर्श प्रश्न पत्र -1

हिन्दी (वैकल्पिक)

कक्षा- 12

समय : 3घंटे **अंक:100**

1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यान पूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

दे-प्रेम, प्रेम का वह अं है जिसका आलंबन है सारा दे उसमें व्याप्त प्रत्येक कण अर्थात् मनुष्य, पु, पक्षी, नदी नाले, वन पर्वत इत्यादि। यह एक सहचर्यगत प्रेम है अर्थात् जिनके सान्निध्य का हमें अभ्यास पड़ जाता है उनके प्रति लोभ या राग हो जाता है। कोई भी व्यक्ति सच्चा दे प्रेमी कहला सकने की तभी सामर्थ्य रखता है जब वह दे के प्रत्येक मनुष्य, पु, पक्षी, लता, गुल्म, पेड़, पत्ते, वन, पर्वत, नदी, निर्झर आदि सभी को अपनत्व की भावना से देखेगा। इन सबकी सुधि करके विदे में भी आँसु बहाएगा। जो व्यक्ति राष्ट्र के मूलभूत जीवन को भी नही जानता और उसके बाद भी दे प्रेमी होने का होने का दावा करे तो यह उसकी भूल है। जब तुम किसी के सुख-दुख के भागीदार ही नहीं बने तो उसे सुखी देखने के स्वप्न तुम कैसे कल्पित करोगे? उससे अलग रहकर अपनी बोली में तुम उसके हित की बात करो पर उसमें प्रेम के माधुर्य जैसे भाव नही होंगे। प्रेम को तराजू में तोला नहीं जा सकता ये भाव तो मनुष्य के अंत: करण से जुड़े हुए हैं।

परिचय से प्रेम की उत्पत्ति होती है। यदि आप समझते हैं कि आपके अंत: करण में राष्ट्र-प्रेम के भाव उजागर हो तो आप राष्ट्र के स्वरुप से परिचित हो जाइए और अपने को उस स्वरूप में समा जाने दीजिए तभी आपके अंत: स्थल में इस इच्छा का सचमुच उदय होगा कि वह हमसे कभी न छूटे। उसके धनधान्य की वद्धि हो। सब सुखी हों।

वास्तव में आजकल दे के प्रति परिचय तथाकथित बाबुओं की लज्जा का विषय हो गया और दे-प्रेम मात्र दिखावा रह गया है। वे दे के स्वरुप से अनजान बने रहने में अपनी ाान समझते है। इसी संदर्भ में अपना मत प्रस्तुत करते हुए लेखक ने अतीव सरल ाब्दों में व्यंग्यात्मक ौली के द्वारा उदाहरण प्रस्तुत किया है। एक बार उनके लखनवी मित्र ने महुए का नाम लेने तक को देहाती होने का लक्षण मान लिया था। लेखक को ध्यान आया कि यह वही लखनऊ है जहाँ कभी यह पूछने वाले भी थे कि गेहूँ का पेड़ आम के पेड़ से बड़ा होता है या छोटा।

क. दे प्रेम का आलंबन क्या है? 2

ख. लेखक ने दे-प्रेम को सहचर्यगत प्रेम क्यों कहा है? 2

ग. व्यक्ति के लिए राष्ट्र के मूलभूत जीवन को जानना क्यों आवयक है? 2

घ. राष्ट्र के संदर्भ में अंत: करण के भाव से क्या अभिप्राय है? 2

ङ लेखक अपने मित्र के उदाहरण द्वारा क्या स्पष्ट करना चाहता है? 2

च. गद्यां से ऐसे ाब्द छाँटिए जिनका अर्थ क्रमा: 'आधार' और 'अत्यधिक' हो। 1

छ. प्रत्यय अलग कीजिए - 'परिचित', 'अपनत्व'। 1

ज. 'माधुर्य' एवं 'उदय' के विलोम ाब्द लिखिए। 1

झ. 'राष्ट्र-प्रेम' पद का विग्रह करके समास का नाम लिखिए। 1

ा. प्रस्तुत गद्यां के लिए एक उपयुक्त ाीर्षक दीजिए। 1

2. प्रस्तुत काव्यां को ध्यानर्पूवक पढ़कर पूछे गए प्रनों के उत्तर दीजिए: (1x5)=5

ओ मेरे आर्दावादी मन,
ओ मेरे सिद्धांतवादी मन,
अब तक क्या किया?
जीवन क्या जिया।।
लोक-हित-पिता को घर से निकाल दिया,
जन-मन-करूणा-सी माँ को हंकाल दिया,
स्वार्थो के टेरियार कुत्तों को पाल लिया,
भावना के कर्त्तव्य त्याग दिए,
हृदय के मंतव्य-मार डाले!
बुद्धि का भाल ही फोड़ दिया,
तर्को के हाथ उखाड़ दिए,
जम गए जाम हुए, फँस गए,
अपने ही कीचड़ में धँस गए।।
विवेक बघार डाला स्वार्थें के तेल में
आर्दा खा गए।

क. उपरोक्त काव्यां का उचित ाीर्षक बताइए।

ख. कवि ने मन के लिए कौन से विोषण प्रयोग किए है?

ग. 'टेरियार कुत्तों 'का प्रयोग किसके लिए किया गया है?

घ. 'अपने ही कीचड़ में धंस गए' आाय स्पष्ट कीजिए।

ड. बुद्धि और विवेक का क्या किया गया?

अथवा

वह आता -
दो टूक कलेजे के करता, पछताता

पथ पर आता।

पेट पीठ दोनों मिलकर हैं एक,

चल रहा लकुटिया टेक

मुट्ठी-भर दाने को-भूख मिटाने को,

मुँह फटी पुरानी झोली को फैलाता-

दो टूक कलेजे के करता पछताता पथ पर आता।

साथ दो बच्चे भी हैं सदा हाथ फैलाए,

बाएँ से वे मलते हुए पेट को चलते,

और दाहिना दया-दष्टि पाने की ओर बढ़ाए।

भूख से सूख ओंठ जब जाते

दाता-भाग्य-विधाता से क्या पाते?

घूँट आँसुओं के पीकर रह जाते।

चाट रहे जूठी पत्तल वे सभी सड़क पर खडे हुए,

और झपट लेने को उनसे कुत्ते भी हैं अड़े हुए।

क. भिक्षुक की दयनीय अवस्था का चित्रण कीजिए।

ख. दोनों बच्चों की हालत कैसी थी?

ग. कुत्तों का वर्णन किस संदर्भ में हुआ है?

घ. अनुप्रास अलंकार का एक उदाहरण छाँटकर लिखिए।

ङ उपरोक्त काव्यांा का उपयुक्त ाीर्षक बताइए।

खंड-'ख'

3. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबंध लिखिए: 10

क. वन संरक्षण

ख. दूरर्दान एवं युवा मानसिकता

ग. राजनीति व अपराधीकरण

घ. 'जब आवै संतोष धन, सब धन धूरि समान'

4. दिल्ली में परिवहन संबधी कठिनाइयों का उल्लेख करते हुए किसी दैनिक समाचार पत्र के संपादक को पत्र लिखिए। 5

अथवा

मनीऑर्डर खो जाने की ािकायत करते हुए नई दिल्ली के डाकपाल को पत्र लिखिए।

5. भारत में इंटरनेट पत्रकारिता के विकास पर टिप्पणी लिखिए। 5

अथवा

दूरर्दान (टी.वी) पर प्रसारित होने वाली खबरों के विभिन्न चरण कौन-कौन से हैं?

6. निम्नलिखित प्रनों के उत्तर एक या दो वाक्यों में दीजिए। (1x5)=5

क. मुद्रित माध्यम की सबसे बड़ी विोषता क्या है?

ख. भारत में नियमित अपडेट दो साइटों के नाम बताइए।

ग. विोष लेखन किस ौली में लिखा जाता है?

घ. सिर्फ इन्टरनेट पर ही उपलब्ध अखबार कौन सा है?

ङ पत्रकारिता के विकास मे कौन सा मूल भाव सक्रिय रहता है?

खंड-'ग'

7. निम्नलिखित काव्यांा की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 8

यह धीरे-धीरे होना
धीरे-धीरे होने की सामूहिक लय
दढ़ता से बाँधे है समूचे ाहर को
इस तरह कि कुछ भी गिरता नहीं है
कि हिलता नहीं है कुछ भी
कि जो चीज जहाँ थी
वही पर रखी है
कि गंगा वही है
कि वहीं पर बँधी है नाव
कि वही पर रखी है तुलसीदास की खड़ाऊँ
सैंकड़ों बरस से।

अथवा

सिंधु तरयो उनको बनरा तुम पै धनुरेख गई न तरी।

बाँधोई बाँधत सो न बन्यो उन बारिधि बाँधिकै बाट करी।

श्री रघुनाथ-प्रताप की बात तुम्हैं दसकंठ न जानि परी।

तेलनि तूलनि पूँछि जरी न जरी, जरी लंक जराइ-जरी।।

8. निम्नलिखित प्रनों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिए: (3+3)=6

क. देवसेना की हार या निराा के क्या कारण हैं?

ख. कवि घनानंद मौन होकर प्रेमिका के कौन से प्रण पालन को देखना चाहता है?

ग. माघ के महीने में विरहिणी नायिका को क्या अनुभूति होती है?

9. निम्नलिखित में से किन्हीं दो काव्याों में निहित काव्य सौंदर्य स्पष्ट कीजिए: (3+3)=6

क. राघौ एक बार फिरि आवौ।

ए बर बाजि बिलोकि आपने बहुरो बनहि सिधावौ।।

जे पय प्याइ पोखि कर-पंकज वार वार चुचुकारे।

क्यों जीवहि, मेरे राम लाडिले! ते अब निपट बिसारे।।

ख. कुसुमित कानन हेरि कमलमुखि,

मूदि रहए दु नयान।

कोकिल-कलरव, मधुकर-धुनि सुनि,

कर देइ झाँपइ कान।।

ग. यह सदा-द्रवित, चिर-जागरूक, अनुरक्त-नेत्र,

उल्लंब-बाहु, यह चिर-अखंड अपनापा।

जिज्ञासु, प्रबुद्ध, सदा

10. निम्नलिखित गद्याां की सप्रसंग व्याख्या कीजिए: 6

कवि की यह सष्टि निराधार नहीं होती। हम उसमें अपनी ज्यों की त्यों आकति भले ही न देखे पर ऐसी आकति ज़रूर देखते हैं जैसी हमें प्रिय है, जैसी आकति हम बनाना चाहते हैं। जिन रेखाओं और रंगों से कवि चित्र बनाता है, वे उसके चारों ओर यथार्थ जीवन में बिखरे होते है और चमकीले रंग और सुंदर रूप ही नही, चित्र के पार्व भाग में काली छायाएँ भी वह यथार्थ जीवन से ही लेता है। राम के साथ वह रावण का चित्र न खींचे तो गुणवान, वीर्यवान, कतज्ञ, सत्यवाक्य, दढ़व्रत, चरित्रवान, दयावान, विद्वान, समर्थ और प्रियर्दान नायक का चरित्र फीका हो जाए और वास्तव में उसके गुणों के प्रकााित होने का अवसर ही न आए।

अथवा

ये लोग आधुनिक भारत के नए 'रणार्थी' हैं, जिन्हें औद्योगिकरण के झंझावात ने अपनी घर-जमीन से उखाड़कर हमेाा के लिए निर्वासित कर दिया है। प्रकति और इतिहास के बीच यह गहरा अंतर है। बाढ़ या भूकंप के कारण

लोग अपना घरबार छोड़कर कुछ अरसे के लिए जरूर बाहर चले जाते है, किंतु आफत टलते ही वे दोबारा अपने जाने-पहचाने परिवो में लौट भी आते हैं। किंतु विकास और प्रगति के नाम पर जब इतिहास लोगों को उन्मूलित करता है, तो वे फिर कभी अपने घर वापस नहीं लौट सकते।

11. निम्नलिखित प्रनों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिए: (4+4) 8

क. यूरोप और भारत की पर्यावरण संबधी चिंताएँ किस प्रकार भिन्न हैं?

ख. भद्रमथ ाािलालेख की क्षतिपूर्ति कैसे हुई ? स्पष्ट कीजिए।

ग. बचपन में लेखक के मन में भारतेदु जी के संबंध में कैसी भावना जगी रहती थी?

12. कवि तुलसीदास अथवा सूर्यकांत त्रिपाठी निराला के जीवन, रचनाओं का संक्षिप्त परिचय देते हुए उनकी काव्यगत विोषताओं पर प्रकाा डालिए। 6

अथवा

रामचंद्र ाुक्ल अथवा हजारी प्रसाद द्विवेदी के जीवन, रचनाओं का संक्षिप्त परिचय देते हुए उनकी भाषा ाैली पर प्रकाा डालिए।

13. निम्नलिखित प्रनों में से किन्हीं तीन के उत्तर लिखिए : (3+3+3)=9

क. बूढ़े तिरलोक सिंह को पहाड़ पर चढ़ना जैसी नौकरी सुनकर अजीब क्यों लगा?

ख. सूरदास ने अपनी किन-किन आकांक्षाओं की पूर्ति के लिए धन एकत्रित किया?

ग. लंबे समय बाद लेखक को मालवा में क्या परिवर्तन दिखाई दिए।

घ. 'फूल गंध ही नही देते अपितु दवा भी करते हैं', कैसे?

14. 'बच्चे का माँ का दूध पीना सिर्फ दूध पीना नहीं, माँ से बच्चे के सारे संबंधों का जीवन-चरित होता है' टिप्पणी कीजिए। 6

अथवा

'तो हम सौ लाख बार बनाएँगे' इस कथन के संदर्भ में सूरदास के चरित्र का विवेचन कीजिए।

प्रतिदर्श प्रश्न पत्र- 1

अंक योजना

कक्षा -12

हिन्दी ऐच्छिक

समय : 3 घंटे **अंक : 100**

1. अपठित गद्यां बोध **कुल अंक : 15**

क. सारा दे-मनुष्य, पा, पक्षी, नदी, नाले, वन, पर्वत इत्यादि। 2

ख. सान्निध्य में रहने से लोभ सा राग हो जाता है। 2

ग. दे-प्रेमी कहलाने के लिए। 2

घ. राष्ट्र के स्वरूप में समा जाना। 2

ड. दे के प्रति परिचय लज्जा का विषय, दे-प्रेम मात्र दिखावा। 2

च. आलंबन, अतीव 1

छ. इत, त्व

ज. कटुता, अस्त 1

झ. राष्ट्र के लिए प्रेम, तत्पुरुष समास 2

.ा दे-प्रेम/ अन्य कोई सार्थक 2

कुल अंक : 5

2. क. 'ओ मेरे आर्दावादी मन/ सिद्धांतवादी मन। 1

ख. आर्दावादी, सिद्धधांतवादी। 1

ग. स्वार्थों के लिए। 1

घ. अपने स्वार्थ में पूर्णत: लिप्त। 1

ङ बुद्धि का मस्तक फोड़ डाला, विवेक को स्वार्थ के तेल में बघार दिया अर्थात बुद्धि व विवेक नष्ट हो गए। 1

अथवा

क. भूख से पेट और पीठ मिले हुए, फटी झोली भीख के लिए फैलाते हुए। 1

ख. एक हाथ से पेट मलते हुए तथा दूसरा भीख के लिए फैलाए हुए, आँसुओं के घूँट पीते हुए। 1

ग. बच्चों के साथ झूठी पत्तल चाटते हूए। 1

घ. 'पछताता पथ पर। 1

ड. भिक्षुक/ भिखारी/ अन्य सार्थक ाीर्षक। 1

कुल अंक:10

3. निबंध : अंक विभाजन

1. आकर्षक भूमिका 2
2. विषय-निर्वहन 2
3. विषय प्रतिपादन क्षमता/ भाषा ाल्पि 4
4. समग्र प्रभाव/ उपसंहार 2

कुल अंक: 5

4. पत्र

पत्र के आरंभ की औपचारिकताएं 1

पत्र के नीचे की औपचारिकताएं 1

कलात्मक और प्रभावाली ढंग से विषय-प्रतिपादन 2

भाषाैली 1

कुल अंक : 5

5. भारत में इंटरनेट का आरम्भ - 1993 वेबसाइट पर विाुद्ध पत्रकारिता का श्रेय - तहलका डॉटकॉम। भारत की पहली साइट - रीडिफ़। हिंदी पत्रकारिता में हिन्दी की सर्वश्रेष्ठ साइट ' बी.बी.सी.।

अथवा

फ्लौ या ब्रेकिंग न्यूज, ड्राई एंकर, फोन इन, एंकरविजुअलए एंकर-बाईट, लाइव, एंकर-पैकेज।

कुल अंक : 5

6 (क) स्थायीत्व (1)

(ख) एन.डी.टी.वी., टाइम्स ऑफ इण्डिया ½+½=1

(ग) कोई निचित ाैली नहीं, ाैली सामान्य लेख से हटकर। (1)

(घ) प्रभा साक्षी (1)

(ङ) जिज्ञासा (1)

7. किसी एक काव्याां की व्याख्या अपेक्षित है। **कुल अंक : 8**

अंक विभाजन :

- कवि और कविता का नामोल्लेख ½+½=1
- कविता पर पूर्वापर प्रसंग (1)
- व्याख्या (4)
- विेष / काव्य सौंदर्य (2)

यह धीरे-धीरे...............बरस से।

कवि- केदारनाथ सिंह

कविता-बनारस

बनारस की सामूहिकता और परम्परागत स्वरूप का चित्रण, ाहर में धीरे-धीरे मंथर गति से होना, सारा ाहर एक सूत्र में बंधा हुआ, सब कुछ यथा स्थान कोई परिवर्तन नहीं।

'धीरे-धीरे'-पुनरूक्ति प्रकाा, भाषा सरल, छंदमुक्त, एकता का वर्णन।

अथवा

सिंधु ....जराइ-जरी।

कवि - केवदास

कविता - छंद - अंगद

मंदोदरी द्वारा रावण को समझाते हुए राम-प्रताप का वर्णन, हनुमान का लंका आगमन तथा लंका दहन किंतु रावण से लक्ष्मण रेखा भी पार न होना।

'बाँधोइ बाँधत, बारिधि बाँधिकै बार' - अनुप्रास,

जरी-जरी - यमक अलंकार, ब्रज भाषा, छंद-सवैया।

8. केवल दो प्रनों के उत्तर अपेक्षित है- **कुल अंक : 6**

अंक विभाजन,

उपयुक्त कथ्य (2)

भाषाैली (1)

कुल अंक : 6

(क) यौवन काल में स्कंदगुप्त से निछल प्रेम किंतु पाने में असफल। निराा से दे-सेवा का व्रत। स्वयं को पराजित अनुभव करना।

(ख) कब तक उनकी प्रेमिका उनसे विमुख रहने की प्रतिज्ञा निभाती है।

(ग) विरह मत्यु के समान, रजाई ओढ़ने पर भी ाांति कम न होना, सुदंर वस्त्रों व श्रंगार से विमुख होना।

9. दो काव्याोंों का काव्य-सौंदर्य अपेक्षित है :

अंक विभाजन :

भाव - सौंदर्य (1)

ािल्प-सौंदर्य (2)

कुल अंक : 3x2=6

(क) राघौ! ....बिसारे।

भाव सौंदर्य - माता कौाल्या द्वारा राम को उनके घोड़ों को देखने के बहाने वापस अयोध्या लौटने का संदो भेजना।

ािल्प सौंदर्य - ब्रज भाषा, छंद-पद, 'कर पंकज' रूपक अंलकार, अनुप्रास की छटा, राम वियोग में पाु भी व्याकुल।

(ख) कुसुमित .... झाँपइ कान।

भाव सौंदर्य -

विरहिणी नायिका का वियोग में संवेदनाील एवं मार्मिक चित्रण। कोकिल व भौंरों के गुँजार से विरह का दुख असहनीय होना।

ािल्प सौंदर्य -विप्रलम्भ श्रंगार। कुसुमित कानन, कोकिल कलख - अनुप्रास।

सुन-सुन, गुनि-गुनि - पुनरूक्ति प्रकाा।

कमल मुखि-रूपक। मैथिली भाषा, छंद-पद।

(ग) यह सदा ....प्रबुद्ध, सदा।

भाव सौंदर्य- मनुष्य स्वभाव से द्रवीभूत, अपनी उन्नति प्रगति के प्रति सचेत, जिज्ञासु, सर्वश्रेष्ठ। समाज के लिए समर्पण की भावना रखने वाला।

ाल्प सौंदर्य - भाषा तत्सम ाब्दावली युक्त खड़ी बोली, प्रतीक व बिंबो का प्रयोग। मनुष्य की उदारता, महानता व ाक्ति क उल्लेख। विोषणों का प्रयोग।

10. किस एक गद्यां की व्याख्या अपेक्षित : **कुल अंक : 6**

अंक विभाजन :-

- लेखक व लेख के नामोल्लेख ½+½=(1)
- पूर्वापर संबंध निर्वाह/प्रसंग (1)
- व्याख्या (3)
- विोष टिप्पणी, भाषाौली (1)

कवि की ....ही न आए।

लेखक - राम विलास ार्मा।

लेख - यथास्मै रोचते विवम्।

अथवा

ये लोग ....लौट सकते।

लेखक - निर्मल वर्मा।

लेख - जहाँ कोई वापसी नहीं।

11. दो प्रनो के उत्तर अपेक्षित हैं:

अंक विभाजन

विषय वस्तु (3)

भाषा (1)

कुल अंक : 4+4=8

(क) यूरोप में मनुष्य एवं भूगोल के मध्य संतुलन पर बल, भारत में मनुष्य और उसकी संस्कति के मध्य संतुलन का प्रयास।

(ख) गुलजार के गाँव में कुएँ की बँडेर के खंभे पर ब्रह्मी लिपि में लिखित लेख मिलना।

(ग) 'सत्य हरिचद्र' तथा 'भारतेंदु हरिचन्द्र में लेखक की बात बुद्धि अंतर नहीं कर पाती थी।

अंक विभाजन :

12. कवि/ लेखक का जीवन परिचय (2)

रचनाओं का नामोल्लेख (2)

काव्यगत विषताएँ (2)

कुल अंक : 6

13. केवल तीन प्रनों के उत्तर अपेक्षित है।

अंक विभाजन :

कथ्य/विषय वस्तु (2)

भाषा (1)

कुल अंक : (3+3+3)=9

(क) तिरलोक सिंह के लिए पहाड़ पर चढ़ना जैसे मामूली काम के लिए नौकरी व तनख्वाह देना मूर्खता थी।

(ख) पूर्वजों का पिंडदान, मिठुआ का विवाह, गाँव में कुआँ बनवाना इत्यादि।

(ग) पहले की भांति बरसात न होना, औद्योगिक सभ्यता के कारण पर्यावरण बिगड़ना तथा अपनी जड़-जमीन से अलग होना।

(घ) आँख दुखने पर भरभंड लगाना, चेचक के रोगी के पास नीम के फूल रखना, बेर के फूल सूघंने से बर्र-ततैये का डंक झड़ना इत्यादि।

14. केवल एक प्रन अपेक्षित है। **कुल अंक : 6**

अंक विभाजन :

कथ्य/विषय वस्तु (5)

भाषाौली (1)

माँ का दूध पीने से माँ व बच्चे के सारे संबंध चरितार्थ होना, माँ के आँचल में आत्मीयता व सुरक्षा, बच्चे को माँ, मित्र, नारी सबका सुख एक साथ प्राप्त होना, मानव जन्म की सार्थकता, संस्कार और भावनाओं का विकास।

अथवा

परिस्थितियों के आगे हार न मानना, संघर्षरत रहना, दुखों से उबरना, आत्मसम्मान से जीवन यापन करना, दढ़ इच्छा ाक्ति का परिचय देना, भविष्य के प्रति आाान्वित।

प्रतिदर्श प्रश्न पत्र संख्या - 2

हिन्दी ऐच्छिक

कक्षा 12

निर्धारित समय : 3 घंटे **अधिकतम अंक 100**

खंड - क

1. निम्नलिखित गद्यां को पढ़कर नीचे दिए गए प्रनों के उत्तर दीजिए।

संस्कति सामाजिक संस्कारों का दूसरा नाम है, जिसे कोई समाज विरासत के रूप में प्राप्त करता है। दूसरे ब्दों में संस्कति एक विाष्टि जीवन-ौली है। एक ऐसी विरासत है जिसके पीछे एक लम्बी परंपरा होती है।

भारत की संस्कति विव की प्राचीनतम तथा महत्वपूर्ण संस्कतियों में से एक है। प्राचीन ग्रन्थों के आधार पर इसकी प्राचीनता का अनुमान लगाया जा सकता है। वेद संसार के प्राचीनतम ग्रंथ हैं। भारतीय संस्कति के मूल रूप का परिचय हमें वेदों से मिलता है। मिश्र, यूनान, रोम आदि देों की संस्कतियाँ आज केवल इतिहास बनकर रह गई हैं, जबकि भारतीय संस्कति एक लम्बी ऐतिहासिक परंपरा के साथ आज भी निरंतर विकास के पथ पर अग्रसर है।

"यूनान, मिस्र, रोमां सब मिट गए जहां से, कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी।"

आखिर वह क्या बात है ? भारतीय संस्कति ने अपने विकास की प्रक्रिया में अन्य जातियों की संस्कतियों के अच्छे गुणों को ग्रहण करके उन्हें अपने अंदर आत्मसात कर लिया और आज वे भारतीय संस्कति के अभिन्न अंग हैं। दूसरों के अच्छे विचारों को ग्रहण करने में भारतीय संस्कति ने कभी परहेज नहीं किया। विभिन संस्कतियों को पचाकर उन्हें एक सामासिक स्वरूप देना ही भारतीय संस्कति के कलाज़यी होने का कारण है। 'अनेकता में एकता' भारतीय संस्कति की विाष्टिता रही है। रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने भारत को 'महामानवता का सागर' कहा है। यह कथन बिल्कुल सही है क्योंकि यह जाति, धर्म, भाषा-साहित्य कला-कौल आदि की सरिताओं द्वारा समद्ध होता महामानवता का महासागर है। भारतीय संस्कति में सत्य, अहिंसा, दया, परोपकार को बहुत महत्वपूर्ण स्थान दिया है। भारतीय संस्कति में त्याग के साथ भोग का उपदे दिया गया है।

नत्य और संगीत के क्षेत्र में भी यही समन्वय की भावना लक्षित होती है। भरतनाट्यम, ओड़िसी, कुचिपुड़ी कथकली मणिपुरी, कत्थक आदि सभी ौलियों में देवी-देवताओं की भावना लक्षित होती है।

साहित्य और संगीत के समान भारतीय वास्तुकला और मूर्तिकला में भी जो विविधता में एकता दिखाई देती है। दे के विभिन्न भागों में बसे लोग भाषा, धर्म, खान-पान, रहन-सहन एवं रीति-रिवाजों की दष्टि से भले ही ऊपरी तौर पर एक-दूसरे से अलग दिखाई देते हैं, पर इसके पचात् भी उनमें आंतरिक सांस्कतिक एकता विद्यमान है। यही अनेकरूपता हमारे दे की जीवंतता, संपन्नता तथा समद्धि की द्योतक है।

(क) 'संस्कति' का तात्पर्य स्पष्ट कीजिए। 2

(ख) भारतीय संस्कति की विषताएं लिखिए। 2

(ग) 'अनेकता में एकता' भारतीय संस्कति की विषता है। सिद्ध कीजिए। 2

(घ) भारतीय संस्कति में किन-किन गुणों का समावे है ? 2

(ङ) 'त्याग के साथ भोग' इस कथन की विवेचना कीजिए। 2

(च) (1) वाक्य बनाकर ब्दों के अर्थ स्पष्ट कीजिए। 1

कालजयी, आत्मसात।

(2) विलोम ब्द लिखिए। 1

अनेकरूपता, संपन्नता

(3) व्यक्तिवाचक व जातिवाचक संज्ञा के दो-दो उदाहरण लिखिए। 1

(4) वाच्य बदलिए। 1

रवीन्द्र नाथ ठाकुर ने भारत को 'महामानवता का सागर' कहा है।

(छ) गद्यां का उपयुक्त ीर्षक लिखिए। 1

2. प्रस्तुत काव्यां को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रनों के उत्तर दीजिए। (1x5)=5

हो गई है पीर पर्वत सी पिघलनी चाहिए।
इस हिमालय से कोई गंगा निकलनी चाहिए।

आज यह दीवार, परदों की तरह हिलने लगी,
र्त लेकिन थी कि ये बुनियाद हिलनी चाहिए।

हर सड़क पर, हर गली में, हर नगर, हर गाँव में,
हाथ लहराते हुए हर ला चलनी चाहिए।

सिर्फ हंगामा खड़ा करना मेरा मकसद नही,
मेरी कोि हे कि ये सूरत बदलनी चाहिए।

मेरे सीने में नहीं तो तेरे सीने में सही,
हो कहीं भी आग, लेकिन आग जलनी चाहिए।

(क) इस गज़ल में कवि जन-जन में किस तरह की आग जलाना चाहता है ?

(ख) "इस हिमालय से काई गंगा निकलनी चाहिए।" किस हिमालय से कवि कौन-सी गंगा निकालना चाहता है। स्पष्ट कीजिए।

(ग) कौन-सी दीवार कवि को परदों की तरह हिलती-थरथराती दिखाई देती है और वह किस बुनियाद को हिलाना चाहता है।

(घ) कवि किसी प्रकार का कोई हंगामा करना नहीं चाहता, फिर भी वह किस कोशिश में लगा है ?

(ङ) "हाथ लहराते हुए हर लाश चलनी चाहिए" ग़ज़ल की इस पंक्ति द्वारा कवि क्या संदेश देना चाहता है ?

अथवा

मुझे लड़नी है एक छोटी-सी लड़ाई
एक झूठी लड़ाई में मैं इतना थक गया हूँ
कि किसी बड़ी लड़ाई के काबिल नहीं रहा।
मुझे लड़ना नहीं अब
किसी छोटे कद वाले आदमी के इशारे पर
जो अपना कद लंबा करने के लिए
पूरे देश को युद्ध में झोंक देता है।

मुझे लड़ना नहीं
किसी प्रतीक के लिए
किसी नाम के लिए
किसी बड़े प्रोग्राम के लिए
मुझे लड़नी है एक छोटी सी लड़ाई
छोटे लोगों के लिए
छोटी बातों के लिए।

मुझे लड़ना है एक मामूली क्लर्क के लिए
जो बिना चार्जशीट के मुअत्तिल हो जाता है।
जो पेट में अल्सर का दर्द दिए

जेबों में न्याय की अर्ज़ी की प्रतिलिपियाँ भरकर
नौकराही के फौलादी दरवाज़े
अपनी कमजोर मुटि्ठयों से खटखटाता है
मुझे लड़ना है -
जनतंत्र में उग रहे वनतंत्र के खिलाफ
जिसमें एक गैंडानुमा आदमी दनदनाता है।

(क) प्रस्तुत कविता का ीर्षक लिखिए।

(ख) कवि किस बड़ी लड़ाई के संदर्भ में अपनी लड़ाई को छोटा मानता है ?

(ग) छोटे कद वाले और लंबे कद वाले आदमी से कवि का क्या आाय है ?

(घ) किसी प्रकार और नाम के लिए लड़ाई न लड़ने की कवि की इच्छा का क्या अभिप्राय है ?

(ङ) सामान्य व्यक्ति की ोषण-व्यथा का वर्णन कविता में किस प्रकार व्यक्त हुआ है ? अपने ब्दों में लिखिए।

खंड' 'ख'

3. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबन्ध लिखिए। 10

(क) आतंकवाद : समस्या व समाधान

(ख) राष्ट्र-निर्माण में साहित्य का योगदान

(ग) लोकतंत्र में मीडिया का दायित्व

4. एन.सी.ई.आर.टी. में लिपिक-पद के लिए 'रोजगार समाचार' में विज्ञापन प्रकाित हुआ है। उसका उल्लेख करते हुए निदेक के नाम पर एक आवेदन पत्र लिखिए। 5

अथवा

समाचार-पत्रों, पत्रिकाओं और दूरर्दान में प्रर्दाित अलील विज्ञापनों की ओर ध्यान आकर्षित करते हुए किसी प्रतिष्ठित दैनिक समाचार-पत्र के संपादक को पत्र लिखिए।

5. विोष रिपोर्ट क्या है ? विोष रिपोर्ट किस प्रकार लिखी जाती है ? 5

अथवा

कविता क्या है ? कविता लेखन के लिए आवयक प्रमुख घटकों को स्पष्ट कीजिए।

6. निम्नलिखित प्रनों के उत्तर एक-दो वाक्यों में दीजिए। (1x5)=5

(क) उलटा पिरामिड ैली का विकास कब, किस प्रकार हुआ ?

(ख) समाचार लेखन के छह ककार स्पष्ट कीजिए।

(ग) बीट से आप क्या समझते हैं ?

(घ) फ्री- लांसर पत्रकार किसे कहते हैं?

(ङ) संवाददाता एवं विोषसंवाददाता में मुख्य अन्तर क्या है ?

खण्ड - 'ग'

7. निम्नलिखित काव्यांा की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 8

अरूण यह मधुमय दो हमारा
जहाँ पहुंच अनजान क्षितिज को मिलता एक सहारा
सरस तामरस गर्भ विभा पर नाच रही तरूािखा मनोहर
छिटका जीवन हरियाली पर मंगल कुमकुम सारा
लघु सुरधनु से पंख पसारे-ाीतल मलय समीर सहारे
उड़ते खग जिस ओर मुंह किए - समझ नीड़ निज प्यारा
बरसाती आँखों के बादल-बनते जहाँ भरे करूण जल
लहरें टकराती अनंत की पाकर जहाँ किनारा
हमें कुंभ ले ऊषा सवेरे - भरती ढुलकाती सुख मेरे
मदिर ऊँघते जब-जगकर रजनी भर तारा

अथवा

तब तौ छवि पीवत जीवत हे, अब सोचन लोचन जात जरे
हित-तोष के तोष सु प्रान पले, विललात महा दुख दोष भरे।
घन आनंद मीत सुजान बिना, सब ही सुख-साज-समाज टरे।
तब हार पहार से लागत हे, अब अनि के बीच पहार परे।

8. निम्नलिखित प्रनों में से किन्हीं दो के उत्तर दीजिए : (3+3)=6

(क) ठग-ठाकुरों से कवि का संकेत किस की ओर है ?
ठग-ठाकुरों ने किससे क्या लूट लिया है ?

(ख) 'क्षण के महत्व' को उजागर करते हुए 'बूंद' कविता का मूल भाव लिखिए।

(ग) विरहावस्था में विद्यापति की राधा की मनोदाा और जायसी की नागमती की मनोदाा का तुलनात्मक अन्तर

स्पष्ट कीजिए।

9. निम्नलिखित में से किन्हीं दो काव्याोंं में निहित काव्य सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए। (3+3)=6

(क) यह प्रकत, स्वयंभू, ब्रह्म, अयुत: इसको भी ाक्ति को दे दो। यह दीप, अकेला, स्नेह भरा
है गर्व भरा मदमाता, पर इसको भी पंक्ति को दे दो।

(ख) तोड़ो तोड़ो तोड़ो
ये ऊसर बंजर तोड़ो।
ये चरती परती तोड़ो
सब खेत बनाकर छोड़ो
मिट्टी में रस होगा ही जब वह पोसेगी बीज को
हम इसको क्या कर डालें इस अपने मन की खीज को ?
गोड़ो गोड़ो गोड़ो

(ग) मातु मंदि मैं साधु सुचाली। उर अस आनत कोटि कुचाली।।
फरह कि कोदव बालि सुसाली। मुकता प्रसव कि संबुक काली।।

10. निम्नलिखित गद्यांा की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 6

दुख और सुख तो मन के विकल्प हैं। सुखी वह है जिसका मन वा में है, दुखी वह है जिसका मन परवा है। परवा होने का अर्थ है खुाामद करना, दाँत निपोरना, चाटुकारिता, हाँ–हजूरी। जिसका मन अपने वा में नहीं है वही दूसरे के मन का छंदावर्तन करता है, अपने को छिपाने क लिए मिथ्या आडंबर रचता है, दूसरों को फसाने के लिए जाल बिछाता है। कुटज इन सब मिथ्याचारों से मुक्त है। वह वाी है। वह वैरागी है। राजा जनक की तरह संसार में रहकर, संपूर्ण भोगों को भोगकर भी उनसे मुक्त है।

अथवा

यूरोप में पर्यावरण का प्रन मनुष्य और भूगोल के बीच संतुलन बनाए रखने का है – भारत में यह प्रन मनुष्य और उसकी संस्कति के बीच पारंपरिक संबंध बनाए रखने का हो जाता है स्वातंत्र्योत्तर भारत की सबसे बड़ी ट्रेजेडी यह नहीं है कि ाासक वर्ग ने औद्योगीकरण का मार्ग चुना, ट्रेजेडी यह रही है कि पचिम देोंं की देखादेखी और नकल में योजनाएं बनाते समय–प्रकति, मनुष्य और संस्कत के बीच का नाजुक संतुलन किस तरह नष्ट होने से बचाया जा सकता है – इस ओर हमारे पचिम–ािक्षित सत्ताधारियों का ध्यान कभी नहीं गया। हम बिना पचिम को मॉडल बनाए, अपनी ार्तों और मर्यादाओं के आधार पर औद्योगिक विकास का भारतीय स्वरूप निर्धारित कर सकते हैं। कभी इसका ख्याल भी हमारे ाासकों को आया हो, ऐसा नहीं जान पड़ता।

11. निम्नलिखित प्रनों में से किन्हीं दो के उत्तर दीजिए। (4+4)8

(क) "चँद्रयान व्रत करती हुई बिल्ली के सामने एक चूहा स्वयं आ जाए तो बेचारी को अपना कर्त्तव्य पालन करना ही पड़ता है।" 'कच्चा चिट्ठा' आत्मकथा में लेखक ने यह वाक्य किस संदर्भ में कहा और क्यों ?

(ख) "प्रजापति-कवि गंभीर यथार्थवादी होता है, ऐसा यथार्थवादी जिसके पाँव वर्तमान की धरती पर हैं और आँखें भविष्य के क्षितिज पर लगी हुई हैं।" लेखक ने ऐसा क्यों कहा है ?

(ग) "जहाँ धर्म पर कुछ मुट्ठी भर लोगों का एकाधिकार धर्म को संकुचित अर्थ प्रदान करता है वहीं धर्म का आम आदमी से संबंध उसके विकास एवं विस्तार का घोतक है।" तर्क सहित व्याख्या कीजिए।

12. सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' अथवा विद्यापति के जीवन, रचनाओं का संक्षिप्त परिचय देते हुए उनकी काव्यगत विोषताओं पर प्रकाा डालिए। 6

अथवा

भीष्म साहनी अथवा ममता कालिया के जीवन, रचनाओं का संक्षिप्त परिचय देते एुए उनकी भाषाौली पर प्रकाा डालिए।

13. निम्नलिखित प्रनों में से किन्हीं तीन के उत्तर लिखिए। (3+3+3) 9

(क) 'चूल्हा ठंडा किया होता तो दुमनों का कलेजा कैसे ठंडा होता ?" इस कथन के आधार पर सूरदास की मनः स्थिति का वर्णन कीजिए।

(ख) 'आरोहण' कहानी का उद्देय बताइए।

(ग) गर्मी और लू से बचने के उपायों का विवरण दीजिए।

(घ) 'अमेरिका की घोषणा है कि वह अपनी खाऊ-उजाडू जीवन पद्धति पर कोई समझौता नहीं करेगा' इस घोषणा पर अपनी टिप्पणी दीजिए।

14. "प्रकति सजीव नारी बन गई" इस कथन के संदर्भ में लेखक की प्रकति, नारी और सौन्दर्य संबंधी मान्यताएं स्पष्ट कीजिए। 6

अथवा

धरती का वातावरण गरम क्यों हो रहा है? इसमें यूरोप और अमेरिका की क्या भूमिका है? टिप्पणी कीजिए।